राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 दिल्ली का नॉकआउट शुरू तो सीएसके-हैदराबाद की भी गारंटी नहीं...

राधिका खेड़ा के भाजपा प्रवेश पर बोले भूपेश बघेल, आखिर कितने में 12

वर्ष : 12 | अंक : 29 | पटना, गुरुवार, 09 मई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

संक्षिप्त खबरें

उड़ानों को रद्द करने पर एअर इंडिया एक्सप्रेस से रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली। नागर विमानन मंत्रालय ने एयरलाइन में कथित कुप्रबंधन के खिलाफ प्रदर्शन के तौर पर बड़ी संख्या में चालक दल के सदस्यों के बीमार होने के बीच उड़ानों को रद्द करने पर एअर इंडिया एक्सप्रेस से बुधवार को एक रिपोर्ट मांगी है। एअर इंडिया ने बड़ी संख्या में चालक दल के सदस्यों के बीमार होने की सूचना देने के बाद मंगलवार रात से करीब 90 उड़ानों को रद्द कर दिया। एक अधिकारी ने बुधवार को बताया कि मंत्रालय ने उड़ानों को रद्द करने के संबंध में एअर इंडिया एक्सप्रेस से एक रिपोर्ट मांगी है और उनसे मुद्दों को जल्द ही हल करने को कहा है। एयरलाइन को नागर विमानन महानिदेशालय के नियमों के अनुसार यात्रियों को सुविधाएं मुहैया कराने की भी सलाह दी गयी है।

हैदराबाद में बारिश से दीवार गिरी, दबकर सात मजदूरों की मौत

हैदराबाद। ग्रेटर हैदराबाद में भारी बारिश से लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। बारिश के कारण दीवार ढह गई, जिसके नीचे दबकर चार साल के बच्चे समेत सात प्रवासी मजदूरों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि यह घटना मंगलवार रात मेडचल मल्काजगिरी जिले के बाचुपल्ली में रेणुका येलम्मा कॉलोनी में एक निमाणार्धीन अपार्टमेंट में हुई। बुधवार सुबह तक चले अभियान में बचावकर्मियों ने मलबे से शव बरामद किए। मृतकों की पहचान तिरुपति राव, शंकर, राजू, राम यादव, गीता, हिमांशु और खुशी के रूप में हुई। मृतक ओडिशा और छत्तीसगढ़ के निर्माण श्रमिक थे। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए उस्मानिया अस्पताल भेज दिया और जांच शुरू की।

सरकार अल्पमत में नहीं, कार्यकाल पूरा करेगी : सैनी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा है कि कांग्रेस जनता की इच्छाओं को पूरा करने की बजाय अपनी इच्छाओं को पूरा करने वाली पार्टी है। तीन निर्दलीय विधायकों का समर्थन लेने के बावजूद कांग्रेस की इच्छा पूरी नहीं होगी। बुधवार को सिरसा से पार्टी प्रत्याशी अशोक तंवर के आवास पर पत्रकारों से बातचीत में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि कांग्रेस की इच्छा सरकार बनाने की रहती है। पहले भी दो बार विधानसभा में अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए और दोनों बार हार का सामना करना पड़ा। एक बार तो कांग्रेस के नेता वोटिंग से ही भाग गए। सैनी ने कहा कि प्रदेश सरकार अल्पमत में नहीं है। सरकार बड़ी मजबूती के साथ काम कर रही है और अपना कार्यकाल पूरा करेगी। लोकसभा के तुरंत बाद प्रदेश में चल रही विकास योजनाओं को गति दी जाएगी।

आग से सुलग रहे उत्तराखंड के जंगल, वायु सेना ने संभाला मोर्चा

देहरादून, । उत्तराखंड के जंगल इन दिनों भीषण आग से धधक रहे हैं। स्थिति यह है कि आग बुझाने के लिए वायुसेना का सहारा लिया जा रहा है। ऐसे में अब ऑपरेशन अग्निपथ वनाग्नि को नियंत्रित करेगा। बुधवार को पौड़ी के आसपास जंगलों में लगी आग को बुझाने के लिए भारतीय वायुसेना के एमआई-17 हेलीकॉप्टरों ने उड़ान भरना शुरू कर दिया है। वायुसेना ने उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण श्रीनगर से पौड़ी के जंगलों में लगी आग बुझाने की जिम्मेदारी ले ली है। दरअसल, भारतीय वायुसेना के एमआई-17 हेलीकॉप्टरों को मंगलवार को ही उड़ान भरना था, लेकिन चारों तरफ फैला धुआं वायुसेना के लिए मुसीबत बन रहा था।

पीएम ने पित्रोदा की त्वचा के रंग वाली टिप्पणी को लेकर राहुल गांधी पर बोला हमला

देशवासी त्वचा के रंग के आधार पर अपमान नहीं करेंगे बर्दाश्त : मोदी

बोलें-देशवासियों का अपमान मेरा देश सहन नहीं करेगा और मोदी तो कतई नहीं

प्रात : किरण

वारंगल/एजेंसी । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा की भारतीयों की त्वचा के रंग को लेकर की गई कथित नस्लीय टिप्पणी को लेकर विपक्षी पार्टी पर निशाना साधा और जोर देकर कहा कि देशवासी त्वचा के रंग के आधार पर अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए मोदी ने कहा कि उन्हें अब यह बात समझ में आई है कि देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी ने राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को हराने की कोशिश इसलिए की थी क्योंकि उनकी त्वचा का रंग सांवला है।

पित्रोदा के कथित बयान से विवाद बढ़ने के बाद मोदी ने सवाल किया, कोई मुझे बताइए क्या मेरे देश में चमड़ी के रंग के आधार पर लोगों की योग्यता तय होगी? वारंगल में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए मोदी ने पूछा, त्वचा के रंग के इस खेल के लिए शहजादे को किसने इजाजत दी? पित्रोदा की कथित टिप्पणियों के बाद देश की राजनीति में एक नया विवाद पैदा हो गया है। उन्होंने कथित तौर पर कहा था कि भारत के उत्तर पूर्व में लोग चीनियों जैसे दिखते हैं, जबकि दक्षिण के लोग अफ्रीकियों की तरह दिखते हैं। मोदी ने कहा, मैं बहुत गुस्से में हूं आज दोस्तों! मुझे कोई गाली दे, मुझे गुस्सा नहीं आता है।

मैं सहन कर लेता हूं। लेकिन आज शहजादे के फिलॉस्फर ने इतनी बड़ी गाली दी है, जिसने मुझमें गुस्सा भर दिया है। राहुल गांधी की चुनावी रैलियों में संविधान की प्रति का प्रदर्शन करने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि संविधान सिर पे लेकर नाचने वाले लोग, चमड़ी के रंग के आधार पर देशवासियों का अपमान कर रहे हैं। मोदी ने कहा, शहजादे आपको जवाब देना पड़ेगा। चमड़ी के रंग के आधार पर मेरे देशवासियों का अपमान मेरा देश सहन नहीं करेगा और मोदी तो कतई नहीं करेगा। मोदी ने यह भी कहा कि उन्हें अब पता चला है कि मुर्मू की इतनी प्रतिष्ठा होने के बावजूद कांग्रेस ने राष्ट्रपति चुनाव में उन्हें हराने की कोशिश क्यों की थी। उन्होंने स्पष्ट तौर पर सैम पित्रोदा के संदर्भ में कहा, मुझे आज पता चला कि शहजादे के एक अंकल अमेरिका में रहते हैं। चाचा उनके दार्शनिक और मार्गदर्शक हैं। उन्होंने कहा, शहजादे के दार्शनिक और मार्गदर्शक चाचा ने एक बड़ा राज खोला है। उन्होंने कहा कि जिनकी त्वचा का रंग सांवला है, वे सभी अफ्रीका के हैं। मोदी ने आरोप लगाया कि इसका मतलब है कि उन्होंने (पित्रोदा) त्वचा के रंग के आधार पर देश के कई लोगों का अपमान किया है।

मोदी ने कहा कि त्वचा का रंग कोई भी हो, देशवासी भगवान श्री कृष्ण की पूजा करते हैं, जिनकी त्वचा का रंग भी हम सभी की तरह था।

तीसरे चरण के चुनाव के बाद इंडी गठबंधन का फ्यूज उड़ गया : प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्षी गठबंधन इंडिया का मजाक उड़ाते हुए कहा, तीसरे चरण के चुनाव के बाद कांग्रेस और इंडी गठबंधन का तीसरा फ्यूज उड़ गया है। मोदी और भाजपा के कुछ नेता विपक्षी गठबंधन को इंडी गठबंधन कहते हैं। कांग्रेस और भारत राष्ट्र समिति पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भाजपा राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत में यकीन करती है जबकि कांग्रेस और बीआरएस के लिए परिवार प्रथम है। इससे पहले, करीमनगर के वेमुलावाड़ा में एक रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने आरोप लगाया कि पिछले पांच सालों से सुबह उठते ही अंबानी और अडाणी के नाम की माला जपने वाले कांग्रेस के शहजादे ने उनसे कितना माल उठाया है जो लोकसभा चुनाव घोषित होते ही उन्होंने उन्हें गाली देना बंद कर दिया। उन्होंने पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल का नाम लिए बगैर दाल में कुछ काला होने की आशंका जताई कि कोई न कोई चोरी का माल टेम्पो भर-भर के आपने पाया है और उन्हें देश को इसका जवाब देना पड़ेगा।

पित्रोदा के विवादित बयान से मचा सियासी घमासान, कांग्रेस ने किया किनारा

नस्लीय टिप्पणी कर विवादों में घिरे सैम पित्रोदा ने दिया इस्तीफा

कांग्रेस अध्यक्ष ने इस्तीफा किया स्वीकार

प्रात : किरण

पटना/एजेंसी। सैम पित्रोदा ने इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने उनका इस्तीफा मंजूर कर लिया है। । कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने एक्स पर इसकी जानकारी दी है। उन्होंने एक्स पर लिखा, सैम पित्रोदा ने अपनी मर्जी से इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है। कांग्रेस अध्यक्ष ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। इससे पहले कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने कुछ ऐसा कह दिया था, जिसे लेकर बुधवार को विवाद खड़ा हो गया। उन्होंने कहा था कि देश के पूर्वी हिस्से के लोग चीनी और दक्षिण भारतीय अफ्रीकी नागरिकों जैसे दिखते हैं। हम 75 साल से बहुत सुखद माहौल में रह रहे हैं, जहां कुछ लड़ाइयों को छोड़ दें तो लोग साथ रह सकते हैं। हम भारत जैसे विविधता से भरे देश को एकजुट रख सकते हैं। जहां पूर्व के लोग चीनी जैसे लगते हैं, पश्चिम के लोग अरब जैसे दिखते हैं, उत्तर के लोग गोरों और दक्षिण भारतीय अफ्रीकी जैसे लगते हैं।

कांग्रेस ने कर लिया था किनारा : पित्रोदा के बयान से खुद को अलग करते हुए कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा था कि सैम पित्रोदा की ओर से भारत की विविधताओं को जो उपमाएं दी गई हैं, वह गलत और अस्वीकार्य हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इन उपमाओं से अपने आप को पूर्ण रूप से अलग करती है।

भाजपा और पीएम मोदी ने साधा था निशाना: भाजपा ने भी पित्रोदा की टिप्पणी को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा था। पार्टी ने कहा था कि जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव आगे बढ़ रहा है, विपक्षी पार्टी का मुखौटा उतरता जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी पित्रोदा के विवादास्पद बयानों को कांग्रेस की विभाजनकारी मानसिकता करार दिया था। उन्होंने सवाल किया कि क्या तमिल संस्कृति और गौरव के लिए द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) अपने सहयोगी इस प्रमुख विपक्षी पार्टी से नाता तोड़ेगी? पीएम मोदी ने कहा कि एक बड़े नेता ने कांग्रेस की विभाजनकारी मानसिकता प्रदर्शित की है। गांधी परिवार के करीबी और शहजादे के सबसे बड़े सलाहकार ने जो कहा वह बहुत शर्मनाक है।

भाजपा नेता राजीव चंद्रशेखर और सुधांशु त्रिवेदी ने दावा किया कि पित्रोदा ने भारत के उस विचार को उजागर किया है जिस पर सोनिया गांधी और राहुल गांधी जैसे कांग्रेस के बड़े नेता विश्वास करते हैं। चन्द्रशेखर ने कहा कि पित्रोदा राहुल गांधी के सलाहकार रहे हैं और गांधी ने अपनी विदेश यात्राओं के दौरान अक्सर भारतीय लोकतंत्र और देश की संस्थाओं की आलोचना की है।

त्रिवेदी ने कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनाव अब विदेशी मानसिकता से ग्रस्त लोगों और आत्मनिर्भर तथा स्वाभिमान से भरे भारत के बीच की लड़ाई बन गया है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने एक्स पर कहा, हमारे लिए, सभी भारतीय भारतीयों की तरह दिखते हैं, कांग्रेस उन्हें चीनी, अरब, श्वेत और अफ्रीकी आधार पर वर्गीकृत करने पर जोर देती है। केवल कांग्रेस जैसी औपनिवेशिक मानसिकता वाली पार्टी ही इस तरह के निंदनीय नस्लवाद में शामिल हो सकती है।

संविधान बदलने की कोशिश को करेंगे नाकाम : तेजस्वी

प्रात : किरण

रांची। राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव ने केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार पर संविधान बदलने और एससी, एसटी तथा ओबीसी श्रेणियों का आरक्षण छीनने की कोशिश का आरोप लगाते हुए बुधवार कहा कि उनकी पार्टी ऐसे किसी भी प्रयास को नाकाम कर देगी। यादव ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर झारखंड के साथ सौतेला व्यवहार करने का भी आरोप लगाया। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री ने विपक्षी दलों के गठबंधन ह्यइंडियाह्ण की प्रत्याशी ममता भुइयां के पक्ष में पलामू के छतरपुर में एक रैली को संबोधित करते हुए कहा, ह्यप्रधानमंत्री मोदी और भाजपा के नेतृत्व वाला राजग भारत के संविधान को बदलना चाहता है लेकिन मैं वादा करता हूं कि कोई भी हमारे संविधान को नहीं बदल सकता और आपका आरक्षण नहीं छीन सकता। हम ऐसी किसी भी कोशिश को नाकाम कर देंगे। उन्होंने आरोप लगाया, ह्यमोदी पिछले 10 सालों में झूठ फैलाते रहे हैं और उन्होंने महंगाई रोकने, नौकरियां मुहैया कराने और काले धन को खत्म करने जैसे अपने किसी भी वादे को पूरा नहीं किया। राजद नेता ने आरोप लगाया, प्रधानमंत्री मोदी झूठ के निमार्ता, वितरक और थोक व्यापारी (होलसेलर) हैं। उन्होंने एलआईसी, बंदरगाह, हवाई अड्डे और देश की संपत्ति बेच दी है। यादव ने दावा किया, प्रधानमंत्री मोदी ने कोई भी वादा पूरा नहीं किया, जबकि भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने विपक्षी दलों के ऐसे नेताओं के पीछे ईडी और सीबीआई जैसी एजेंसियों को लगा दिया, जो लोगों की आवाज उठा रहे हैं और उनके अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं।

पीएम मोदी 12 को पटना में पहली बार करेंगे रोड शो

प्रात : किरण

पटना। प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी 12 मई की शाम बिहार की राजधानी पटना में रोड शो करेंगे। यह पहला मौका होगा कि कोई प्रधानमंत्री पटना की सड़कों पर रोड शो करेंगे। इसकी घोषणा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बुधवार को एक प्रेस वार्ता में की। मीडिया सेंटर में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि 12 मई की शाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पटना में रोड शो करेंगे। वे बेली रोड से आएंगे और डाक बंगला इलाके में जाएंगे। प्रधानमन्त्री प्रदेश को यह संदेश देने का काम करेंगे पिछले 10 वर्षों में भारत के विकास, समृद्धि, आर्थिक विकास के लिए काम किया है। इसके अलावा सभी वर्गों को आरक्षण की व्यवस्था सुदृढ करने तथा संविधान बचाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि इस रोड शो में बिहार की झलक दिखेगी।

उन्होंने कहा कि इस रोड शो में पटना के अलावा बिहार की जनता भी भाग लेंगी। इधर, पूर्व केंद्रीय मंत्री और पटना साहिब के प्रत्याशी रविशंकर प्रसाद ने कहा कि चुनाव प्रचार में प्रधानमंत्री ने रोड शो में एक मानक स्थापित किया है। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे इस ऐतिहासिक घड़ी में घरों से बाहर निकलकर स्वागत करें। इस मौके पर पूर्व केंद्रीय मंत्री और पाटलिपुत्र से प्रत्याशी रामकृपाल यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री हमारे घर आ रहे हैं। यह मौका सुखद आश्चर्य देने वाला है। उन्होंने कहा कि पटना से लेकर पाटलिपुत्र का गाँव तक इस रोड शो को लेकर उत्साह है।

14 मई को वाराणसी से करेंगे नामांकन दाखिल : वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 मई को उत्तर प्रदेश की वाराणसी लोकसभा सीट के लिए तीसरी बार नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। इससे पहले पीएम मोदी 13 मई को अपने संसदीय क्षेत्र में रोड शो करेंगे। जिला अधिकारियों के मुताबिक, रोड शो शुरू करने से पहले पीएम मोदी लंका स्थित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के मेन गेट पर मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

रोड शो काशी विश्वनाथ कॉरिडोर पर समाप्त होगा। रोड शो में लाखों लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। भाजपा नेता दिलीप पटेल ने बताया कि पीएम मोदी का पांच किमी लंबा रोड शो अस्सी, सोनारपुरा, जंगम बाड़ी, गोदौलिया और बांसफाटक होते हुए विश्वनाथ कॉरिडोर तक जाएगा। इस दौरान पीएम मोदी का भव्य स्वागत किया जाएगा।

पांचवा चरण : 695 उम्मीदवार चुनावी मैदान में

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण के लिए 20 मई को होने वाले मतदान में आठ राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के 695 उम्मीदवार चुनाव मैदान में होंगे। निर्वाचन आयोग ने बुधवार को बताया कि पांचवें चरण में उत्तर प्रदेश की 14, महाराष्ट्र की 13, पश्चिम बंगाल की सात, बिहार और ओड़िशा की पांच-पांच, झारखंड की तीन और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख की एक-एक सीट पर चुनाव होगा। इस चरण के लिए 1586 नामांकन पत्र दायर किये गये थे। तीन मई को नामांकन पत्र दायर करने की अंतिम तिथि थी और नामांकन पत्रों की जांच के बाद 749 नामांकन सही पाये गये थे।

नाम वापस लेने के बाद अब कुल 695 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। निर्वाचन आयोग के अनुसार महाराष्ट्र की 13 सीटों के लिए सबसे अधिक 512 नामांकन पत्र दायर किये गये थे। इसके बाद उत्तर प्रदेश की 14 सीटों के लिए 466 नामांकन पत्र दाखिल किये गये। झारखंड की चतरा संसदीय सीट के लिए सबसे अधिक 69 नामांकन जमा कराये गये। उत्तर प्रदेश की लखनऊ सीट के लिए दूसरे सबसे अधिक 67 नामांकन पत्र दायर किये गये। पांचवें चरण में एक सीट के लिए औसतन 14 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं।

रायबरेली परिवार एक बार फिर से नेतृत्व के लिए तैयार : प्रियंका

प्रात : किरण

रायबरेली/एजेंसी। रायबरेली में अपने भाई राहुल गांधी के पक्ष में चुनाव प्रचार की कमान सम्भाल रहीं कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बुधवार को कहा कि सेवा के सौ साल का रिश्ता नये दौर में प्रवेश कर चुका है और रायबरेली परिवार एक बार फिर से नेतृत्व के लिए तैयार है। प्रियंका ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, रायबरेली के एक-एक कांग्रेस कार्यकर्ता और यहां की जनता का उत्साह देखने लायक है। सेवा के सौ साल का रिश्ता नये दौर में प्रवेश कर चुका है और रायबरेली परिवार एक बार फिर से नेतृत्व के लिए तैयार है। उन्होंने संदेश में यह भी कहा, आज बछरावां और रायबरेली के विभिन्न क्षेत्रों में नुक्कड़ सभाओं और जनसंपर्क के माध्यम से अपने परिवारजनों से मुलाकात करूंगी। प्रियंका का रायबरेली स्थित बछरावां विधानसभा क्षेत्र के थुलवासा, महराजगंज, हलोर, भवानीगढ़, गुढ़ा, तिलेंडा, इंचौली और सुदौली में बैठकों में भाग लेने का कार्यक्रम है। कांग्रेस का गढ़ मानी जाने वाली रायबरेली सीट वर्ष 2019 में हुए पिछले लोकसभा चुनाव में पूर्व पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी ने जीती थी। इस बार उनके बेटे राहुल गांधी इस सीट से उम्मीदवार हैं।

अनंत सिंह की नियमित जमानत याचिका खारिज

पूर्व विधायक को पटना हाईकोर्ट से लगा झटका

प्रात : किरण

पटना। पूर्व विधायक और बाहुबली अनंत सिंह को बड़ा झटका लगा है। पटना हाईकोर्ट ने उनकी नियमित जमानत याचिका को खारिज कर दी। जस्टिस एनके पांडेय की अदालत ने इस नियमित जमानत याचिका को खारिज किया है। दरअसल, अनंत सिंह की ओर से 2022 में ही नियमित जमानत की अपील की गई थी। लेकिन, कोर्ट ने अनंत सिंह की अपराधिक इतिहास को देखते हुए बेल को खारिज कर दिया। फिलहाल वह 15 दिन के पैरोल पर बाहर निकले हैं। पैरोल खत्म होते ही अनंत सिंह को वापस जेल जाना पड़ेगा।

पटना हाईकोर्ट के वरीय अधिवक्ता के अनुसार, सचिवालय थाने में 2015 में एक केस (54/2015) दर्ज किया था। इसके बाद निचली अदालत ने आर्म्स एक्ट की धारा 25(1-अ), 26(2)/ 35 के तहत अनंत सिंह को 10 साल की जेल और 20 हजार रुपये जुमार्ने की सजा सुनाई थी।

इस मामले को लेकर ही अनंत सिंह ने नियमित जमानत याचिका दायर की थी। बुधवार को पूर्व विधायक अनंत सिंह की ओर से वरीय अधिवक्ता पीएन शाही ने उनका पक्ष रखा। वहीं राज्य सरकार का पक्ष अधिवक्ता अजय कुमार मिश्रा ने रखा। कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद यह फैसला सुनाया। अब अगली सुनवाई चार जुलाई को होगी। बता दें कि विधायकी गंवाने वाले बाहुबली और मोकामा के पूर्व विधायक अनंत सिंह रविवार को ही बेऊर जेल से बाहर निकले हैं। गृह विभाग से हरी झंडी मिलने के बाद अनंत सिंह को जेल से 15 दिनों के लिए पैरोल मिला है। आनंद सिंह के जेल से बाहर निकलने की सूचना के साथ ही उनके समर्थकों में काफी उत्साह का माहौल है। अनंत सिंह लगभग पांच वर्षों से जेल में बंद है। अनंत सिंह पर एके 47 रखने का आरोप है, जिसके तहत कोर्ट ने उन्हें 10 वर्ष की सजा सुनाई थी। तब से मोकामा के पूर्व विधायक अनंत सिंह पटना के बेउर जेल में सजायाफ्ता बंदी के रूप में सजा काट रहे हैं।

मौसम

जलवायु घटनाओं के प्रभाव से वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2049 तक प्रति वर्ष लगभग 380 खरब अमेरिकी डॉलर का हो सकता है नुकसान

दुनियाभर में इस साल अप्रैल का महीना अब तक का सबसे गर्म रहा

यूरोपीय जलवायु एजेंसी की जारी आंकड़ों में दी गई जानकारी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। दुनियाभर में इस साल अप्रैल का महीना अब तक का सबसे गर्म अप्रैल रहा और रिकॉर्ड गर्मी, बारिश व बाढ़ के कारण कई देशों में सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। बुधवार को जारी नए आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। यूरोपीय संघ की जलवायु एजेंसी कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सी3एस) ने कहा कि यह रिकॉर्ड-उच्च तापमान का लगातार 11वां महीना था, जो कमजोर हो रहे अल नीनो (मौसम प्रणाली) और मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। अप्रैल में औसत तापमान 15.03 डिग्री सेल्सियस रहा, जो निर्दिष्ट पूर्व-औद्योगिक संदर्भ अवधि (1850 से 1900) में उल्लेखित अप्रैल के औसत तापमान से 1.58 डिग्री सेल्सियस अधिक था। यह अप्रैल के लिए 1991-2020 के औसत से 0.67 डिग्री सेल्सियस अधिक और अप्रैल 2016 में दर्ज किए गए पिछले सबसे उच्च तापमान से 0.14 डिग्री सेल्सियस अधिक था। सी3एस के निदेशक कार्लो बूनटेम्पो ने कहा, वर्ष की शुरूआत में अल नीनो चरम पर था, और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत क्षेत्र में समुद्र की सतह का तापमान अब न्यूट्रल स्थितियों की ओर वापस जा रहा है। हालांकि, एक ओर अल नीनो जैसी प्राकृतिक प्रणालियों से जुड़े तापमान में बदलाव आते-जाते रहते हैं, तो दूसरी ओर ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता के कारण समुद्र व वायुमंडल में मौजूद अतिरिक्त ऊर्जा वैश्विक तापमान को नए रिकॉर्ड की ओर धकेलती रहेगी। जलवायु एजेंसी ने कहा कि पिछले 12 महीनों (मई 2023-अप्रैल 2024) में वैश्विक औसत तापमान सबसे अधिक दर्ज किया गया है, जो 1991-2020 के औसत से 0.73 डिग्री सेल्सियस अधिक और 1850-1900 की अवधि के पूर्व-औद्योगिक काल के औसत से 1.61 डिग्री सेल्सियस अधिक है। सी3एस के अनुसार, वैश्विक औसत तापमान जनवरी में पहली बार पूरे वर्ष की 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर गया। वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों झ्र मुख्य रूप से कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन झ्र की तेजी से बढ़ती सांद्रता के कारण पृथ्वी की वैश्विक सतह का तापमान 1850-1900 के औसत की तुलना में पहले ही लगभग 1.15 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। माना जा रहा है कि इस तापमान वृद्धि के कारण दुनिया भर में रिकॉर्ड सूखा, जंगलों में आग और बाढ़ जैसी घटनाएं देखी जा रही हैं। जर्मनी के पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इम्पैक्ट रिसर्च के वैज्ञानिकों द्वारा हाल ही में किए गए एक अध्ययन के अनुसार, जलवायु घटनाओं के प्रभाव से वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2049 तक प्रति वर्ष लगभग 380 खरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान हो सकता है।

एस्ट्राजेनेका ने दुनिया भर से अपनी कोरोना वैक्सीन कोविशील्ड वापस मंगवाई

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। ब्रिटेन की प्रमुख औषधि निमार्ता कंपनी एस्ट्राजेनेका ने दुनियाभर से अपने कोविड-19 रोधी टीके वापस मंगाने शुरू कर दिए हैं। कंपनी ने कुछ दिन पहले यह स्वीकार किया था कि उसके टीकों के कारण खून के थक्के जमने और प्लेटलेट कम होने के मामले सामने आए हैं। एस्ट्राजेनेका ने सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) के साथ मिलकर भारत को कोविशील्ड टीकों की आपूर्ति की थी।

कंपनी ने एक बयान में कहा कि महामारी के बाद से उपलब्ध टीकों की अधिक संख्या को देखते हुए इन्हें वापस मंगाने की प्रक्रिया शुरू की गई है। एस्ट्राजेनेका ने कोविड-19 टीके विकसित करने के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी की थी। इन टीकों को भारत में कोविशील्ड और यूरोप में वैक्सजेवरिया के नाम से बेचा गया था। बयान में कहा गया है, चूंकि कई प्रकार के कोविड -19 टीके विकसित हो चुके हैं, इसलिए उपलब्ध टीकों की संख्या अधिक है। इससे वैक्सजेवरिया की मांग में गिरावट आई है, जिसका उत्पादन या आपूर्ति अब नहीं की जा रही है। कंपनी ने कहा, अब हम इस अध्याय को समाप्त करने और कोविड-19 महामारी में महत्वपूर्ण योगदान के लिए एक स्पष्ट मार्ग पर आगे बढ़ने को लेकर नियामकों और हमारे भागीदारों के साथ काम करेंगे।

संक्षिप्त खबरें

हत्या के पुराने मामले में फरार चल रहे एक आरोपित को किया गया गिरफ्तार

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत मारपीट कर हत्या के पुराने मामले में फरार चल रहे एक आरोपित को शाहपुर पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। गिरफ्तार आरोपित संजय यादव उर्फ उजागर नुरुपुर चांदमारी का रहने वाला है। बताया जाता है कि विगत 17 मार्च को शाहपुर थाना क्षेत्र के नुरुपुर चांदमारी में स्थानीय चंद्र प्रकाश प्रसाद को मारपीट कर हत्या कर दी गयी थी। जिसमें मृतक के पुत्र विशाल कुमार ने मामला दर्ज कराया था। कांड के अनुसंधानकर्ता आशिष कुमार ने बताया कि मामले में फरार चल रहे नुरुपुर चांदमारी निवासी संजय यादव उर्फ उजागर को गिरफ्तार किया गया। पुछताछ के बाद उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

मंहत ब्रजेश मुनि महाराज ने किया प्रचार दौरा

पटना। बुधवार को आचार्य गद्दी कबीर मठ के संरक्षक आचार्य महंत ब्रजेश मुनि महाराज जी ने समस्तीपुर संसदीय लोकसभा क्षेत्र से एनडीए की प्रत्याशी शाम्भवी चौधरी के प्रचारर्थ में पहुंचे। समस्तीपुर संसदीय क्षेत्र में समस्तीपुर विधानसभा में बिशनपुर पंचायत कबीर मठ नवादा कबीर मठ दिवाही रोसरा विधानसभा और कबीर मठ बले सातमरपुर जगह का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एवं बिहार राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं चिराग पासवान के नेतृत्व में शांभवी चौधरी समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रही हैं। उन्हें भारी मतों से विजयी बनाकर सबसे कम उम्र वाली महिला को दिल्ली भेजने का कार्य करें और भारत यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी का जो नारा है अब की बार 400 पार को पूरा करें। शांभवी चौधरी एक उच्च शिक्षित प्रत्याशी है और उनका पूरा परिवार सामाजिक धार्मिक क्षेत्र में कार्यकर्ता हैं इसलिए निश्चित ही वो समस्तीपुर संसदीय क्षेत्र का विकास करेंगी इस अवसर पर बिहार राज्य के मद्ध निषेध एवं उत्पाद विभाग के मंत्री रत्नेश सादा, मंहत तपस्वी जी, मंहत धर्मदेव जी अनेक संत उपस्थित थे।

शराब पीने में तीन गिरफ्तार

फतुहा। हाजीपुर निवासी सुनील कुमार, फतेहजंगपुर के राजेश कुमार एवं रुस्तमपुर वैशाली के संतलाल साह शराब पीने में पकड़े गए। नदी थानाध्यक्ष राजू कुमार ने बताया कि सभी टेढ़ीपुल के पास शराब का सेवन कर रहे थे। सभी को जेल भेज दिया गया है।

अंग्रेजी शराब के साथ एक युवक गिरफ्तार

दानापुर खगौल रेल स्टेशन पर विशेष चेकिंग के दौरान आरपीएफ ने एक युवक को गिरफ्तार किया जिसके पास से एक पिट्ठू बैग में रखे 750 एमएल का 9 बोतल अंग्रेजी शराब बरामद किया गया। गिरफ्तार युवक की दानापुर के भट्ठारोड निवासी अविनाश कुमार के रूप में किया गया। इस संबंध में आरपीएफ/सीआईबी पोस्ट के ललित कुमार दानापुर रेल थाना धारा 30 ए बिहार मध्य निषेध एवं उत्पाद संशोधन अधिनियम 2018 के तहत दर्ज कराया गया। गिरफ्तार युवक को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है

प्रखंड प्रमुख ने बीडीओ पर कक्ष हथियाने और परेशान करने का लगाया आरोप

फतुहा। बुधवार को प्रखंड प्रमुख रजनीश कुमार ने प्रखंड कार्यालय पहुंचकर प्रेस कॉन्फ्रेंस किया और बताया कि मेरा पूर्व के कक्ष का नेम प्लेट हटाकर जबरन दूसरे कक्ष में लगाया गया और उस कक्ष में बीडीओ ने अपना नेम प्लेट लगा लिया है। जबकि मैं उस कक्ष में प्रमुख बनने के बाद से बैठता रहा हूं। मुझे लगातार परेशान किया जा रहा है। मैं इसकी शिकायत मुख्यमंत्री से करूंगा। वहीं इस संबंध में प्रखंड विकास पदाधिकारी सुनील कुमार ने बताया कि पूर्व के वर्षों से ही प्रखंड प्रमुख के लिए परिसर में सुसज्जित कक्ष निर्धारित है। सभी प्रमुख पूर्व से ही इसी कक्ष का उपयोग करते आए हैं। लेकिन वे अपने कक्ष में न बैठकर हमारे कक्ष को अपना कक्ष बनाना चाहते हैं जो कहीं से भी न्यायोचित नहीं है। उनके द्वारा हमारे ऊपर लगाए गए सारे आरोप बेबुनियाद हैं।

सफल प्रयोग : मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर से पांच साल में शहरी टीकाकरण में चार गुना वृद्धि

- 2023-24 में 1 लाख 1 हजार 227 शहरी शिशुओं का हुआ टीकाकरण
- राज्य के 27 शहरों में कार्यरत हैं कुल 90 मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर
- 106 शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर भी चल रहा है टीकाकरण केंद्र

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर के नए प्रयोग ने 9 माह से 12 माह के शहरी बच्चों के टीकाकरण की गति और आच्छादन में उल्लेखनीय विस्तार दिया है. केवल पांच साल में ही इसमें चार गुना से अधिक की वृद्धि दर्ज हुई है. राज्य स्वास्थ्य समिति के कार्यपालक निदेशक सुहर्ष भगत का मानना है कि स्वास्थ्य महकमे की इस नई पहल ने शहरी स्लम बस्ती में रहने वाले परिवारों और उनके बच्चों का जीवन सुरक्षित किया है. ज्ञातव्य है कि राज्य के अभी 27 शहरों में ऐसे 90 मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर कार्यरत हैं. वर्ष 2019-20 में जब पहली बार ये कॉर्नर बने तो पहले साल यहाँ 23 हजार 671 बच्चों का टीकाकरण किया गया. केवल पांच साल में यह आँकड़ा बढ़कर गत वर्ष 2023-24 में 1 लाख 1 हजार 227 पर पहुँच गया. राज्य में इसके अतिरिक्त 106 शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर भी टीकाकरण केंद्र काम कर रहा है। सूबे के राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (एनयूएचएम) के राज्य कार्यक्रम अधिकारी मो. मसऊद आलम ने बताया कि कि मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर के माध्यम से पहले वर्ष 2019-20 में 23 हजार 671 बच्चों का टीकाकरण हो पाया था. अगले साल 2020-21 में इसमें दोगुनी वृद्धि हुई और 49 हजार 453 बच्चों को टीकाकृत किया गया. इसके बाद आये कोविड काल ने मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर के काम पर भी प्रतिकूल असर डाला. फिर भी वर्ष 2021-22 में 51 हजार 743 बच्चे टीकाकृत हुए. कोविड काल का असर कम होते ही इसमें भारी उछाल दर्ज हुआ और वर्ष 2022-23 में 87 हजार 378 तथा गत वर्ष 2023-24 में 1 लाख 1 हजार 227 शिशुओं को प्रतिरक्षित किया गया है. राज्य में प्रायोगिक तौर पर 2018-19 में पटना, पूर्णिया और मुजफ्फरपुर में पांच मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर स्थापित किये गये थे. इसे पूरी तरह से चाइल्ड फ्रेंडली और किसी निजी टीकाकरण केंद्र की तरह ही बनाया गया था।

वर्ष 2012-13 में हुआ सर्वे और 2018-19 में हुई शुरुआत दरअसल वर्ष 2012-13 के दौरान बिहार के 27 शहरों में टीकाकरण केंद्र स्थापित करने को लेकर वृहद् सर्वे किया गया था. इस दौरान शहरी क्षेत्रों में अभिभावकों के काम पर जाने के कारण टीकाकरण केंद्रों तक उनके नहीं पहुंचने की बात सामने आयी थी. मो. मसऊद आलम ने बताया कि इस सर्वे के निष्कर्षों को आधार मानकर प्रायोगिक तौर पर शुरू किए गए मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर के काम करने की अवधि दिन में 11 बजे से शाम के 7 बजे तक किया गया. इससे शहरी टीकाकरण में पहले से बेहतर परिणाम मिलने लगे. उल्लेखनीय है कि कुछ दशक पहले तक टीकाकरण के मुख्य और प्राथमिक केंद्र गांव ही रहे थे. ऐसे में शहरी क्षेत्र में बढ़ते स्लम क्षेत्र और आय के असमान वितरण ने यहां भी स्वास्थ्य के अन्य मुद्दे सहित बच्चों के टीकाकरण की जरूरत को पैदा किया. इसी असमानता को कम करने के लिए राज्य में वर्ष 2018-19 में शहरी टीकाकरण की रणनीति बनी, जिससे शहरी क्षेत्रों में शिशुओं को पूर्ण प्रतिरक्षित किया जा सके।

टीकाकरण के आधारभूत संरचनाओं को किया सुदृढ़ पांच मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर की सफलता के बाद राज्य के राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (एनयूएचएम) ने राज्य के 27 शहरी क्षेत्रों में 95 मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर स्थापित करने का अनुरोध स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को भेजा. वर्ष 2019-20 में 90 केंद्रों के स्थापना की स्वीकृति दी गयी. ये सारे मॉडल इम्यूनाइजेशन कॉर्नर अभी भी संचालित हैं. इसके अलावा 106 शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर नियमित तौर पर टीकाकरण केंद्र भी संचालित हैं. इसके अलावा शहरी क्षेत्रों में जागरूकता के लिए आशा का चयन, महिला आरोग्य समिति का गठन जैसे कार्यों ने शहरी टीकाकरण को अभूतपूर्व गति दी।

क्राइम ब्रांच अधिकारी बताकर एक व्यक्ति से 20 हजार की ठगी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत न्यू ताराचक निवासी मनोज नारायण से साइबर बदमाशों ने क्राइम ब्रांच अधिकारी बता झांसे में लेकर बीस हजार रुपए की ठगी कर ली। इस संबंध में ठगी के शिकार मनोज नारायण ने स्थानीय थाना में लिखित शिकायत की है। पुलिस मामले की छानबीन में लगी है। बताया जाता है कि न्यू ताराचक निवासी मनोज नारायण के मोबाइल पर एक कॉल आया। अपने को हैदराबाद क्राइम ब्रांच के अधिकारी बताते हुए बदमाश ने कहा कि आपका बेटा को एक केस में हिरासत में लिया गया है। जिसमें आपके बेटा को 20 वर्ष तक की सजा हो सकती है। उसके झांसे में आकर मनोज नारायण उसके बताये अकाउंट में बीस हजार भेज दिया। मनोज ने बताया की सात मई को मोबाइल पर कॉल आया कहा की हैदराबाद क्राइम से बोल रहा हूं। आपके बेटा को क्राइम ब्रांच ने हिरासत में है। जब मैंने अपने पुत्र के बारे में पुछा तो उसने बताया कि आपके बेटा को केटीएम बाइक के साथ पकड़ा गया है। उसने रोने की आवाज सुनाई। उसने बताया कि बेटा को बचाना चाहते हो तो 50 हजार रुपए भेज दो। इस बीच अपने पुत्र से बात कने के लिए कॉल किया तो कॉल नही लगा। जिससे डर कर उसके बताये नंबर पर पहले बीस हजार रुपए डाल दिया। कुछ देर बाद उसका कॉल आया और कहा कि एसबीआई के अकाउंट में रुपए डालना है। इस संबंध में थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार भारद्वाज ने बताया कि पीड़ित ने शिकायत की है। मामले की छानबीन की जा रही है।

रविशंकर का नामांकन 10 को, भाजपा कार्यालय के पास जन आशीर्वाद सभा

12 को पीएम नरेंद्र मोदी के रोड शो में शामिल होंगे हजारों की संख्या में कार्यकर्ता

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के एनडीए गठबंधन के कार्यकताओं की बैठक हुई। खाजेकलां के पानी टंकी स्थित न्यू राज दरबार में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता चुनाव संचालन समिति के संयोजक दिनेश पटेल ने की। इसमें स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने पटना साहिब लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी रविशंकर प्रसाद के नामांकन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रोड शो को ऐतिहासिक बनाने के लिए कार्ययोजना एवं दिशा निर्देश दिए गए। पटना साहिब लोस सीट से निवर्तमान सांसद रविशंकर प्रसाद का नामांकन 10 मई को होगा। इसकी शुरूआत वीरचंद पटेल स्थित भाजपा कार्यालय में जन आशीर्वाद सभा से होगी। यहां इस लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत सभी विधानसभा क्षेत्र के एनडीए में शामिल दलों के नेता और कार्यकर्ता एकत्रित हो अपने नेता का संबोधन सुनेंगे। कार्यक्रम के बाद रविशंकर प्रसाद अपना नामांकन दाखिल करेंगे। 12 मई को प्रधानमंत्री का रोड शो पटना में होने जा रहा है। इसमें पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र से हजारों की संख्या में कार्यकर्ता शामिल होंगे। कार्यक्रम में रूपनारायण मेहता, किरण शंकर, मीडिया प्रभारी प्रदीप काश, प्रवक्ता राजेश साह, महामंत्री विनय केसरी, जदयू के आसिफ कमाल, मुकेश ठाकुर, मयंक जायसवाल, संजय सिंह, सुदामा प्रसाद सिन्हा, पार्षद अंजली राय, पूर्व पार्षद स्मिता रानी, साधना राव, सुरेश सिंह पटेल, राजेश प्रताप, सन्नी यादव, संजय गुप्ता, हरेंद्र चंद्रवंशी, विनोद पासवान, अमित सिंह, नवल किशोर सिन्हा, मनोज साह, अनुज शर्मा, प्रेम निषाद, कौशल अम्बष्ट, अशोक भारती आदि उपस्थित रहे।

नथिंग इज लाइक वोटिंग, इसी से लोकतंत्र को बल मिलता : डीपीआरओ

देश की खातिर चलिए हम सब बटन दबाते हैं : नीतू कुमारी

- बुजुर्ग और जवान ने कहा पहले हम मतदान करेंगे तब फिर हम जलपान करेंगे

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी शीर्षत कपिल अशोक के निदेश पर लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए सघन मतदाता जागरुकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कड़ी में बुधवार को इन्फेंट जीसस स्कूल के छात्रों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के मध्य मतदाता जागरुकता कार्यक्रम किया गया। मुख्य अतिथि डीपीआरओ लोकेश कुमार झा उपस्थित थे। उन्होंने स्कूल के छात्रों के माध्यम से पटना साहिब एवं पाटलिपुत्र लोकसभा क्षेत्र के सभी निर्वाचकों से एक जून को मतदान करने का आह्वान किया। जिला स्वीप आइकॉन डॉ नीतू कुमारी नवगीत ने अपील की कि सभी नागरिकों और विशेष कर युवाओं को लोकतंत्र के महापर्व में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए। डीपीआरओ श्री झा ने बिहार को जनतंत्र की जननी बताते हुए कहा कि जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी के मार्गदर्शन में जिला में मतदान जागरुकता का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बूथ पर सुविधाओं, टॉल फ्री नंबर, पहचान के लिए वैकल्पिक दस्तावेजों, भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दी गयी अन्य सुविधाओं के बारे में संबोधन के माध्यम से सबों से संवाद किया। मतदान से संबंधित जितनी भी भ्रांतियां थीं, उनके मन में उठने वाले अनेक प्रश्नों के जवाब डीपीआरओ श्री झा ने दिए और फोटो पहचान पत्र से लेकर मतदान प्रक्रिया तक की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमें विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का नागरिक होने पर गर्व है। इसलिए अपने लोकतांत्रिक त्योहार को उत्साह से मनाना है। निर्वाचन लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव है। सभी निर्वाचक एक जून को गर्व से वोट डालें। उन्होंने कहा कि कोई भी मतदाता मतदान करने का मौका नहीं चूकें। नथिंग इज लाइक वोटिंग क्योंकि इसी से लोकतंत्र को बल मिलता है। पटना जिला स्वीप एम्बेस्डर डॉ नीतू कुमारी नवगीत ने स्वरचित गीत गाकर उपस्थित लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया। लोकतंत्र का महापर्व है मिलकर इसे मनाते हैं, देश की खातिर चलिए चलिए हम सब बटन दबाते हैं, पहले हम मतदान करेंगे तब फिर हम जलपान करेंगे और बुजुर्ग आ जवान सब करिह मतदान आदि गीतों के माध्यम से लोक गायिका नीतू कुमारी नवगीत ने लोगों को जागरूक किया। कार्यक्रम में इन्फेंट जीसस स्कूल के निदेशक पास्कल पीटर ओस्टा, प्रिंसिपल रंजन जोसेफ, विद्यालय की जनसंपर्क अधिकारी सुभदा रंजन, शिक्षक इरफान, कार्यक्रम प्रभारी माधुरी शर्मा आदि उपस्थित थीं।

स्कार्पियो से 14 बकरी ले जा रहे दो लोगों को किया गया गिरफ्तार

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर खगौल थाना क्षेत्र के अंतर्गत अहले सुबह गुप्त सूचना पर दानापुर स्टेशन के पास एक उजाला रंग के स्कार्पियो को पकड़ा। स्कार्पियो से 14 बकरी बरामद किया। बकरी ले जा रहे दो लोगो को भी गिरफ्तार किया। दोनो बकरी चोरी कर ले जा रहा थे। गिरफ्तार की पहचान फतुहां के गौरीचंद निवासी संतोष कुमार एवं खगौल आरओबी निवासी चंदन नट के रूप में पहचान किया गया। बताया जाता है कि बुधवार की अहले सुबह पुलिस को सूचना मिली कि एक स्कार्पियो से चोरी की बकरी लेकर जा रहे है। सूचना पर खगौल पुलिस ने करीब साढे चार बजे एक स्कार्पियो को दानापुर रेलवे स्टेशन के पास आते देख। रोका पुलिस को देख उसमें सवार दो लोग संदिग्ध दिखे। स्कार्पियो पर 14 बकरी लदा। जिसके बाद पुलिस ने स्कार्पियो को जप्त करते हुए बकरी व उस पर सवार संतोष कुमार एवं चंदन नट को हिरासत में ले लिया। उससे पुछताछ करने में जुटी पर दोनो ने कोई स्पष्ट जबाब नही दिया।

संदिग्ध अवस्था मे पालीगंज में ट्रक चालक की शव को कब्जे में लिया पुलिस

प्रात :किरण संवाददाता

पालीगंज बुधवार को संदिग्ध अवस्था मे अस्पताल पहुंची एक ट्रक चालक की शव को पालीगंज पुलिस ने कब्जे में ले लिया व पोस्टमार्टम के बाद अंतिम संस्कार के लिए शव परिजनों को सौंप दिया है। जानकारी के अनुसार बुधवार की सुबह एक टेम्पू चालक गम्भीर रूप से घायल एक ब्यक्ति को पालीगंज स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाकर चला गया। जिसे इलाज के लिए डॉक्टरों ने जांच पड़ताल किया तो ब्यक्ति मृत पाया गया। जिसे देख डॉक्टरों ने शव वाहन को पालीगंज स्थित पीएचसी बुलाया व शव को वाहन में रखवा दिया। साथ ही डॉक्टरों ने शव लेकर वाहन चालक को जाने को कहा। जिसपर वाहन चालक बगैर पुलिस शव लेकर वहां से अनुमंडल अस्पताल जाने में सकुचाने लगा। लेकिन मजबूरन शव लेकर वाहन चालक पालीगंज थाने पहुंची। जहां से पुलिस के कहने पर वाहन चालक पोस्टमार्टम के लिए शव को पालीगंज के नगमा गांव स्थित अनुमंडल अस्पताल ले गया। जहां पहुंची पालीगंज पुलिस शव को कब्जे में ले लिया व कानूनी प्रकिया पूरी कर पोस्टमार्टम कराया। वही शव की पहचान जहानाबाद जिले के घोषी थाना अंतर्गत घुड़सार गांव निवासी दीनानाथ सिंह के 50 वर्षीय पुत्र उपेन्द्र सिंह के रूप में हुआ। वही सूचना पाकर अनुमंडल अस्पताल पहुंचे मृतक के परिजनों का रो रोकर बुरा हाल हो गया। मौके पर मृतक के परिजनों ने बताया कि मृतक उपेन्द्र सिंह ट्रक चलाते थे। वही पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव अंतिम संस्कार करने के लिए परिजनों को सौंप दिया। इस सम्बंध में पालीगंज पुलिस ने बताया कि प्रथम दृष्टि में ट्रक चालक की मौत सड़क दुर्घटना में होना प्रतीत होता है। वही पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद कारण स्पष्ट हो पायेगा। वही अभी तक घटना का पता नही चल पाया है। मामले की जांच किया जा रहा है।

गिट्टी-बालू कारोबारी प्रह्लाद की हत्या में फरार दो गिरफ्तार

एक की तलाश में छापेमारी, वैशाली के जन्दाहा से बाइक बरामद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

आलमगंज थाना की पुलिस ने बालू और गिट्टी के युवा कारोबारी रहे प्रह्लाद कुमार की हत्या में फरार चल रहे दो अपराधियों गिरफ्तार किया है। एएसपी शरथ आरएस ने बुधवार को बताया कि हत्या में शामिल मुख्य आरोपी अरफाबाद कॉलोनी निवासी पड़ोसी बैजू साहनी के पुत्र रामू कुमार उर्फ करण को राजस्थान के जयपुर से गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए रामू की निशानदेही पर पुलिस ने खंजाची रोड से गुड़ की मंडी का रहने वाला विनोद पासवान के पुत्र करण कुमार को भी गिरफ्तार किया है। इन दोनों की निशानदेही पर हत्या में उपयोग किया बाइक को वैशाली जिला के जन्दाहा से बरामद किया गया है। एएसपी ने बताया कि हत्या में फरार एक अन्य आरोपित की तलाश में पुलिस की टीम छापेमारी कर रही है। बीते 21 दिसंबर को करीब 32 साल के प्रह्लाद की हत्या तब कर दी गई थी, जब वह भतीजा को स्कूल छोड़कर मोटरसाइकिल से घर को लौट रहा था। हत्या के मामले में थानाध्यक्ष राजीव कुमार के नेतृत्व में टीम गठित हुई थी। पुलिस का कहना था कि हत्याकांड में शामिल आरोपी बार-बार बिहार और राजस्थान में अपना ठिकाना बदल रहा था, जिससे गिरफ्तारी में परेशानी हो रही थी। टीम में दारोगा कुंजन प्रसाद, आईओ प्रीतम कुमार, अभिषेक कुमार सिंह, सअनि देवेंद्र कुमार गौतम, मृत्युंजय कुमार सिंह, सिपाही प्रेम कुमार, मो शहजादूल आलम, संतोष कुमार राय व चिंटू पासवान शामिल थे। थानाध्यक्ष ने बताया कि हत्या में शामिल आरोपी की तलाश में टीम काम कर रही है।

रेड क्रॉस के स्थापना दिवस पर विद्यालय में हुआ क्विज

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी की पटना सिटी शाखा के द्वारा रेडक्रॉस सोसाइटी के संस्थापक हेनरी ड्यूनान्ट की 196वीं जयंती मनाई गई। इसका आयोजन हाजीगंज स्थित अरोड़ा इंटरनेशनल परिसर में किया गया। उद्घाटन सोसाइटी के सिटी शाखा के चेयरमैन गोविंद कानोडिया ने दीप प्रज्वलित कर करते हुए कहा कि सोसाइटी के वार्षिक थीम कीपिंग ह्यूमैनिटी अलाइव के प्रति पूरी तरह से समर्पित होकर कार्य कर रही है तथा इस दिशा में विविध कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। मुख्य वक्ता शिक्षाविद् विजय कुमार सिंह ने कहा कि हेनरी ड्यूनान्ट का मानवता के प्रति योगदान अप्रतीम है। इस अवसर पर स्कूली छात्र-छात्राओं के बीच पेंटिंग, भाषण एवं क्विज का आयोजन किया गया। पेंटिंग में शगुन एकघरा अवनि गुप्ता, गुड़िया रानी प्रथम, द्वितीय व तृतीय, भाषण में रॉली केसरी प्रथम एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः समृद्धि श्रेया तथा आराध्या को प्राप्त हुआ। मतदाता जागरुकता अभियान क्विज में अक्षरा रानी एवं समृद्धि श्रेया पुरस्कृत हुईं। विद्यालय प्राचार्य ने कहा कि मनुष्यता आज संकट में है। देखा जाए तो मानवता का स्थान शिक्षा के ऊपर है तथा इसकी रक्षा हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। संचालन लाला संजय कुमार सिन्हा ने किया। इस दौरान विद्यालय निदेशिका पूजा अरोड़ा, रेडक्रॉस की उपाध्यक्ष प्रदीप बरेलिया, सचिव तारा झुनझुनवाला, रॉली बूबना, आभा पटेल, कविता अरोड़ा, श्वेता कानोडिया, मनोहर लाल, राजेश ड्रॉलिया, राजकुमार गोयनका, श्वेता ड्रॉलिया, जय सिंह आदि मौजूद थे।

पत्थर घाट पर मिला अज्ञात युवक का शव

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मालसलामी थाना क्षेत्र के पत्थर घाट पर पाया संख्या 216 के समीप गंगा तट पर अज्ञात युवक का शव दिखा। सूचना पर बुधवार को पुलिस ने उसे बाहर निकलवाया। थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि मृतक की उम्र लगभग 45 वर्ष आंकी गई है। शव देखने से लगता है कि वह दो-तीन दिन पुराना है। यह गंगा नदी में बह कर आया होगा। पुलिस ने शव का पंचनाम कर पोस्टमार्टम के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज भेजा है। थानाध्यक्ष ने बताया कि मामले में जांच-पड़ताल की जा रही है। नागरिकों ने गंगा तट पर शव होने की सूचना पुलिस को दी थी। इससे पहले मंगलवार को खाजेकलां थाना क्षेत्र के नौजर घाट से भी गंगा में बह कर आयी महिला का शव बरामद किया गया था।

युवाओं से बेरोजगारी दूर करने व समाज में खुशहाली लाने को इंडि को वोट करें : विनोद यादव

- मालसलामी में वार्ड 66 से 72 के नेता-कार्यकताओं की बैठक

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से महागंठबंध के प्रत्याशी डॉ अंशुल अभिजीत की सफलता के लिए बुधवार को पटना महानगर राजद के वार्ड 66 से 72 के कार्यकताओं की चुनावी बैठक हुई। इसका आयोजन मालसलामी के गौरव दरबार उत्सव हॉल में किया गया। अध्यक्षता प्रदेश राजद के महासचिव विनोद यादव एवं संचालन महानगर उपाध्यक्ष मो साबिर अली ने किया। इस दौरान श्री चौधरी ने पटना साहिब संसदीय क्षेत्र के निवर्तमान सांसद रविशंकर को हर हाल में हटाने का शपथ दोहराया। प्रदेश महासचिव विनोद यादव ने युवाओं से बेरोजगारी दूर करने और समाज में खुशहाली लाने पर बल दिया। पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के चुनाव प्रभारी मोहम्मद जावेद ने कहा कि अंशुल अविजीत जैसे ईमानदार नेता की समाज में जरूरत है। संबोधित करने वालों में राजद नेता रजनीश राय, सीपीआई के जिला प्रभारी देवरतन प्रसाद, मुन्ना जायसवाल, पन्ना यादव, पंकज रजक, मो फिरोज, कांग्रेस नेता श्याम प्रसाद यादव, केशरी कुमार, सीताराम मेहता, श्रीकांत पासवान, माले नेता रविन्द्र प्रसाद, कृष्ण कुमार कौशल, राकेश यादव, अजय कुमार, भोला यादव, राजा कुमार, रंजीत यादव आदि थे।

बारिश के दौरान चौकशिकारपुर में डिवाइडर पर चढ़ा गया वैन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

चौक थाना क्षेत्र के गुरु गोविंद सिंह पथ में मंगलवार की रात हुई तेज बारिश के बीच माल से लदे पिकअप फैन दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस संबंध में बताया जा रहा है कि व्यापारी का माल लादकर पिकअप वैन बारिश के बीच तेज गति से एनएच 30 की ओर जा रहा था। इसी दौरान चौकशिकारपुर के विश्वकर्मा मंदिर के पास रहे डिवाइडर के बीचो-बीच वाहन चढ़ गया। किसी तरीके से उस पर सवार चालक और खलासी कूद कर भागने में सफल रहा। सूचना मिलने पर मौके पर चौक थाना की पुलिस पहुंची और बाद में यातायात को सामान्य कराया साथ ही क्रेन की मदद से वाहन को किनारे कराया गया। दरअसल इस मार्ग में दो जगह और चौकशिकारपुर आरओबी के नीचे भी रोड डिवाइडर पथ निर्माण विभाग के द्वारा बनाया गया है, मगर उसमें फ्लेक्स या रेडियम लाइट नहीं लगाया गया है। इस कारण से अंधेरे में या कम रोशनी में वाहन चालकों को भी पता नहीं चल पाता है कि यहां पर डिवाइडर है। कारण कि पूरे गुरु गोविंद सिंह पथ में दो जगह को छोड़ कहीं भी रोड डिवाइडर नहीं है। दशमेश पिता के विभिन्न प्रकाश पर्व के मौके पर पुलिस प्रशासन के अधिकारियों की होने वाली बैठक में जब इस मुद्दे को उठाया जाता है, तब पथ निर्माण विभाग सक्रिय होता है।

पीएम मोदी के रहते आरक्षण को कोई समाप्त नहीं कर सकता : सम्राट

कहा-अटल जी और आडवाणी जी ने पिछड़ों को न्याय देने का किया काम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी 12 मई की शाम बिहार की राजधानी पटना में रोड शो करेंगे। यह पहला मौका होगा कि कोई प्रधानमंत्री पटना की सड़कों पर रोड शो करेंगे। इसकी घोषणा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बुधवार को एक प्रेस वार्ता में की। इस दौरान श्री चौधरी ने लालू प्रसाद यादव के मंडल कमीशन लागू करने के एक बयान को लेकर पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि लालू जी बुजुर्ग हो गए हैं, इस कारण उनको ध्यान नहीं है। उन्होंने कहा कि वी पी सिंह जब प्रधानमन्त्री थे तब उनके 146 सांसद थे जबकि कांग्रेस के करीब 200 सांसद थे। भाजपा के 85 सांसद थे। अटल जी और आडवाणी जी ने मंडल कमीशन को समर्थन देकर पिछड़ों को न्याय देने का काम किया। श्री चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी सही प्रश्न उठा रहे हैं। लालू जी सिर्फ एक जाति और धर्म के लोगों के पक्ष में रहते हैं। पहले भी जब वे सरकार में थे तब ऐसे कारनामे कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि यदि 1990 में भाजपा ने समर्थन नहीं दिया होता तो ना कमंडल खड़ा हुआ होता, ना मंडल होता। यही नहीं लालू प्रसाद की राजनीति में उत्पति भी नहीं होती। लालू जी मुख्यमंत्री भी नहीं बनते, भाजपा के समर्थन से ही वे पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। उप मुख्यमंत्री श्री चौधरी ने आगे कहा कि लालू प्रसाद यादव झूठ बोल रहे हैं। केवल फेसबुक और एक्स पर झूठ लिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि 10 साल हो गए, जो भी गलत कानून बना होगा उसको समाप्त किया जाएगा। जम्मू कश्मीर से 370 उखाड़ फेंका। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि पिछड़ों, दलितों, अति पिछड़ों और सवर्ण के गरीबों के आरक्षण को मोदी जी की सरकार सुरक्षित रखने का काम करेगी। उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि राजद आगे खाता खोल ले। उन्होंने लालू और तेजस्वी पर तंज कसते हुए कहा कि अभी तो वे बीमार हैं पहले दोनों स्वस्थ तो हो लें।

केसरिया से राजद के प्रत्याशी रहे संतोष कुशवाहा भाजपा में शामिल

पटना। भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में केसरिया से राजद के प्रत्याशी रहे संतोष कुशवाहा अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। इस मिलन समारोह में बी एन मंडल के पूर्व प्रति कुलपति जय प्रकाश नारायण झा ने भी भाजपा में शामिल हुए। इन सभी लोगों को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई और पार्टी में स्वागत किया। इस मिलन समारोह को संबोधित करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि भाजपा किसी व्यक्ति के परिवार की पार्टी नहीं बल्कि पूरी पार्टी एक परिवार है। उन्होंने कहा कि भाजपा सामाजिक संरचना के लिए दलित और आदिवासी समाज से आने वाले लोगों को राष्ट्रपति बनाती है। जबकि दूसरी ओर राजद के लिए अपना परिवार ही पार्टी है। उन्होंने भाजपा में शामिल होने वाले लोगों का पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि भाजपा और मजबूत होगी। इस मौके पर बिहार के मंत्री दिलीप जायसवाल, कार्यालय मंत्री प्रवीन चंद्र पटेल राय सहित कई लोग उपस्थित थे।

जाति और धर्म के आधार पर देश को बांटने में जुटा विपक्ष : विजय

- कहा- हार के डर से विपक्ष के विभाजनकारी मंसूबे आ रहे सामने

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि तीसरे चरण के मतदान के बाद विपक्ष के सारे मंसूबे धराशायी हो गए हैं। अवसाद और बौखलाहट में वे लोग अनर्गल प्रलाप करने लग गए हैं। श्री सिन्हा ने कहा कि जहाँ बिहार में श्रीमान लालू प्रसाद और उनके युवराज हर दिन धार्मिक और जातीय उन्माद का जहर उगल रहे हैं वहीं कांग्रेस और उसका पूरा इकोसिस्टम देश को जाति, धर्म और नस्ल के आधार पर बांटने में जुट गया है। श्री सिन्हा ने कहा कि सैम पित्रोदा ने मां भारती की संतानों को लेकर जो नस्लवादी टिप्पणी की है, उससे कांग्रेस की अभिजातवादी सोच सामने आती है। सैम पित्रोदा का वास्तविक नाम सत्यनारायण पित्रोदा है। लेकिन उनको अपने भारतीय नाम तक से परहेज है। भारत और भारतीयता के प्रति उनके मन में हीनभाव से तिरस्कार का भाव रहा है। ऐसे लोग कांग्रेस और इंडी गठबंधन के थिंक टैंक रहे हैं। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि कांग्रेस की नस्लवादी और एलीट सोच रखने वाले लोगों ने 60 वर्षों तक भारत के लोगों को हीनभावना के साथ जीने को मजबूर रखा। ये देश के लोकतंत्र को मुगलों और अंग्रेजों की तरह कुलीनतंत्र बना कर रखना चाहते हैं। इसीलिए इनका पूरा गठबंधन वास्तव में परिवारवादी शहजादों की एक पिटी हुई फौज है।

नीतीश कुमार की पहल से बिहार में हुआ जातीय गणना: उमेश

बोलें- राजद को जातीय गणना कराने से किसने रोका था

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने तेजस्वी यादव के जातीय गणना और आरक्षण में बढ़ोतरी वाले बयान पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि बिहार में 15 सालों तक लालू-राबड़ी का शासन रहा लेकिन तेजस्वी यादव का यह राजनीतिक दुर्भाग्य है कि वें अपने माता-पिता की उपलब्धियों पर वोट मांगने के बजाय नीतीश कुमार के कामों को गिनाकर अपना चेहरा चमकाने की कोशिश रहें हैं। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि तेजस्वी यादव के बड़बोलेपन में अज्ञानता का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। वें चाहें लाख झूठ फैला लें लेकिन पत्थर पर खींची लकीर की तरह यह बात अमिट सत्य है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पहल से बिहार में जातीय गणना का काम पूरा हुआ और आंकड़ों के आधार पर आरक्षण में बढ़ोतरी की गई। राजद के शासन में विकास की मुख्यधारा से अलग हो चुके शोषित-वंचित समाज का आरक्षण दायरा बढ़ाकर नीतीश कुमार ने उन्हें ताकत दी। श्री कुशवाहा ने पूछा कि 1990 से 2005 तक तेजस्वी यादव के माता-पिता को बिहार में जातीय गणना कराने और आरक्षण दायरा बढ़ाने से किसने रोका था? प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि एक तरफ तेजस्वी यादव आरक्षण के हिमायती होने का झूठा दावा करते हैं वहीं दूसरी ओर अपनी पार्टी कार्यकताओं को दुत्कार कर अपने परिवार के सदस्यों को राजनीति में आगे बढ़ाते हैं। श्री कुशवाहा ने कहा कि इस लोकसभा चुनाव में जनता का विश्वास हासिल करने के लिए तेजस्वी यादव के पास जनहित को लेकर न कोई ठोस नीति है। ये लोग सिर्फ झूठ और दुष्प्रचार के सहारे वोट बिटोरने की मंशा पाले हुए हैं। लेकिन उनके इस नापाक कोशिश को बिहार की जनता कभी कामयाब नहीं होने देगी। विगत तीन चरणों में एनडीए की तरफ हुए एकतरफा मतदान से यह स्पष्ट हो चुका है कि काठ की हांडी बार बार नहीं चढ़ती। पिछली बार की तरह इस बार भी बिहार में राजद का खाता नहीं खुलेगा।

महागठबंधन का परंपरागत वोट छिन्न-भिन्न : मनोज

पटना। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व विधायक और प्रदेश के प्रवक्ता मनोज शर्मा ने बयान जारी करते हुए यह दावा किया है कि जो अभीतक तीन चरणों के चुनाव हुए हैं उसमें सभी सीटों पर एनडीए के प्रत्याशी जीत रहे हैं। उन्होंने कहा कि अब तक 14 सीटों पर जनता ने अपने मत का प्रयोग कर दिया है लेकिन, इन 14 सीटों पर जनता ने एनडीए को बहुमत दिया है। श्री शर्मा ने कहा कि एनडीए के सभी घटक दल पूरी तरह से मजबूती के साथ चुनाव लड़ रहे हैं। सभी मिलकर एनडीए की एक-एक सीटों पर काम कर रहे हैं और एक दूसरे के प्रत्याशियों को वोट दिलाने का काम कर रहे हैं। जहां-जहां भी दूसरे दल के प्रत्याशी हैं वहां एनडीए के दूसरे घटक दल के लोग पूरे जोश के साथ काम कर रहें है। उन्होंने कहा कि एक तरफ जहां एनडीए के आधार वोट को लुभाने के चक्कर में महागठबंधन का माई समीकरण पूरी तरह से ध्वस्त हुआ है। वही, दूसरी तरफ एनडीए के पक्ष उन वोटरों ने भी मतदान किया है जो कभी एनडीए के परंपरागत वोटर नहीं रहे थे। जो रिपोर्ट मिल रहे है उससे प्रतीत होता कि जिस वोट बैंक पर महागठबंधन दावा किया करता था, वह एनडीए के पक्ष में आ गए है, महागठबंधन का परंपरागत वोट बैंक छिन्न भिन्न हो गया है। श्री शर्मा ने महागठबंधन पर हमला करते हुए कहा कि बिहार का पूरा चुनाव एक तरफा हो चुका है। तीन चरण तो महज झांकी है बाकी चार चरणों में भी इसी तरह के परिणाम आएंगे।

भाजपा राज में संविधान सुरक्षित, विपक्ष की कोशिश होगी नाकाम : मंगल

- एनडीए की सोच सबको साथ लेकर चलने की है।

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

सूबे के स्वास्थ्य एवं कृषि मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि भाजपा एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए संविधान और आरक्षण का लाभ उनलोगों तक पहुंचा रही है, जिनके लिए बाबा साहेब ने संविधान बनाया था, परंतु राजद एवं कांग्रेस मिलकर भारत के संविधान और आरक्षण के प्रावाधन को बदलने का प्रयास कर रही है। राजद और कांग्रेस के नेताओं को मालूम होना चाहिए कि अनुसूचित जाति और जनजाति को देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचाने का काम भाजपा ने ही किया, न कि कांग्रेस और राजद ने। यही नहीं अल्पसंख्यकों का हितैषी बनने वाले को यह भी मालूम होना चाहिए कि वैज्ञानिक डा. अब्दुल कलाम आजाद को राष्ट्रपति बनाने का काम भाजपा ने ही किया। श्री पांडेय ने कहा कि लालू प्रसाद जी आज अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने की बात कर रहे है, यह सरासर संविधान एवं बाबा साहेब अंबेडकर जी की भावनाओं के विपरीत है। राजद के लोग आज वोट के लिए अल्पसंख्यकों को आरक्षण का राग अलाप रहे हैं। हकीकत तो यह है कि अनुसूचित जाति-जनजाति, पिछड़ों और अति पिछड़ों को मिले आरक्षण को छीन कर राजद अल्पसंख्यकों को आरक्षण का लाभ देना चाहता है, ताकि उस समाज में अपना वोट बैंक बना सके, लेकिन राजद की मंशा कभी पूरा नहीं होने वाली है। लालू प्रसाद कहते हैं कि मंडल कमीशन उन्होंने लागू कराया, लेकिन उन्हें मालूम होना चाहिए कि उस समय भाजपा ने ही मंडल कमीशन को लागू कराने एवं समर्थन देने का काम किया था, तब जाकर मंडल कमीशन मूर्त रूप ले सका था। श्री पांडेय ने कहा कि कांग्रेस और राजद के पास आज कोई मुद्दा नहीं है। इसलिए बेमतलब की बात कर लोगों को भ्रमित कर रहा है। भाजपा सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास लेकर चल रही है। चाहे वह अल्पसंख्यक हो, अनुसूचित जाति या जनजाति हो या फिर पिछड़ा और अतिपिछड़ा या सामान्य वर्ग। भाजपा सबका कल्याण चाहती है और सबों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं भी चला रही है। एनडीए की सोच सबको साथ लेकर चलने की है। जाति और धर्म के नाम पर राजनीति करने वाले राजद एवं कांग्रेस के लोग भाजपा की लोकप्रियता से इस कदर घबरा गये हैं कि आज अनर्गल बयानबाजी कर अपना जनाधार बढ़ाने की असफल कोशिश कर रहे हैं। कांग्रेस और राजद कोई भी हथकंडा अपना लें, लेकिन 2024 में इन पार्टियों को निराशा ही हाथ लगेगी।

राजद का आरक्षण छीनने का सपना नहीं होगा पूरा : राजीव रंजन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजद को अतिपिछड़ा विरोधी पार्टी बताते हुए जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता व अतिपिछड़ा समाज के नेता श्री राजीव रंजन ने कहा है कि तेजस्वी के बाद अब लालू जी के धर्म के आधार पर आरक्षण देने के बयान से भी साफ है कि यह लोग दलितों, पिछड़ों-अतिपिछड़ों का आरक्षण घटाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि वास्तव में राजद-कांग्रेस की यूपीए सरकार के समय इन्होने रंगनाथ मिश्रा आयोग की सिफारिशों को लागू करना चाहते हैं, जिसमें दलित-पिछड़े-अतिपिछड़े समाज का आरक्षण काट कर अन्य धर्मों को देने की बात कही गयी थी। कांग्रेस कर्नाटक में ओबीसी का कोटा काट कर ऐसा कर भी चुकी है। अब बिहार में भी यह उसे दोहराना चाहते हैं। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि वास्तव में राजद की आरक्षण पर लग रही रट सिर्फ लोगों को गुमराह करने के लिए। इनका इतिहास गवाह है कि सत्ता में रहते हुए इन्होने किसी भी वर्ग को न तो आरक्षण दिया और न ही उनके आरक्षण को बढाया। राजद के नेताओं को समझ लेना चाहिए कि उन्हें जिसे आरक्षण देने का वादा करना हो करें लेकिन दलित-पिछड़ों और अतिपिछड़ों के आरक्षण में कटौती करने का उनका कोई भी प्रयास बिहार की जनता बर्दाश्त नहीं करने वाली है। एक की थाली से निवाला छीन कर दूसरे को देना सही नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि हकीकत में राजद की निगाह में दलितों, पिछड़ों और अतिपिछड़ों की औकात गुलामों से अधिक नहीं है। नमो-नीतीश की जोड़ी में समाज के गरीब तबकों का हुआ विकास व सशक्तिकरण इन्हें फूटी आँखों नहीं सुहा रहा है। दरअसल इन्हें लगता है कि नमो-नीतीश सरकारों में गरीबों की बढ़ी आत्मनिर्भरता के कारण ही यह लोग उन्हें वोट नहीं देते है। इसीलिए यह लोग उन्हें गरीब बना कर अपने ऊपर आश्रित बनाये रखना चाहते हैं।

लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनेंगे मोदी : चिराग

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने कहा कि प्रधानमंत्री तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री पद के शपथ लेने जा रहे हैं। चिराग ने उक्त बातें चुनाव प्रचार में जाने के दौरान पटना एयरपोर्ट पर पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कही। श्री चिराग ने कहा कि जितना ध्यान ये विपक्ष के नेता मेरे प्रधानमंत्री पर देते हैं ,इतना ध्यान अगर अपने प्रत्याशियों पर देते तो संभवत उनकी जमानत बच जाती। जितना समय ये लोग व्यर्थ की बातों को मुद्दा बनाने में यूं लोग लगाते हैं, बिहारियों की चिंता कर लेंगे, उनसे जुड़े विषय को ये लोग उठा लेंगे ,तो संभवत उनके प्रत्याशियों का प्रदर्शन थोड़ा बेहतर हो जाएगा। और जितना समय ये लोग हमारे प्रधानमंत्री पर बिताते हैं उसका 10 प्रतिशत समय भी उनके गठबंधन के राष्ट्रीय नेता अगर बिहार और बिहारी को दे देंगे तो शायद बिहारियों को थोड़ा विश्वास उन लोगों पर भी हो जाएगा। मेरे प्रधानमंत्री तो लगभग- लगभग हर एक चरण में बिहार आने का काम किया। अभी भी 12 तारीख को आ रहे हैं, प्रवास भी करेंगे। 13 को भी कार्यक्रम करेंगे। 12 को उनका संभवतः प्रस्तावित कार्यक्रम है ,रोड शो पटना में । पर बताएं विपक्ष के लोग उनके राष्ट्रीय नेता कहां हैं? क्या उनके लिए बिहार कोई मायने नहीं रखता है क्या? कांग्रेस के कितने बड़े नेता यहां पर आए और कितने बार आए? देश के प्रधानमंत्री होने के बावजूद इतना समय बिहार और बिहारियों को दे रहे हैं। ये उनकी चिंता बिहारियों के प्रति दिखती है। उनके मन का सम्मान हम लोग के प्रति दिखता है, तो ऐसे में ऐसे प्रधानमंत्री को देश की जनता बार-बार चुनकर प्रधानमंत्री बनाने का काम करेगी। इस आशय की जानकारी पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने दिया।

जनता को भ्रमित करने का काम कर रहा राजद : जदयू

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू प्रदेश कार्यालय में पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रदेश प्रवक्ता निहोरा प्रसाद यादव, प्रदेश प्रवक्ता अरविंद निषाद और धीरज कुशवाहा ने संयुक्त तौर पर मीडिया को संबोधित किया। इस दौरान पार्टी प्रवक्ताओं ने मंडल कमीशन की रिपोर्ट को देशभर में लागू करवाने के लालू प्रसाद यादव के झूठे दावे पर जमकर निशाना साधा। पार्टी प्रवक्ताओं ने कहा कि लालू प्रसाद असल मायने में झूठ बोलने की मशीन हैं और वो मंडल कमीशन रिपोर्ट को लेकर चुनाव के समय जनता को भ्रमित करने का काम कर रहे हैं। पार्टी प्रवक्ताओं ने लालू प्रसाद यादव से सवाल पूछते हुए कहा कि आज जिस कांग्रेस की गोद में बैठकर लालू प्रसाद यादव राजनीति कर रहे हैं उस कांग्रेस से उन्हें पूछना चाहिए कि आजादी के बाद सालों तक केंद्र में शासन करने वाली कांग्रेस ने आखिर केंद्र की नौकरियों में आरक्षण क्यों नहीं दिया? उन्होंने कहा कि लालू प्रसाद यादव ने कभी कांग्रेस से नहीं पूछा कि आखिर काका कालेलकर आयोग की रिपोर्ट को ठंडे बस्ते में उसने क्यों डाला? उन्होंने गंभीर सवाल उठाते हुए कहा कि ये हकीकत है कि आजादी के बाद 50 सालों तक पिछड़ा समुदाय का बेटा केंद्र की नौकरियों में आरक्षण का लाभ नहीं ले सका। पार्टी प्रवक्ताओं ने लालू प्रसाद यादव के दावे पर तंज कसते हुए कहा कि कैसे बतौर राज्य का मुख्यमंत्री रहते लालू प्रसाद ने मंडल आयोग की रिपोर्ट को केंद्रीय स्तर पर लागू करने का दावा किया? जबकि हकीकत ये है कि केंद्रीय स्तर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री वी पी सिंह ने मंडल आयोग की रिपोर्ट को देशभर में लागू करने का काम किया था, लालू यादव ने नहीं । उन्होंने कहा कि सच्चाई ये है कि लालू प्रसाद को कभी पिछड़ों के आरक्षण के प्रति कोई मोह नहीं रहा। उन्होंने कहा कि ये तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी की लगातार कोशिश रही कि उन्होंने कई सालों तक लगातार केंद्रीय स्तर पर पिछड़ों और अति पिछड़ों

सभी मतदान केन्द्रों पर शेड का निर्माण कराये आयोग : भाकपा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने भारत निर्वाचन आयोग से सभी मतदान केन्दों पर शेड का निर्माण कराने और शत प्रतिशत मतदाताओं को मतदाता पर्ची उपलब्ध कराने की मांग की है। महागठबंधन के दबदबा वाले मतदान केन्दों पर आवश्यक सुविधाओं का अभाव देखा जा रहा है ।साथ ही मतदाता पर्ची वितरण में गड़बड़ी की कई जगहों से शिकायत मिली है। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि तीसरे चरण में 07 मई 2024 को बिहार के पांच लोकसभा सीटों पर चुनाव हुआ। इस चरण में 9848 मतदान केन्दों में से 1547 मतदान केन्दों पर आयोग के द्वारा कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। मतदाता चिलचिलाती धूप में लाइन में खड़े रहें। अररिया जिला में 211, खगड़िया में 139, मधेपुरा में 82, मधुबनी में 507, सहरसा में 151 एवं सुपौल में 457 मतदान केन्द्रों पर अतिरिक्त कमरा अथवा शेड की व्यवस्था नहीं की गई थी। जबकि मतदाताओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए गर्मी से बचाव हेतु ऐसे मतदान केन्द्रों पर शेड की व्यवस्था का प्रावधान किया गया है। इसके बावजूद जान-बुझकर अधिकारियों के द्वारा शेड का निर्माण नहीं कराया जा रहा है जिससे मतदाताओं को धूप में काफी परेशानी हो रही है। साथ ही तीन चरणों के चुनाव के दौरान मतदाता पर्ची वितरण में लापरवाही की शिकायत मिली है और मतदाताओं के नाम भी सूची से हटा दिए गए हैं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी भारत निर्वाचन आयोग से सभी मतदान केन्दों पर शेड का निर्माण कराने, आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने और शत-प्रतिशत मतदाता पर्ची का वितरण कराने की मांग करती है।

महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दे से डर गई है भाजपा : अंशुल

पटना। महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दे से भाजपा इस प्रकार घबरा गई है कि प्रधानमंत्री जी को चुनाव के 20 दिन पहले पटना साहिब में रोड शो के लिए स्वयं आना पड़ रहा है, यह भाजपा का डर दिखाने के लिए काफी है। उक्त बातें पटना साहिब से इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी डॉ अंशुल अविजित कुशवाहा ने मीडिया से कही। अंशुल अविजित ने बुधवार में बख्तियारपुर विधानसभा के हिदायतपुर सैदपुर में विशाल जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने पटना साहिब से सांसद रविशंकर प्रसाद को जनता के बीच गुमशुदा सांसद बताया और लोगों से इंडिया गठबंधन के पक्ष में मतदान की अपील की। इससे पूर्व उन्होंने फतुहा विधानसभा के खुसरूपुर और फतुहा बाजार में जनसंपर्क कर लोगों से समर्थन की अपील की। कांग्रेस प्रत्याशी ने पटना साहिब की कुम्हरार विधानसभा में राधाकृष्ण मंदिर के दर्शन के साथ दिन की शुरूआत की एवं क्षेत्र में राजद, वीआईपी और भाकपा माले के कार्यकताओं के साथ जनसंपर्क किया।

लालू प्रसाद ने मुसलमानों को डिप्टी सीएम क्यों नहीं बनाया : प्रशांत

पटना। चर्चित चुनावी रणनीतिकार और बिहार में जन सुराज पदयात्रा कर रहे प्रशांत किशोर ने बुधवार को कहा कि मुसलमान 32 साल से लालटेन को वोट दे रहे हैं, समय आ गया है जब मुसलमानों को राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव से पूछना चाहिए कि मुसलमान को आजतक उप-मुख्यमंत्री क्यों नहीं बनाया या कोई बड़ा मंत्रालय क्यों नहीं दिया। पत्रकार वार्ता के दौरान किशोर ने एक सवाल का जवाब देते हुए कहा कि जब तक आप समाज में सुधार नहीं लाएंगे, आपके बच्चे गुजरात और तमिलनाडु में जाकर मजदूरी ही करेंगे, फिर यहां के लोगों का भला कैसे होगा। उन्होंने कहा, मैं बिहार में 18 महीने से पैदल चल रहा हूं, 5 हजार से ज्यादा गांव में जाने के बाद मैं रोज मंच से कहता हूं कि दलितों के बाद सबसे ज्यादा गरीब, बदहाल, फटेहाल अगर बिहार में कोई है तो वह मुसलमान है। लेकिन, 32 साल से मुसलमानों ने राजद का साथ नहीं छोड़ा है। उन्होंने कहा, इसके बावजूद 30-32 सालों में मुसलमानों ने राजद से कभी नहीं पूछा कि आपके नेता सड़क और ग्रामीण कार्य मंत्री रहे फिर हमारे गांव में सड़क, नाली और गली क्यों नहीं बनी? आप स्वास्थ्य मंत्री थे फिर बच्चों के लिए अस्पताल और दवा क्यों नहीं है? आप शिक्षा मंत्री थे फिर हमारे बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था क्यों नहीं है? मुसलमान इन सारी परेशानियों के बावजूद लालटेन को वोट देता है।

एनडीए का शासन मतलब पेपर लीक : राठौड़

पटना। बिहार कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने कहा है कि एनडीए के शासन काल में बिहार पेपर लीक का अड्डा बन जाता है। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रतियोगी परीक्षाओं के सुचारू रूप से संचालन में इस शासन में डर बना रहता है। पहले पुलिस भर्ती का पेपर लीक हुआ जिसकी अब तक जांच रिपोर्ट तक नहीं आई तभी शिक्षक पात्रता परीक्षा के पेपर लीक हो गए और अब तो देश के प्रतिष्ठित मेडिकल प्रवेश परीक्षा के पेपर भी लीक होने लगे। बिहार कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता राजेश राठौड़ ने कहा कि राज्य में अपराधियों के मंसूबे बुलंद हैं क्योंकि एनडीए के शासन काल में राज्य में लचर शासन व्यवस्था उन्हें मजबूती दे देती है । उन्होंने आगे कहा कि सबसे बड़ी जांच का विषय तो यह भी बनता है कि मुख्यमंत्री के शासन काल में नालंदा जिले से ही सबसे ज्यादा परीक्षा परिणाम कैसे आ रहे हैं?

लोकतांत्रिक व्यवस्था का महापर्व है मतदान, इसे धूमधाम से मनाएं : नीतू

लोकतंत्र के महापर्व में सक्रिय भागीदारी के लिए लोगों को किया गया प्रेरित

- हमें विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का नागरिक होने पर गर्व : लोकेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जिला स्वीप कोषांग की ओर से लोक गायिका और स्वीप की आइकॉन डा. नीतू कुमारी नवगीत के नेतृत्व में पटना सिटी एरिया में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया। इसमें पटना के सभी नागरिकों और विशेष कर युवाओं को लोकतंत्र के महापर्व में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया गया। डा. नीतू ने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था का महापर्व मतदान होता है। हर देशवासी को यह महापर्व धूमधाम से मनाना चाहिए। मुख्य कार्यक्रम का आयोजन इन्फेंट जीसस स्कूल के सभा कक्ष में किया गया। इन्फेंट जीसस स्कूल के निदेशक पास्कल पीट ओस्टा, प्रिंसिपल रंजन जोसेफ, जनसंपर्क अधिकारी सुविधा रंजन, माधुरी शर्मा आदि मतदाता जागरूकता अभियान के समय उपस्थित रहे। कार्यक्रम में जिला जनसंपर्क अधिकारी लोकेश कुमार झा भी उपस्थित रहे। स्वीप आइकॉन डा. नीतू कुमारी नवगीत ने जागरूकता अभियान की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए मतदान के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। जागरूकता अभियान की आइकान डॉ. नीतू कुमारी नवगीत ने कहा कि 18वीं लोकसभा के लिए होने वाला चुनाव पूरे विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक पर्व है। इस चुनाव के तीन चरण पूरे हो चुके हैं। पटना साहिब लोकसभा तथा पाटलिपुत्र लोकसभा क्षेत्र के लिए मतदान एक जून को होने वाला है। जिला जनसंपर्क अधिकारी लोकेश कुमार झा ने कहा कि हमें विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का नागरिक होने पर गर्व है। इसलिए अपने लोकतांत्रिक महापर्व को पूरे जोश-ओ-खरोश के साथ मनाना है। उन्होंने कहा कि मतदाता चाहे किसी भी उम्र के क्यों ना हो, मतदान करने का मौका नहीं गवाएं। नथिंग लाइक वोटिंग, क्योंकि इसी से देश का भविष्य तय होता है। नीतू कुमारी नवगीत ने स्वरचित गीत गाकर उपस्थित लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया। लोकतंत्र का महापर्व है मिलकर इसे मनाते हैं, देश की खातिर चलिए चलिए हम सब बटन दबाते हैं, पहले हम मतदान करेंगे तब फिर हम जलपान करेंगे और बुजुर्ग आ जवान सब करिह मतदान ...जैसे गीतों के माध्यम से लोक गायिका नीतू कुमारी नवगीत ने उपस्थित लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर सभी उपस्थित लोगों ने मतदान में अपनी भागीदारी निभाने तथा मतदान में भाग लेने के लिए शपथ भी ली।

उत्पादों को विदेशों तक पहुंचाने का काम करेगा डाक घर : अनिल

- खादी ग्रामोद्योग बोर्ड ने बिहार पोस्टल सर्कल के साथ की बैठक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

खादी ग्रामोद्योग बोर्ड ने पटना में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में खादी ग्रामोद्योग के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी दिलीप कुमार सिंह, सहायक लेखा पदाधिकारी प्रदीप कुमार और खादी मॉल के प्रबंधक रमेश कुमार थे। बैठक के मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता बिहार परिमंडल मुख्य डाक महाध्यक्ष अनिल कुमार ने उपस्थित लोगों, निर्यातकों, और उद्यमियों को बिहार डाक परिमंडल द्वारा पेश किए जाने वाले विभिन्न उत्पादों के बारे में जानकारी दी। श्री कुमार ने बिहार डाक परिमंडल द्वारा प्रदान की जाने वाली डाक घर निर्यात केंद्र सेवा के महत्व पर विशेष जोर दिया, जिसके माध्यम से कोई भी निर्यातक अपने उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में भेज सकता है एवं जिसकी मदद से निर्यातक अपने द्वारा बनाये गए वस्तुयों,सामान को विदेशों तक आसानी से एक छत के नीचे से पंहुचा सकते हैं। श्री कुमार ने आगे बताया के अब निर्यातक बनना कितना आसान हो गया है। किसी भी व्यक्ति को अगर अपना किसी भी तरह का सामान या वस्तु अगर विदेश भेजना है तो वो सीधा डाक घर आए और यहाँ खुद को डाक घर निर्यात केंद्र सेवा के तहत पंजीयन करवाए और उसके बाद उनके सामान को उनके घर से लेकर के विदेश तक पहुचाने का काम डाक घर करेगा। इस अवसर पर पवन कुमार, निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय), बिहार परिमंडल, पटना, राजदेव प्रसाद, वरिष्ठ डाक अधीक्षक, पटना मंडल, पटना, मनीष कुमार, वरिष्ठ रेल डाक अधीक्षक, आरएमएस, पीटी मंडल, पटना, नवीन कुमार, सहायक निदेशक , पटना, और अन्य डाकघर के अधिकारी सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। बैठक में बिहार डाक परिमंडल के प्रति लोगों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया देखी गई।

पूर्व मध्य रेल

ई-निविदा सूचना

मंडल रेल प्रबन्धक (इंजी.)/पूर्व मध्य रेल/समस्तीपुर कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से नीचे लिखे गये कार्यों के लिए अनुभवी एवं वित्तीय क्षमता रखने वाले निविदादाताओं से भारतीय रेल के आई.आर.ई.पी.एस. वेव पोर्टल पर खुली ई–निविदा के रूप में आमंत्रित करती है :–

निविदा सूचना सं. : टी.सी.–84–2024–एस.पी.जे.। कार्य का नाम : समस्तीपुर मंडल में वर्ष 2024–25 हेतु मानसून रिजर्व स्टोक के लिए सकरीगली/पाकुर या साहेबगंज लूप लाईन या किसी अन्य खादान से स्टोन बोल्डर एवं स्टोन डस्ट की आपूर्ति एवं वैगनों में लदाई का कार्य। निविदा लागत (रूपये में) : ₹1,91,82,838.00, बयाने की राशि (रूपये में) : ₹2,45,900.00, कार्य की समाप्ति अवधि : 12 माह।

(1) आई. आर. ई. पी. एस. वेब पोर्टल पर ई–निविदा के रूप में निविदा प्राप्त करने की अन्तिम तिथि एवं समय : 28.05.2024 को 12.00 बजे तक। (2) ई–निविदा खुलने की तिथि एवं समय : 28.05.2024 को 12.00 बजे के बाद। (3) वेबसाईट का विवरण जहाँ से निविदा एवं निविदा प्रपत्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है : वेबसाईट : www.ireps.gov.in. उपरोक्त निविदा से संबंधित यदि कोई भी संशोधन/परिवर्तन किया जाता है तो उसकी सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं किया जाएगा बल्कि वेबसाईट पर अपलोड कर दिया जाएगा।

वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/समन्वय/ पूमरे/समस्तीपुर

पीआर/00241/एसपीजे/अभि./टी/24–25/40

संक्षिप्त खबरें

चुनाव प्रेक्षकों ने की जिला निर्वाचन पदाधिकारी के साथ बैठक

मुजफ्फरपुर निर्वाचन आयोग द्वारा प्रदत्त दिशा निर्देश के अनुरूप जिले में स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं भय रहित चुनाव संपन्न कराने हेतु सभी प्रेक्षकगण ने संयुक्त रूप से जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन के साथ मंगलवार को समाहरणालय में बैठक की तथा जिले में चुनाव संबंधी तैयारी के बारे में जानकारी प्राप्त की। तत्पश्चात सभी प्रेक्षकों द्वारा जिला निर्वाचन पदाधिकारी के साथ एमसीएमसी कोषांग, व्यय अनुश्रवण कोषांग तथा इंटीग्रेटेड कंट्रोल रूम सहित कई अन्य कोषांग का निरीक्षण किया गया। उन्होंने विभिन्न कोषांगों में संचालित कार्यों के बारे में अधिकारियों/ कर्मियों से पूछताछ की। निरीक्षण के दौरान जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी श्री सुब्रत कुमार सेन उप विकास आयुक्त श्री आशुतोष द्विवेदी नगर आयुक्त श्री नवीन कुमार सहित कई अन्य अधिकारी मौजूद थे।

अज्ञात यूवक का शव बरामद

बोचहा। थाना क्षेत्र के चौपार भरत गांव स्थित एक पोखर के पास रामस्वार्थ साह के मक्के की खेत से बुधवार को सुबह सुबह एक 20 वर्षीय अज्ञात यूवक का शव मिलने से पूरे इलाके में सनसनी फैल गई, घटना की जानकारी मिलते ही स्थल पर लोगों की भिड़ उमड़ पड़ी, वहीं सूचना मिलते ही घटना स्थल पर बोचहा थाने की पुलीस पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है, वहीं स्थनीय लोगों के दबी जुबान से घटना को लेकर आशंका जताई जा रही है कि सनाठी में भव्य मेला लगा हुआ है, जहां दूर दराज से लोग मेला देखने आते हैं, हो सकता है कि मेला देखने आए युवक को किसी ने हत्या कर शव को फेंक दिया होगा, गौरतलब हो की एक वर्ष पुर्व में भी इसी गांव में मक्के की खेत से एक महिला का शव मिला था जिस की पहचान अब तक नहीं हो पाई है, थाना अध्यक्ष राकेश कुमार यादव ने बताया कि मक्के की खेत से एक युवक का शव बरामद हुआ है,मृतक यूवक कौन है, और कहां का रहने वाला है, इस की पहचान अभी नहीं हो पाई हैं।

अचानक तेज हवा और बारिश से ईवीएम सेंटर पर अधिकारी और कर्मचारी का छूट गया पसीना

मधेपुरा तीसरे चरण के लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण मतदान संपन्न हो गया। लगभग 61 प्रतिशत मतदान हुआ। वहीं मतदान के बाद बूथों से ईवीएम सेंटर पहुंचने के दौरान अचानक मौसम बदल गया तेज हवा और वारिश होने के कारण कई ईवीएम में पानी जाने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि फिलहाल इस बातो की आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। लेकिन अचानक आई तेज हवा और झमाझम बारिश के कारण जिला मुख्यालय के बीएनएमयू नॉर्थ कैंपस में बना ईवीएम सेंटर पर ईवीएम बचाने को लेकर अधिकारी और कर्मचारी का पसीना छूट गया। तेज हवा के झोंके और वारिश में टेंट भी ध्वस्त हो गया। जिसके कारण ईवीएम सेंटर पर अफरातफरी का माहोल बन गया।बता दे की मौसम ने एकाएक करवट बदली और बारिशो की बौछार में अफरातफरी का माहौल बन गया। जिस समय बारिश और आंधी शुरू हुई उसी समय मधेपुरा लोकसभा की सारी ईवीएम का जमा होना प्रारम्भ हुआ था। जहां टेंट गिरने के कारण अफरातफरी का माहौल बन गया।

विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भाजपा को वोट देना जरूरी:चिराग

● बारिश में भी कार्यक्रम में शाहनवाज हुसैन एवं मंत्री हरि सहनी के साथ पहुंचे चिराग पासवान

प्रात : किरण संवाददाता

मनीगाछी(दरभंगा)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दश वर्षों के शासनकाल में भारत दुनियां की पांचवीं अर्थ व्यवस्था बन गई है।तेजी से निरंतर बढ़ रही आर्थिक सुधार से 2047 में भारत को दुनियां में विकसित राष्ट्र की श्रेणी में पहुंचाने का प्रधानमंत्री का लक्ष्य पूरा हो जाएगा। संविधान एवं आरक्षण खत्म करने का झूठा प्रचार कर विरोधियों द्वारा समाज में फैलाए जा रहे भ्रम से सावधान रहने की जरूरत है।ये बातें लोजपा (राम विलास)के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह सांसद चिराग पासवान ने बुधवार को मनीगाछी प्रखंड के राघोपुर गांव स्थित खेल मैदान में उपस्थित चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कही। गरजते मेघ के साथ ही हो रही बारिश में भी अपने निर्धारित कार्यक्रम में भाजपा नेता शाहनवाज हुसैन एवं बिहार सरकार के मंत्री हरि सहनी के साथ हेलीकॉप्टर से पहुंचे चिराग पासवान ने वर्षा में उन्हें सुनने के लिए बैठे लोगों का आभार व्यक्त करते हुए अपने संक्षिप्त संबोधन में कहा कि नरेंद्र मोदी जी ने आर्थिक विकास को गांव के विकास से जोड़ने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि शौचालय, उज्ज्वला योजनाओं से एक ओर जहां प्रधानमंत्री ने महिलाओं को सम्मानित करने का काम किया है वहीं आयुष्मान योजना के द्वारा आम लोगों को मुफ्त स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की हैं। 81 करोड़ गरीबों को मुफ्त में राशन देकर उनके सेहत का खयाल किया है।कांग्रेस सहित अन्य विरोधियों की नीतियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार बनने पर विरासत टैक्स लगाकर आम लोगों की जमीन जायदाद, गहने एवं अन्य संपत्तियों को जब्त कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस बार बिहार की सभी 40 सीटों पर एन डी ए की जीत सुनिश्चित होगी।

सभा को भाजपा नेता व पूर्व केन्द्रीय मंत्री शहनबाज हुसैन एवं मंत्री हरि सहनी ने कहा कि देश में अमन चैन एवं गरीबों के उत्थान के साथ ही विकसित भारत के लिए नरेंद्र मोदी की सरकार को जिताने का लोगों ने मन बना लिया है। उन्होंने प्रधानमंत्री का संदेश लोगों तक पहुंचाने एवं चुनाव में पूरी भागीदारी निभाने की अपील की। कार्यक्रम प्रभारी प्रदीप ठाकुर के आयोजन में हुई

सभा की अध्यक्षता लोजपा प्रखंड अध्यक्ष रमेश चौधरी तथा संचालन प्रदेश महासचिव प्रदीप ठाकुर ने किया। सभा में मनीगाछी जदयू अध्यक्ष संतोष सिंह, बीजेपी मंडल अध्यक्ष दिलीप मंडल, नरेन्द्र झा,मदन यादव, प्रवीण झा,परेश मिश्र,पंकज राय, चंदन झा, अर्जुन सहनी, संजय ठाकुर,मो कलाम, जयराम चौधरी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

मत पत्र से वोट देने हेतु प्रशिक्षण स्थल निर्धारित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। निर्वाचन कर्तव्य पर नियुक्त मतदान पदाधिकारी,कर्मी, सेक्टरव जोनल पदाधिकारी, माईक्रो प्रेक्षक आदि को डाक मतपत्र के माध्यम से वोट देने हेतु प्रशिक्षण स्थल केन्द्रीय विद्यालय गन्नीपुर, मुजफ्फरपुर में फैसिलीटेशन सेन्टर की स्थापना की गयी है। मुजफ्फरपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए यह फैसिलीटेशन सेन्टर मतदान कर्मियों का द्वितीय प्रशिक्षण हेतु निर्धारित तिथि 05 मई 2024 से 11 मई 2024 तक तथा वैशाली लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए दिनांक 12 मई 2024 से 14 मई 2024 तक पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 05:00 बजे तक संचालित रहेगा। इस फैसिलीटेशन सेन्टर पर विधान सभावार प्रभारी पदाधिकारी, मतदान पदाधिकारी तथा हेल्प डेस्क पर पर्याप्त संख्या में कर्मियों की प्रतिनियुक्ति की गयी है। यह फैसिलीटेशन सेन्टर मुजफ्फरपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए 11 मई 2024 को तथा वैशाली लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए 12 मई 2024 को पूर्वाह्न 10:00 से अपराह्न 05:00 बजे तक संचालित रहेगा। मुजफ्फरपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के लिए सभी अभ्यर्थियों के व्यय लेखा पंजी की जांच हेतु निवार्ची पदाधिकारी द्वारा तीन तिथियां निर्धारित की गयी है। 10 मई, 14 मई एवं 18 मई को अभ्यर्थियों के व्यय लेखा पंजी की जांच की जाएगी, जिसके लिए 06 लेखा दल गठित किया गया है।

सिंडिकेट की बैठक संपन्न, 8 संबद्ध कॉलेजों में शासी निकाय के गठन की स्वीकृति

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय कुमार चौधरी की अध्यक्षता में कुलपति के आवासीय सभाकक्ष में मंगलवार को सिंडिकेट की बैठक आयोजित की गई। बैठक में सर्वसम्मति से 6 मार्च की कार्यवृत को आंशिक संशोधन के साथ संपुष्ट करते हुए लंबित दो महाविद्यालय आर के मिश्रा कॉलेज, चंदौना और विवेक सिंह मेमोरियल डिग्री महाविद्यालय, विद्या नगर, मधुबनी को कुछ निर्धारित शर्तों के साथ सत्र-2024-2027 से संबंधन दिये जाने की अनुशंसा की गई। डॉ. घनश्याम राय, एसोसिएट प्रो, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग को ग्रहणाधिकार शेष अवधि समाप्ति की स्वीकृति दी गई।डॉ. दिवाकर कुमार सिंह, सहायक प्रो, इतिहास विभाग और डॉ. रीना कुमारी, सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,सी एम कॉलेज, दरभंगा की विरमन की स्वीकृति दी गई। कुलसचिव से मिली जानकारी के मुताबिक दरभंगा जिले के संबद्ध महाविद्यालय महात्मा गाँधी कॉलेज, मिथिला महिला कॉलेज, और बहेड़ा कॉलेज, समस्तीपुर जिला के एस एम आर सी के कॉलेज, आर एल एस आर एम डी कॉलेज, विधि महाविद्यालय और संत कबीर कॉलेज) तथा बेगूसराए के आर के ए लॉ कॉलेज के शासी निकाय गठन की स्वीकृति सर्वसम्मत से दी गई। स्नातकोत्तर विभागों और महाविद्यालय के परीक्षा से संबंधित लंबित भुगतान को त्वरित निष्पादित किए जाने का भी निर्णय सदस्यों द्वारा लिया गया। बैठक में डॉ. बैद्यनाथ चौधरी, डॉ. दिलीप कुमार चौधरी, प्रो. अजयनाथ झा, प्रो. विजय यादव, प्रो. अशोक कुमार मेहता, डॉ. एस सी गुप्ता, प्रो. शाहिद हसन, डॉ. नौशाद आलम, श्रीमती मीना कुमारी, श्री सुजीत पासवान, डॉ. हरि नारायण सिंह, डॉ. फैयाज अहमद , डॉ. अमर कुमार और कुलसचिव अजय कुमार पंडित शामिल हुए।

एके 47 के साथ 3 अपराधी गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। एसटीएफ और मुजफ्फरपुर जिला पुलिस ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए एके-47 एसॉल्ट राइफल सहित तीन कुख्यात अपराधियों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। बिहार एसटीएफ को गुप्त सूचना प्राप्त हुई थीं कि मुजफ्फरपुर रेलवे स्टेशन के पास कुछ अपराधकर्मी एक बड़े हथियार का कुछ सामान लेकर पहुंचे है।: सूचना मिलते ही बिहार एसटीएफ और मुजफ्फरपुर जिला पुलिस अधीक्षक ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए मुजफ्फरपुर रेलवे स्टेशन के पास से दो अपराधियों को एके 47 के पाट्र्स बट और दुरबीन के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार दोनों अपराधी से टीम ने जब कड़ाई से पुछताछ शुरू किया तो गिरफ्तार अपराधी की निशानदेही पर टीम ने जिले के फकुली थाना क्षेत्र के मलकौनी रोड पर स्थित मुरघटिया के समीप स्थित पुल के समीप से फकुली थाना क्षेत्र के मलकौनी गांव निवासी देव मनी राय को बिना बट और लेंस के एके 47 के साथ गिरफ्तार कर लिया : मामले की जानकारी देते हुए एसएसपी राकेश कुमार ने बताया कि बिहार एसटीएफ और मुजफ्फरपुर जिला पुलिस की टीम ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए तीन अपराधकर्मी को एके 47 एसॉल्ट राइफल के साथ गिरफ्तार किया गया है। इस दौरान 6 गोली और खोखा भ बरामद हुआ है।गिरफ्तार अपराधी की पहचान मुजफ्फरपुर जिले के जैतपुर थाना क्षेत्र के विकास कुमार, फकूली थाना क्षेत्र के देव मनी राय, और वैशाली जिले के अंजानपीर निवासी सत्यम कुमार के रुप में हुई है। गिरफ्तार सभी अपराधी को पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। इनके आपराधिक इतिहास का पता किया जा रहा है।

दुष्कर्म के दोषी कों 20 बर्षों का सश्रम कारावास व 20 हजार अर्थदण्ड की सजा

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। जिला न्यायमंडल के एक मात्र पॉक्सो के विशेष न्यायाधीश प्रोतिमा परिहार की अदालत ने एक नाबालिग बच्ची के साथ दूषकर्म की जूर्म में मुजफ्फरपुर जिला के सकरा थानाक्षेत्र के वोअरिया निवासी स्व. कासिम के बेटे मो. तबारक को 20 बर्षों का सश्रम कारावास और 20 हजार रुपये अर्थदण्ड की सजा सूनाई है। अदालत ने बुधवार को जूर्मी करार दिये गये अभियुक्त तबारक को सजा निर्धारण के बिन्दु पर अभियोजन और वचाव पक्ष का वहश सूनने तथा अभियुक्त के खिलाफ अभिलेख पर मौजूद साक्ष्यों का परिशीलन के बाद जूर्मी को भादवि की धारा 376एबी में 20 बर्ष,तथा पॉक्सो ऐक्ट की धारा 6 में 20 बर्षों का कठोर कारावास तथा दोनों धाराओं में क्रमशः 10-10 हजार रुपये अर्थदंड चूकाने का आदेश दिया है।कोर्ट ने नगर (कोतवालीओपी) थानाकांड सं. 221/20 से बने जीआर सं.56/20 का बिचारण पुरी कर गत 2 मई को हीं अभियुक्त को भादवि की धारा 376 एबी और पॉक्सो ऐक्ट की धारा 6 में दोषी घोषित किया था।इस केश में अभियोजन पक्ष का संचालन कर रहे स्पेशल पीपी विजय कुमार ने बताया कि 11 बर्षीय पीड़िता अपनी छोटी बहन के साथ दरभंगा के दोनार स्थित एक निजी विद्यालय के हॉस्टल में रहकर पढ़ती थी।बर्ष 2020 में लॉकडाउन में विद्यालय बंद हो गया तथा दोनों बच्ची घर आ गई।बाद में विद्यालय में ऑनलाईन पढाई शुरू हुई तो अभियुक्त ने बच्चों से अपना व्हाट्सएप नंबर स्कूल के ग्रूप से जूड़वाकर बच्चियों को पढने के लिए अपने घर बुलाया तथा पीड़िता के साथ दूषकर्म किया और पीड़िता का अश्लील वीडिओ विभिन्न व्हाट्सएप ग्रुप पर डाल दिया।इसकी प्राथमिकी 8 अगस्त 20 को कोतवाली ओपी में दर्ज हुई थी।दूष्कर्मी को मिली सभी सजाएं साथ-साथ चलेगी।

सड़क निर्माण गुणवत्तापूर्ण नही : एसई

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। पथ निर्माण विभाग की बहेड़ा-सकरी मार्ग की चौड़ीकरण एवं मजबूती करण कार्य का निरीक्षण मंगलवार को दरभंगा अंचल के अधीक्षण अभियंता राणा प्रभाष चंद्रा ने किया। विभागीय अधिकारियों को कार्य की गुणवत्ता एवं सुरक्षा पर विशेष निगरानी रखने का आदेश दिया। साथ ही कार्य की गुणवत्ता में सुधार लाने की कड़ा हिदायत संवेदक को दिया। विभागीय सूत्रों के मुताबिक बेनीपुर पथ प्रमंडल के बेनीपुर बहेड़ा-नेहरा के बीच चल रही पथ चौड़ीकरण एवं मजबूती कार्य गहन का निरीक्षण एस ई ने करते हुए डायवर्शन को ठीक करने तथा नियमित रूप से पानी पटाने का आदेश दिया। साथ ही धरौड़ा-हाबीभौआड़-हरिपुर के डायवर्शन पर सुरक्षा का विशेष ख्याल रखने का आदेश दिया। पुलिया के आरसीसी ढलाई के पूर्व प्राक्कलन के अनुसार सरिया बिछाने एवं इसकी गुणवत्ता की जांच करने तथा अधिकारी की उपस्थिति में ढलाई करवाने का आदेश दिया। डायवर्सन के दोनों तरफ बोर्ड लगाने तथा रिबन से घेरने का भी आदेश दिया। निरीक्षण के बाद एसई ने कहा कि बहेड़ा-सकरी मार्ग दो पथ प्रमंडल बेनीपुर एवं दरभंगा के 8-8 किलोमीटर नियंत्रण में है। कार्य में प्रगति लाने का आदेश दिया है। सकरी से नेहरा तक राज किशोर सिंह कंस्ट्रक्शन जबकि धरौड़ा से नेहरा तक राय राज कंस्ट्रक्शन पटना कार्य कर रहा है। उनसे यह पूछने पर दोनों निर्माण एजेंसी में सकरी के अपेक्षा धरौड़ा की ओर कार्य कमजोर क्यों दिखाई पड़ रहा है ? उन्होंने स्वीकार किया की धरौड़ा से बेहतर सकरी भाग में कार्य हो रहा है। एसई ने पूछने पर कहा कि सकरी तरफ की अतिक्रमित जमीन नापी कराकर चिन्हित किया जा रहा है। धरौड़ा-नेहरा के बीच पथ की अतिक्रमित भूमि की नापी कार्य शुरू नहीं हुआ है। शीघ्र शुरू करवाने का आदेश दिया गया है। निरीक्षण के दौरान पथ प्रमंडल बेनीपुर के कार्यपालक अभियंता मनोज कुमार, सहायक अभियंता पुरुषोत्तम चौधरी, बिट्टू कुमार, जेई, क्वालिटी कंट्रोल के एई आदि शामिल थे।

लोकसभा चुनाव को लेकर भारत नेपाल सीमा सील था ,नेपाली ट्रेन का परिचालन शुरू हो गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर मंगलवार को लोकसभा चुनाव के तीसरे फेज के शांतिपूर्ण चुनाव के बाद भारत नेपाल सीमा सील को दोनो देशों के द्वारा बुधवार से चालू सहित नेपाली ट्रेन का परिचालन शुरू हो जाने से सीमावर्ती क्षेत्रों मैं रौनक शुरू हो गई । चुनाव के बाद मध्य रात्रि से बॉर्डर खुल गया वही जयनगर से चलने वाली नेपाली ट्रेन जनकपुर भाया कुर्था से बीजलपुरा तक परिचालन पूर्व की तरह होने से दोनो देश के नागरिक एक दूसरे देश अपने रो जमर्रा ,मेडिकल सहित अन्य काम को आने जाने लगे। जिससे सीमावर्ती क्षेत्र में रौनक दिखने लगी है। बुधवार को के तीन दिन के बाद बिजलपुरा से पहली ट्रेन लगभग 300 यात्रियों को लेकर जनकपुर भाया जयनगर अपने निर्धारित समय पर पहुंच कर 30 मिनट बाद वापस यात्रियों को लेकर पूर्व की भाती जनकपुर के लिए खुली।वही दूसरी ओर सीमावर्ती बाजार से से प्रतिदिन लगभग करीब हजातो नेपाली ग्राहक आकर खरीददारी करते हैं। नेपाल के लोग खाद्यान्न, नमक, तेल से लेकर कपड़े, जूते-चप्पल व अन्य रोजमर्रा की जरूरत वाली वस्तुएं भारतीय बाजारों से ही खरीदते हैं। करीब 70 से 80 फीसद बिक्री नेपाली ग्राहकों पर निर्भर है। वही सीमावर्ती बाजार तो पूरी तरह नेपाली ग्राहकों पर ही निर्भर है। दोनों देशों के सीमावर्ती क्षेत्र के लोगों पर इसका असर दिख रहा है। ज्यादा प्रभाव इन दिनों खुदरा व्यापार पर पड़ा है। क्योंकि भारत एवं नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र के ज्यादा लोग जरूरत की छोटी मोटी सामाग्री की खरीदारी सीमा से लगे बाजारों से करते थे। लेकिन हालात बदले तो सब कुछ ठप हो गया। ऐसे में एक अनुमान के मुताबिक तीन दिन के बॉर्डर सिल होने के कारण करोड़ों का खुदरा व्यापार प्रभावित हुआ है।

मतदानकर्मियों के व्यावहारिक प्रशिक्षण का कार्यक्रम निर्धारित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।लोकसभा निर्वाचन के सफल एवं सुचारु संचालन हेतु मतदान कर्मियों, मतगणना कर्मियों तथा संग्रहण कर्मियों को उनके कार्यों से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण देने का जिला स्तरीय कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। इसके लिए जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने आदेश जारी कर सभी संबंधित अधिकारियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। कर्मियों को प्रथम चरण का प्रशिक्षण 4 अप्रैल से 22 अप्रैल तक सफलतापूर्वक दिया जा चुका है। मतदान कर्मियों का द्वितीय प्रशिक्षण 8 मई से 14 मई तक दो सत्र में दिया जाएगा जबकि तृतीय चरण के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार मुजफ्फरपुर निर्वाचन क्षेत्र के सभी मतदान कर्मी का प्रशिक्षण डिस्पैच सेंटर एल एस कालेज मुजफ्फरपुर में 18 मई को प्रथम सत्र में दिया जाएगा जबकि वैशाली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के सभी मतदान कर्मी का तृतीय प्रशिक्षण 23 मई को डिस्पैच सेंटर एम आई टी मुजफ्फरपुर में प्रथम सत्र में दिया जाएगा। मुजफ्फरपुर एवं वैशाली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के मतगणना माइक्रो प्रेक्षक, मतगणना पर्यवेक्षक एवं मतगणना सहायक का प्रशिक्षण 29 मई एवं 1 जून को केंद्रीय विद्यालय गन्नीपुर मुजफ्फरपुर में प्रथम सत्र में दिया जाएगा।

लोजपा रामविलास के पार्टी कार्यालय में बिना अनुमति के बैनर-पोस्टर लगाने वाले चार गिरफ्तार, एफआईआर दर्ज

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के तहत पोस्टर-बैनर लगाने का काम करने वाले चार लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। लोजपा रामविलास के जिलाध्यक्ष अनुपम कुमार सिंह ऊर्फ हीरा सिंह के लिखित आवेदन के आधार पर नगर थाना में उनके विरुद्ध एफआईआर दर्ज किया गया है। दर्ज एफआईआर में उन्होंने बताया है कि बीते 7 मई को शहर के मगरदही घाट स्थित उनके पार्टी कार्यालय में चार लोग बगैर अनुमति के घुस गए और उनके पास पीएम नरेंद्र मोदी की तस्वीर व उनकी पुरानी पार्टी लोजपा का का पुराना चुनाव चिन्ह लगा हुआ बैनर और पोस्टर था। उन लोगों ने बगैर अनुमति के उनके पार्टी कार्यालय में बैनर और पोस्टर लगा दिया। जबकि उनके पार्टी का चुनाव चिन्ह कुछ और है। उन्होंने इसे एक साजिश और आदर्श आचार संहिता का मामला बताते हुए उन चार लोगों को आरोपित किया है। जिनकी पहचान पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के रघुनाथगंज थाना क्षेत्र के नया जयरामपुर निवासी लुतफल शेख के पुत्र तौहीदउल शेख, दफरपुर सहरापाड़ा के अजीजुल शेख के पुत्र मिराजुल शेख ऊर्फ युसूफ, रानीनगर के काजिवउल शेख के पुत्र समिलउल शेख एवं नया जयरामपुर के इजरायल शेख के पुत्र महबूब आलम के रूप में हुई है। वहीं इस संबंध में नगर थानाध्यक्ष आशुतोष कुमार ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की कंपनी से आए लोगों के आवेदन पर चारों आरोपियों को जमानत दे दिया गया है। बता दें कि मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के जितवारपुर कन्हैया चौक के पास से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी करते हुए राजनीतिक दल से जुड़ा हुआ बैनर-पोस्टर भारी मात्रा में बरामद करते हुए चार लोगों को गिरफ्तार किया था। मामला आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से संबंधित होने पर उनसे जिला प्रशासन के वरीय अधिकारियों के द्वारा घंटों पूछताछ की गई थी।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के विवरणिका का हुआ लोकार्पण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर रसायन शास्त्र विभाग में आगामी 29-30 जुलाई को आयोजित होने वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के विवरणिका का लोकार्पण कुलपति प्रो संजय कुमार चौधरी ने किया । नैनोकेमिस्ट्री और थ्रैग्नोस्टिक्स आईसीएनटी 2024, विषय पर आयोजित होने वाली दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश के साथ-साथ प्रदेश के विभिन्न कोने से संगोष्ठी विषय से संबन्धित विशेषज्ञ भाग लेने आएंगे। संगोष्ठी के आयोजक विभाग के अध्यक्ष प्रो प्रेम मोहन मिश्रा ने बताया कि प्रो. ए. के. त्यागी ,डीन होमी भाभा नेशनल इंस्टीट्यूट मुंबई, प्रो. ललन मिश्रा डिस्टिंग्विश प्रोफेसर, बीएचयू वाराणसी, प्रो. राजन झा,आईआईटी भुवनेश्वर, डॉ. लक्ष्मण सिंह रिसर्च प्रो, साउथ कोरिया, डॉ. मृगेंद्र दुबे एसोसिएट प्रोफेसर, आईआईटी इंदौर, डॉ. नेम सिंह ,रिसर्च प्रोफेसर साउथ कोरिया, डॉ. अमित कुमार एसोसिएट प्रोफेसर आईआईटी पटना, डॉ. अभिषेक दास साइंटिस्ट ई, मुंबई ,डॉ. अनिमा जौहरी साइंटिस्ट ई, एसईआरबी डीएसटी, डॉ. सुभंकर दास गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर एनआईटी पटना, डॉ. सीमांत श्रीवास्तव यूनिवर्सिटी ऑफ अलाहाबाद, डॉ. मोहम्मद जफर , हेड बायोटेक डिपार्मेंट, ओमान, डॉ विक्रम सिंह साइंटिस्ट एंड प्रोफेसर सी एस आई आर ने अपने व्याख्यान के लिए सहमति प्रदान की है । वहीं दूसरी ओर इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए अन्य कई वैज्ञानिकों को भी कांफ्रेंस के लिए आमंत्रित किया गया है। विवरणिका लोकार्पण समारोह में कुलसचिव डॉ. अजय कुमार पंडित, मैथिली विभाग के प्रोफेसर अशोक मेहता, संगोष्ठी के संयोजक डॉ. अभिषेक राय एवं डॉ. आकांक्षा उपाध्याय आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

छात्रों के गैंग ने कोचिंग के छात्र का अपहरण कर उसे मारपीट कर किया घायल, एसपी को दिया आवेदन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

जिले के उजियारपुर थाना क्षेत्र के रहने वाले और शीतलपट्टी स्थित एक निजी स्कूल के दसवीं के छात्र को कुछ लोगों के द्वारा अपहरण कर उसके साथ मारपीट कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिए जाने का मामला सामने आया है। घटना के संबंध में पीड़ित छात्र के द्वारा एसपी विनय तिवारी को आवेदन देकर आरोपियों के ऊपर उचित कार्रवाई करने की गुहार लगाई गई है। एसपी को दिए अपने आवेदन में पीड़ित छात्र ने बताया है कि वह शीतलपट्टी स्थित एक निजी स्कूल का छात्र है और केंद्रीय विद्यालय पूसा में उसने दसवीं की परीक्षा दी है।

बीते 3 में को वह अपने केमेस्ट्री क्लास से पढ़ाई के बाद वह फिजिक्स की पढ़ाई के लिए दूसरे कोचिंग संस्थान की ओर जा रहा था। इसी दौरान उसका सहपाठी और मुफ्फसिल थाना क्षेत्र निवासी एक छात्र व एक अन्य लड़का जो पहले उसके स्कूल के आसपास चक्कर लगाया करता था, 10-15 साथी के साथ आकर उसके साथ गाली-गलौज करते हुए मारपीट और बाइक पर जबरन बैठाकर उसे सुनसान गली में ले गए। जहां उन लोगों ने उसे बेल्ट से मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। इस दौरान उन लोगों ने उनके मारपीट का वीडियो भी बनाया। उधर से गुजर रहे कुछ लोगों के द्वारा हस्तक्षेप किए जाने के बाद उसकी जान बची और उन लोगों ने उसे एक बस पर बैठा दिया। जिसके बाद उजियारपुर पीएचसी व अस्पताल में उसका इलाज कराया गया।

नाला का खुला हुआ ढक्कन के कारण लोग हो रहे हैं दुर्घटना के शिकार

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा नगर परिषद में अधिकारियों और कर्मचारियों का लापरवाही का आलम इस तरह का हो गया है कि जनता भले ही समस्याओं से जूझती रहे लेकिन इन्हें कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। दरसल ताजा मामला नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत वार्ड नं 24 और 25 का है जहां नगर परिषद द्वारा नाला सफाई का काम करवाया गया लेकिन महीनों बीत जाने के बावजूद नाला पर प्लेट डालना तो दूर शिकायत करने पर झांकने तक कोई नहीं आया। स्थानीय लोगों ने बताया कि एक दो महीने पहले नाला सफाई करवाया गया लेकिन कई जगहों पर नाले पर प्लेट नहीं डाला गया। नाले की निकासी नहीं रहने के कारण नाले के गंदा बदबुदार पानी से उनलोगों की स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है तो वही इस रास्ते से गुजरने वाले लोग, बच्चे और पशु इसमें गिर कर चोटिल हो जा रहे हैं। इसको लेकर स्थानीय लोग काफी आक्रोशित भी हैं। इधर इस मामले में नगर परिषद की मुख्य पार्षद कविता कुमारी साहा ने कहा कि लोगों की शिकायत मिलने पर उन्होंने नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी को भी इस समस्या से अवगत कराया लेकिन इसपर कोई कार्यवाही नहीं हुआ। उन्होंने कार्यपालक पदाधिकारी पर मनमानी करने का आरोप लगाते हुए कहा कि शहर में हो रहे किसी भी काम की जानकारी तक उन्हें नहीं दी जाती है। उन्होंने कहा कि ऐसा लग रहा है कि कार्यपालक पदाधिकारी ही मुख्य पार्षद बन कर बैठी हुई हैं।

अंतरराष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस पर 12 बिहार बटालियन एनसीसी कैडेट ने किया रक्तदान

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

अंतर्राष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस के अवसर पर 12 बिहार बटालियन एनसीसी, समस्तीपुर के कैडेटों द्वारा सदर अस्पताल, समस्तीपुर में जागरूकता अभियान बुधवार को चलाया गया। कैडेटों ने इस बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाया और आम जनता का ध्यान इस बीमारी से पीड़ित रोगियों की समस्याओं की और आकर्षित किया। इसके बाद सदर अस्पताल के परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समस्तीपुर कॉलेज समस्तीपुर, यूआर कॉलेज रोसड़ा, बीआरबी कॉलेज एवं एएनडी कॉलेज पटोरी के 18एसडी एवं 02एसडब्लू कैडेटों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। शिविर के दौरान कैडेटों को बताया गया कि लोगों में यह भ्रम है कि रक्तदान करने पर शरीर में कमजोरी आती है। रक्तदान के कारण कोई कमजोरी नही आती, बल्कि सभी को 56 दिन में एक बार अवश्य ही रक्तदान करना चाहिए। इससे जरूरतमंदों को मदद मिलती है, साथ ही शरीर स्वस्थ रहता है। इस अवसर पर इस बटालियन के सूबेदार संजीव कुमार सिंह, सूबेदार हरेन्द्र सिंह, हवलदार मुकेश कुमार एवं हवलदार जगदीश चौहान उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री की चुनावी सभा 13 मई को पताही हवाई अड्डा मैंदान में

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मुजफ्फरपुरं में चुनावी सभा 13 मई को होने वाली है। प्रधानमंत्री के मुजफ्फरपुर के पताही आगमन को देखते हुए जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन एवं वरीय पुलिस अधीक्षक राकेश कुमार ने विधि व्यवस्था संधारण,भीड़ नियंत्रण एवं अन्य आवश्यक व्यवस्था के निमित्त अधिकारियों की टीम के साथ आज कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। इस अवसर पर वाहन पार्किंग स्थल का चयन, बैरिकेडिंग की व्यवस्था, प्रवेश द्वार एवं निकासी द्वार, बिजली व्यवस्था, दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी की तैनाती सहित कई अन्य आवश्यक व्यवस्था का निरीक्षण कर ससमय पूरी तैयारी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। मौके पर उप विकास आयुक्त श्री आशुतोष द्विवेदी ,नगर आयुक्त नवीन कुमार ,अनुमंडल पदाधिकारी पूर्वी अमित कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी पश्चिमी बृजेश कुमार कार्यपालक अभियंता भवन निर्माण विभाग कार्यपालक अभियंता बिजली विभाग, कार्यपालक अभियंता पथ निर्माण सहित कई अन्य प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारी मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

छापेमारी में गोदाम से नकली सीमेंट बरामद

सराय। थाना क्षेत्र के शीतल भकुरहर गांव से एक सीमेंट गोदाम में छापेमारी कर विभिन्न कंपनियों के सीमेंट, दो प्रेशर मशीन और खाली सीमेंट का नया रैपर बरामद नकली सीमेंट फैक्ट्री का उद्भेदन किया है। बताया गया कि पुलिस ने छापेमारी में गोदाम से अल्ट्रा टेक सुपर सीमेंट का खाली रैपर बांगूर जंगरोधक सीमेंट का रैपर, डालमिया ढलाई एक्सपर्ट डीएसपी सीमेंट का रैपर, अल्ट्राटेक प्रीमियम सीमेंट का भरा हुआ बोरा, कंक्रीटो सीमेंट का भरा हुआ बोरा, बांगूर जंगरोधक सीमेंट का भरा हुआ बोरा, डालमिया डीएसपी सीमेंट का भरा हुआ बोरा, अंबुजा सीमेंट का भरा हुआ बोरा समेत कुल 3573 बोरे नकली सीमेंट बैग जब्त किया है।

मुखिया की स्वीकृति पर मिलेगा अंत्येष्टि का लाभ

जमुई/गिद्धौर। कबीर अंत्येष्टि अनुदान योजना का लाभ लेने के लिए अब मृत्यु-प्रमाण पत्र की आवश्यकता नही होगी।केवल मुखिया की ही स्वीकृति पर परिजनों को लाभ की राशि मिलेगी।बिहार सरकार अधिक से अधिक लोगों को योजना से लाभ मिल सके।इसको देखते हुए मृत्यु-प्रमाण-पत्र अनिवार्यता ही अब समाप्त कर दी है।ज्ञात हो कि कबीर अंत्येष्टि अनुदान योजनांतर्गत बीपीएल परिवार के सदस्यों के मृत्यु के उपरांत मृतक के आश्रित को सहायता के रूप में तीन हजार रुपए तत्काल देने का प्रावधान है।योजना के भुगतान को लेकर अब से पहले मृतकों का निबंधन होना आवश्यक था।यही वजह था कि योजना के तहत लाभ देने में स्वीकृति के क्रम में मृत्यु प्रमाण पत्र की मांग अनिवार्य रूप से लाभुकों से की जाती थी।जिसकी वजह से लाभुकों को राशि प्राप्त करने के लिए मृत्यु प्रमाण-पत्र बनाने तक का इंतजार करना पड़ता था। लेकिन अब ऐसा नही होगा।बीडीओ ने बताया कि नए नियम के तहत अब आवेदन पत्र पर मुखिया द्धारा सत्यापित किये जाने के बाद राशि देने की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

गांव वाले ने कहा अपनी जमीन नहीं देंगे... 'खजाना' वाली भूमि नहीं छोड़ेंगे, अफसरों की बड़ी टीम मनाने में जुटी

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई जिले के सिकंदरा इलाके के जिस मंजोष गांव में लौह अयस्क मैग्नेटाइट का भंडार मिला है, लेकिन यहां के लोग माइनिंग के लिए जमीन देने से इनकार कर दिया है। गांव वाले एक होकर बैठक कर अधिकारियों को आवेदन देते हुए कह दिया है कि वे लोग खनन के लिए अपनी जमीन किसी हाल में नहीं देंगे।

जानिये इसकी वजह क्या है

लौह अयस्क के खनन के लिए नीलामी के पहले जमीन अधिग्रहण को लेकर गांव पहुंचकर अधिकारियों ने ग्रामीणों के साथ की बैठक। मंगलवार की शाम इस बैठक में गांव के सैकड़ों लोग शामिल हुए। यहां ग्रामीणों ने लोहा निकालने के लिए अपनी जमीन और घर देने से मना कर दिया। गांववालों का सीधे कहना है कि वे लोग सदियों से यहां रहते आ रहे हैं लोहा के लिए वे लोग विस्थापित नहीं होंगे, अपने घर और उपजाऊ जमीन को हाथ से नहीं जाने देंगे। बताते चलें कि बीते दिनों बिहार सरकार के खान एवं भूतत्व विभाग के सचिव धर्मेंद्र सिंह ने यह जानकारी दी थी कि इस इलाके में लौह अयस्क का खजाना है। जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के द्वारा कराए गए सर्वेक्षण में सिकंदरा इलाके में लौह अयस्क मैग्नेटाइट के दो ब्लॉक मंजोष और भट्ठा गांव में मिले हैं। मंजोष गांव में 45 मिलियन टन लौह अयस्क है जिसका मार्केट वैल्यू 2500 करोड़ रुपये का है, जबकि भट्ठा में 1 हजार करोड़ का लौह अयस्क है, जिसका माइनिंग के लिए नीलामी की प्रक्रिया की जा रही है। इन गांव का जमीन अधिग्रहण के लिए भूमि का वर्गीकरण किया जा रहा है। लोहे के माइनिंग के लिए इस गांव में 85 हेक्टेयर जमीन अधिग्रहण करने के लिए चिन्हित किया है। भूमि के वर्गीकरण के लिए सर्वे का ग्रामीण विरोध करते हुए जमीन देने से मना कर रहे हैं। जिसको लेकर कई अधिकारी मंगलवार की शाम गांव पहुंचे थे। गांव वालों को समझने के लिए जिले के अधिकारी मंजोष पहुंचे, जिसमें एडीएम, उप विकास आयुक्त, जिला खनन पदाधिकारी अनुमंडल अधिकारी, भूमि उप समाहर्ता समेत और भी कई लोग थे। लगभग 3 घंटे चली ग्रामीणों के साथ बैठक के बाद गांववालों ने अधिकारियों को आवेदन देते हुए सीधे तौर पर कह दिया कि वे लोग किसी भी हाल में गांव से नहीं हटेंगे ना तो वे लोग अपना घर छोड़ेंगे और ना ही अपनी जमीन। गांव के लोगों का सीधे तौर पर कहना था कि वे लोग मर जाएंगे, लेकिन विस्थापित नहीं होंगे। सदियों से यहां रहते आ रहे हैं, उनकी जमीन उपजाऊ है और लोहा निकालने के लिए सरकार उन्हें विस्थापित नहीं कर सकती। बैठक के बाद जिले के उप विकास आयुक्त सुमित कुमार ने बताया कि ग्रामीणों के मन मे कई तरह की आशंकाएं हैं, जिन्हें दूर करने के लिए बैठक की गई है। उन आशंकाओं और परेशानी को दूर करने के लिए पूरी कोशिश की गई है, सरकार ग्रामीणों के साथ है, सरकार कल्याणकारी होती है. कल्याण के दायरे में जो भी आएगा वह निर्णय लिया जाएगा।

प्रधानमंत्री का बिहार के लिए समय देना गर्व की बात:चिराग

● कार्यालय उद्घाटन कार्यक्रम में सुनाया खरगोश-कछुआ की कहानी

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर। हाजीपुर सुरक्षित लोकसभा से एनडीए समर्थित लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के प्रत्याशी सह राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान हाजीपुर स्थित डाकबंगला रोड में मंगलवार के देर शाम राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के चुनाव प्रधान कार्यालय का उद्घाटन फीता काट कर की। उद्घाटन के दौरान उपस्थित कार्यकर्ता को संबोधित करते हुए श्री चिराग ने अपने कार्यकताओं को कड़ी नसीहत भी दे दिया है और कार्यकताओं को बचपन वाली खर्गोश और कछुए की कहानी सुना डाला। चिराग ने कहा कि खरगोश जानता था हम रेस जीत रहे हैं यह सोचकर विश्राम करने लगा और कछुए ने बाजी मार ली। इसलिए विश्राम नहीं करना है बल्कि आने वाले दस बारह दिन चुनौतियों से भरें हुए हैं और दुश्मन को कभी भी कमजोर नहीं समझना चाहिए दुश्मन हमेशा आपके एक कमजोर पल का इंतजार करता है और उसकी कमजोर पल में आप पर हावी होने का प्रयास करता है। इसीलिए कमजोर पल को कभी भी नहीं आने देना है।कोई भी लड़ाई हल्की नहीं होती है ,कोई चुनौती हल्की नहीं होती है ।निश्चिंत होकर नहीं बैठना है यह बातें सिर्फ हाजीपुर के लिए नहीं बल्कि पूरे बिहार के लिए है। पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब देते श्री चिराग ने कहा कि कुछ लोग बोल रहे हैं कि क्या पीएम बार-बार बिहार आ रहे हैं ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि जो व्यक्ति स्वयं राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन का नेतृत्व कर रहा हो वह बिहार का कितना समय दे रहे हैं कि हमारे लिए गर्व की बात है। विपक्ष के एक दो नेता ही हर जगह जा रहे हैं बाकी लोग कहां है ।चुनाव कार्यालय के उद्घाटन के मौके पर पूर्व सांसद रामकिशोर सिंह, पूर्व विधायक सतीश राय,लोकसभा प्रभारी अरविन्द सिंह, जिला प्रभारी अशरफ अंसारी, युवा प्रदेश अध्यक्ष वेद प्रकाश पाण्डेय,प्रदेश उपाध्यक्ष रालोमो कमल प्रसाद सिंह,भाजपा जिला अध्यक्ष प्रेम सिंह कुशवाहा, जदयू जिला अध्यक्ष सुभाष चंद्र सिंह, रालोमो जिला अध्यक्ष लालदेव राम, हम (सेक्कूलर) जिला अध्यक्ष अरविन्द पासवान, लोजपा जिला अध्यक्ष संजीव सिंह,पूर्व जिला भाजपा अध्यक्ष संजय सिंह, विनोद कुमार राय,अवधेश सिंह,संतोष शर्मा, मनोज सिन्हा, इंदल पासवान,राकेश पासवान, संतोष स्वराज,सहित एनडीए के कार्यकर्त्ता उपस्थिति थे।

गिद्धौर के तारडीह में डायन का आरोप लगाकर महिला के साथ किया मारपीट

प्रात: किरण, संवाददाता

गिद्धौर/जमुई। गिद्धौर थाना क्षेत्र अंतर्गत गंगरा पंचायत के तारडीह गांव में एक महिला पर डायन का आरोप लगाकर जानलेवा तरीके से मारपीट किया गया। महिला को गंभीर घायलाअवस्था में गिद्धौर के दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। घायल महिला अनीता देवी के पति बिनोद दास ने बताया कि वह काम करने गया था। इसी दौरान उसके लड़के ने आकर बताया कि घर मे मां के साथ मारपीट की जा रही है। कामदेव, ओंकार दास, सोनिया देवी, लड़की श्वेता घर के भीतर खींचकर ले गई और चारों ने मिलकर मारपीट की। वहीं दूसरे पक्ष से ओंकार रविदास की पत्नी सोनी देवी ने कहा कि मेरे भैंसुर बिनोद दास, गोतनी अनीता देवी और गोतनी के भाई मुकेश ने मारपीट की है। हम बैंगलोर में थे। इसी दौरान 22 अप्रैल को आवेदन दिया गया। जिसपर हम गांव आये तो बोले कि बिना गुनाह-कुसूर का आवेदन क्यूं दिया? देवर ने समझाया कि आवेदन देने से कुछ नहीं होता है तो हम शांत रह गए। एक दिन गल्लम गाली उधर से की गई तो हम इसके लिए मना किये और कहे कि मेरी बेटी को भी नहीं गाली दीजिये। जिसपर उसने कहा कि आपको यहां रहने नहीं देंगे। हमने कहा कि अच्छा वो तो देखेंगे कि आप नहीं रहने देंगे तो आप समझियेगा। इसपर मेरे भैंसुर, गोतनी और गोतनी के भाई ने मारपीट की, जिसमें मेरा सर फूट गया है। वहीं मामले को लेकर दोनों पक्षों की ओर से गिद्धौर थाना में आवेदन दिया गया है। पुलिस अग्रेतर कार्रवाई हेतु मामले के अनुसंधान में जुटी है।

14वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धा से याद किए गए तेज प्रताप चौहान

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर। सदर प्रखंड के बलवा कुंवारी स्थित लोक सांस्कृतिक चेतना मंच पर आयोजित भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा में तेज प्रताप चौहान के तैल चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता लोक सांस्कृतिक चेतना मंच के सचिव विजय प्रताप सिंह ने की। जबकि संचालन अनिल सिंह फौजी ने किया। श्रद्धांजलि सभा में मौजूद सभी गनमान लोगों ने तेज प्रताप चौहान के तैल चित्र पर पुष्पांजलि कर अपनी अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित की। इस मौके पर मुख्य रूप से मौजूद चौहान जी के करीबी रहे पूर्व सांसद प्रतिनिधि अवधेश कुमार सिंह ने चाचा चौहान के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने सन 1857 के योद्धा बाबू वीर कुंवर सिंह के असमरणीय एवं क्रांतिकारी गौरव गाथा को जन-जन तक पहुंचने का काम किया चाचा चौहान का समाज के युवाओं को दिया संदेशों को स्मरण कराये। जिंदा कॉम अपने पूर्वजों के स्मृति, शौर्य, पराक्रम, एवं उनकी अविस्वर्णी, योगदान को युग युगांतर तक संयोजक कर रखते हैं। वहीं लोजपा नगर अध्यक्ष मनोज सिन्हा ने कहा तेज प्रताप चौहान अलौकिक व्यक्ति के धनी थे उन्होंने अपना सारा जीवन समाज कल्याण को समर्पित कर दिया उनकी कमी हमेशा महसूस होती रहेगी। अंत में धन्यवाद ज्ञापन उनके पुत्र ज्ञान प्रताप चौहान ने किया। श्रद्धांजलि सभा में यह रहे मौजूद परमानंद सिंह, जनार्दन तिवारी, अमर, प्रताप, वीर बहादुर सिंह, कृष्ण कुमार, तारक चौहान, चुनचुन पटेल, प्रिंस चौहान, कुणाल राज, वेद, युवराज, अभिषेक कुमार सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

योजना-मैट्रिक पास को 10 हजार तो इंटरमीडिएट को मिलेगी 25 हजार की राशि

● 15 मई तक भरे जाएंगे कन्या उत्थान योजना के फॉर्म

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। जिले में इंटरमीडिएट का परीक्षा परिणाम घोषित हो चुका है। छात्र-छात्राएं स्नातक परीक्षा में नामांकन कराने में जुटे हुए हैं।हालांकि बेटियों की पढ़ाई में कोई व्यवधान न हो,तथा अपनी पढ़ाई अनवरत जारी रख सके। इसको लेकर कन्या उत्थान योजना शुरू की गई है। जिसको लेकर ऑनलाइन आवेदन शुरू कर दी गई है। योजना के लाभ के लिए बिहार बोर्ड से इंटरमीडिएट में उत्तीर्ण छात्राएं ही 15 मई तक आवेदन कर सकती है। बता दें की मुख्यमंत्री बालक व बालिका प्रोत्साहन योजना के तहत प्रथम श्रेणी से मैट्रिक पास छात्र-छात्राओं के लिए पोर्टल पर आवेदन की प्रक्रिया चल रही है।इसके साथ ही अनुसूचित जाति व जनजाति की इंटर प्रथम व द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण छात्राएं भी आवेदन कर सकती है।ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 मई ही निर्धारित है। मैट्रिक पास को 10 हजार तो इंटरमीडिएट को मिलेगी 25 हजार की राशि मुख्यमंत्री बालक व बालिका प्रोत्साहन योजना के तहत आवेदक को 10 हजार रूपए की प्रोत्साहन राशि दी जाती है।इसके साथ ही कन्या उत्थान योजना के तहत पात्र आवेदकों को 25 हजार रूपए की राशि सरकार द्वारा दी जाएगी।मुख्यमंत्री मेधावृति योजना के तहत छात्राओं को 8 हजार रूपए की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। इंटरमीडिएट के परिणाम जारी होने के समय अविवाहित का देना होगा घोषणापत्र आवेदन के लिए निम्न कागजात जरूरी आवेदन के लिए पात्र वैसे आवेदक है, जिन्होंने 2024 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की है।आवेदन के साथ आवेदक को अपनी शैक्षणिक प्रमाण पत्र,आधार कार्ड,बैंक पासबुक जो आधार से लिंक हो,जाति,आय,निवास प्रमाण पत्र, दो पासपोर्ट साइज फोटो, मोबाइल नंबर एवं ई-,मेल आईडी संलग्न करना होगा। आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आवेदन की जांच विभाग द्वारा की जाएगी।इसके बाद खाते में राशि भेजी जाएगी। अविवाहित होने का देना होगा प्रमाण पत्र बता दे छात्राओं के इस योजना का लाभ लेने के लिए घोषणा करना होगा कि इंटर परिणाम जारी होने के समय वे अविवाहित थी।इसके साथ ही बिहार की निवासी हूं।अपना आधार संख्या स्वेच्छापूर्ण दे रही हूं।इसके बाद आवेदन की प्रक्रिया शुरू होगी।जिला चयन करने के साथ नाम,पिता का नाम,माता का नाम,जन्म तिथि,इंटर में प्राप्त अंक के साथ वैवाहिक स्थिति और मोबाइल नंबर दर्ज करने पर ओटीपी सत्यापित करना होगा।

अज्ञात चोरों ने की एक दुकान में लाखों रुपए की चोरी

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर थाना क्षेत्र के गिद्धौर बाजार में संचालित डी.के.डिजिटल स्टूडियो दुकान में बीती रात्रि बुधवार को चोरों द्वारा दुकान के खपरैल का छप्पर फाड़कर हजारों रुपये के बेशकीमती सामानों सहित नकदी की चोरी कर लेने का एक मामला प्रकाश में आया है। जानकारी के अनुसार गिद्धौर बाजार में बंदर छाप गली में मेहता खाद भंडार के समीप डी के डिजिटल स्टूडियो संचालित दिनेश कुमार के डिजिटल स्टूडियो दुकान के खपरैल का छप्पर फाड़ कर नकदी चार हजार पांच सौ रुपए काउंटर पर रखा कंप्यूटर, प्रिंटर, डीएसएलआर कैमरा सरकारी शिक्षकों का कुछ कागजात सहित कई अन्य सामानों की चोरी कर ली। घटना को लेकर पीड़ित दुकानदारों ने जानकारी देते हुए बताया कि रोज की तरह हम दुकानदार अपना अपना दुकान बंद कर घर चले गए।जब अहले सुबह गुरुवार को दुकान खोला तो देखा कि दुकान का छत का खपरैल का छप्पर उखाड़ कई जरूरी सामान गायब है।वही थानाध्यक्ष रीता कुमारी ने बताया कि पीड़ित दिनेश कुमार द्वारा लिखित आवेदन दिया गया है।मामला दर्ज कर जांच पड़ताल की जा रही है।

तीसरी पुण्यतिथी पर श्रद्धापूर्वक याद किए गए पत्रकार सह समाजसेवी दिवंगत बलराम सिंह

प्रात: किरण, संवाददाता

महुआ।महुआ प्रखंड क्षेत्र के सिंघाड़ा उत्तरी पंचायत के सिंघाड़ा गांव में पत्रकार सह समाजसेवी दिवंगत बलराम सिंह के तीसरी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया।इस श्रद्धांजली सभा की अध्यक्षता बृज किशोर सिंह एवं संचालन सुनील कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने दिवंगत बलराम सिंह के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें भाव पूर्ण श्रद्धांजलि दी। इस श्रद्धांजली सभा में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि एक बेवाक पत्रकार थे। उन्होंने जनमानस की हर समस्या को अपने कलम के माध्यम से लोगों के समक्ष रखा तथा उसका निराकरण भी कराया। वे जब तक जीवित रहे वे हमेशा समाज की समस्याओं को लेकर संघर्षरत रहे हैं। वे जीवंत पत्रकारिता के एक अदभुत नमूना थे। वक्ताओं ने दिवंगत पत्रकार बलराम सिंह के द्वारा बताए गए मार्गों पर चलने एवम अनुकरण करने का भी संकल्प दोहराया।इस कार्यक्रम में प्रोफेसर संजय कुमार सिंह, प्रोफेसर पीएम सिंह, प्रोफेसर सुरेश सिंह, प्रोफेसर अरविंद झा, सेवानिवृत प्राचार्य प्रोफेसर रघुवंश प्रसाद सिंह, प्रमोद सिंह,उमेश सिंह, सुधीर मालाकार, राजकुमार सिंह, धर्मेंद्र सिंह, संजय सिंह, अनिल सिंह उपेंद्र व्यास मोहम्मद इरशाद, शंभू सदाशिव, राजेश मिश्रा, विपिन कुमार, दिलीप कुमार, कामेश्वर चौधरी, प्रोफेसर सरोज कुमार सिंह उर्फ लाला सिंह आदि के साथ साथ अनेकों गणमान्य, बुद्धिजीवी समाजसेवी और स्थानीय लोग भी उपस्थित थे।

हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र के लिए स्टैंडिंग कमेटी की बैठक आयोजित

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर लोकसभा आम निर्वाचन, 2024 के मद्देनजर आज समाहरणालय सभागार में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी वैशाली श्री यशपाल मीणा की अध्यक्षता में स्टैंडिंग कमेटी की 25 वीं बैठक हुई। बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री हर किशोर राय भी मौजूद थे।

जिला पदाधिकारी ने कमिटी के सदस्यों को बताया कि आज हाजीपुर लोक सभा क्षेत्र के लिए ईवीएम का द्वितीय रेंडमाइजेशन प्रेक्षक महोदय और सभी अभ्यर्थियों और उनके प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हुई। इस अवसर पर जिला पदाधिकारी ने कहा कि हम लोग प्रत्येक चरण में किए जा रहे सभी कार्यों से सभी दलों/उम्मीदवारों को समय-समय पर अवगत कराते जा रहे हैं। रेंडमाइजेशन के पश्चात अब सभी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन को जीपीएस लगे वाहन में दंडाधिकारी एवं पुलिस बल की निगरानी में संबंधित डिस्पैच सेंटरों पर भेजा जाएगा।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री हर किशोर राय ने कहा कि आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किसी भी हालत में नहीं होना चाहिए। मतदान समाप्ति के 48 घंटे पहले प्रचार पूरी तरह बंद हो जाना चाहिए। हम लोग आचार संहिता उल्लंघन के मामलों पर कड़ी नजर रखे हुए हैं।

इस अवसर पर अपर जिला दंडाधिकारी, उप विकास आयुक्त, उप निर्वाचन पदाधिकारी, सभी अनुमंडल पदाधिकारी, जिला पंचायती राज पदाधिकारी, ए आर ओ सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। साथ ही सभी अभ्यर्थियों, राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि भी मौजूद थें।

अभिभावक जागरूकता तथा साइकिल रैली कैंपेन का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर। प्रखंडों में भारत स्काउट एवं गाइड के द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया। उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय बाजितपुर करतार, पातेपुर के प्रांगण में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत बच्चों के द्वारा अभिभावक जागरूकता तथा साइकिल रैली कैंपेन का आयोजन किया गया जिसमें स्काउट गाइड के प्रखंड प्रभारी राजीव कुमार के नेतृत्व में, विद्यालय के स्काउट गाइड के नोडल शिक्षक विकास कुमार सहयोगी शिक्षक मनीष कुमार , विद्यालय के शिक्षकगण सुगंधा प्रिया ,राजा , अंसिता,सोनाली पूनम शोभा, रूबी ,अख्तर,सुमन,तथा विद्यालय के छात्र-छात्राओं के द्वारा दिव्यांग, वृद्ध ,महिला तथा युवाओं को बच्चों द्वारा स्व- निर्मित मतदान टोपी पहनकर मतदान करने के लिए उत्साहित तथा प्रेरित किया गया। चुनावी जागरूकता अभियान कार्यक्रम विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक रामनाथ साह के निर्देशन में संपन्न कराया गया । इसी क्रम में मध्य विद्यालय बेलकुंडा के स्काउट गाइड एवं शिक्षकों के द्वारा खेत खलिहानों में घूम घूम कर महिला एवं पुरुष मतदाताओं को मतदान करने के लिए प्रेरित किया।

स्काउट गाइड के जिला संगठन आयुक्त ऋतुराज ने कहा कि हमें अपने लोकतंत्र पर गर्व है।समझदारी व नैतिक आधार पर बिना किसी लालच व प्रलोभन के अपने मताधिकार का प्रयोग आप करें। लोकतांत्रिक देश में मत का प्रयोग एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के साथ संवैधानिक अधिकार भी है। इसलिए मत का प्रयोग करना अपना नैतिक कर्तव्य समझें। सभी के वोट का मूल्य बराबर है इसमें कोई पक्षपात नहीं है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र तभी मजबूत बनेगा जब पारदर्शी होगा। उन्होंने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि लोकतंत्र की परंपराओं को बनाए रखने के लिए नई आशाओं, अभिलाषाओं, कर्म, प्रेरणा तथा निर्माण कार्य क्षमताओं के साथ आगे बढ़ने के लिए अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों का निर्वहन करना सुनिश्चित करें।

मतदान तिथि को ईंट भट्ठो को बंद रखने का निर्देश

हाजीपुर। जिला पदाधिकारी के निदेर्शानुसार जिले के वी टी आर 70 प्रतिशत से अधिक करने एंव ईंट भट्टे पर कार्यरत श्रमिकों को मतदान करने को प्रेरित करने हेतु मंगलवार को जिला खनिज विकास पदाधिकारी के द्वारा वैशाली ईंट निमार्ता संघ के प्रतिनिधि एंव ईंट भट्ठा संचालको के साथ बैठक की गई' जिले के सभी ईंट भट्ठा संचालको को मतदान तिथि को भट्ठा बंद रखने का निर्देश दिया गया है' साथ ही श्रमिकों को मताधिकार का प्रयोग करने हेतु वेतन के साथ मतदान के दिन छुट्टी देने का भी निर्देश दिया है मतदान का निर्धारित समय 7 बजे सुबह से लेकर 6 बजे शाम, मतदान केंद्र पर उपलब्ध सुविधाओं, मतदान हेतु सभी प्रकार के दस्तावेज, एंव मतदान प्रक्रिया के बारे में भी जानकारी दी गई ! सभी को अपना अमूल्य वोट का प्रयोग करने को कहा गया।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने सामान्य प्रेक्षक को चुनाव की तैयारियों की दी जानकारी

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं भयरहित चुनाव सम्पन्न कराने हेतु वैशाली लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक शिव प्रसाद नकाते की अध्यक्षता में सभी कोषांगों के वरीय एवं नोडल पदाधिकारी तथा पुलिस पदाधिकारी के साथ समाहरणालय सभागार में बैठक की गयी। सभी प्रखण्डों के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी बैठक में विडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से संबद्ध थें। बैठक में वैशाली के व्यय प्रेक्षक जी वामशी कृष्णा रेड्डी तथा पुलिस प्रेक्षक एस. महेश्वरन भी उपस्थित थें। बैठक में निवार्ची पदाधिकारी, वैशाली -सह- जिलाधिकारी, मुजफ्फरपुर सुब्रत कुमार सेन ने चुनाव की अद्यतन तैयारी के बारे में सभी प्रेक्षकों को कोषांगवार जानकारी दी। प्रेक्षक ने कर्मियों को आयोग के प्रावधान एवं नियमों से प्रशिक्षण में अवगत कराने, मतदान केन्द्रों पर ए.एम.एफ. की उपलब्धता सुनिश्चित करने, मतदाताओं में विश्वास बहाल करने, सेक्टर पदाधिकारी को भ्रमणशील रहने, गर्मी को देखते हुए मतदान केन्द्रों पर पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करने, लो वोटर टर्न आउट वाले मतदान केन्द्रों पर मतदाता जागरूकता का कार्यक्रम करने, मतदान कर्मियों को चुनाव संबंधी सावधानी एवं एहतियाती उपायों अर्थात क्या करें, क्या न करें से अवगत कराने आदि सुझाव दिये गये। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा ई.वी.एम., वी.वी.पैट की तैयारी, मतदान सामग्री की तैयारी, आदर्श आचार संहिता का क्रियान्वयन, एकल खिड़की सेल द्वारा दी जा रही अनुमति, पोस्टल बैलेट, कम्यूनिकेशन प्लान, कर्मियों का प्रशिक्षण, जिला नियंत्रण कक्ष का 24 घंटे संचालन आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त वरीय पुलिस अधीक्षक राकेश कुमार द्वारा चुनाव के दौरान पुलिस व्यवस्था के संबंध में जानकारी दी गयी।

वैशाली संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक शिवप्रसाद नकाते का आवासन जिला अतिथि गृह में हैं तथा उनका मोबाईल नम्बर- 9031026672 है। व्यय प्रेक्षक जी वामशी कृष्णा रेड्डी का आवासन जिला अतिथि गृह में हैं तथा उनका मोबाईल नम्बर- 9031026673 है तथा पुलिस प्रेक्षक एस महेश्वरन का भी आवासन जिला अतिथि गृह में हैं तथा उनका मोबाईल नम्बर- 9031026690 है। अतः आम नागरिक उक्त सम्पर्क सूत्र का उपयोग कर लोक सभा आम निर्वाचन 2024 से संबंधित किसी तरह के सुझाव/शिकायत के लिए माननीय प्रेक्षक महोदय से सम्पर्क किया जा सकता है। बैठक में उप विकास आयुक्त श्री आशुतोष द्विवेदी, नगर आयुक्त श्री नवीन कुमार, अपर समाहर्ता, राजस्व श्री संजीव कुमार, अपर समाहर्ता, विधि-व्यवस्था श्री सुधीर कुमार सिन्हा, अनुमंडल पदाधिकारी पूर्वी श्री अमित कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी पश्चिम श्री बृजेश कुमार, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी श्री अशोक कुमार गुप्ता, जिला आपूर्ति पदाधिकारी श्री प्रभात कुमार, डी.पी.ओ. आई. सी.डी.एस. श्रीमती चॉंदनी सिंह, उप निर्वाचन पदाधिकारी श्री सत्यप्रिय कुमार सहित कई अन्य पुलिस एवं प्रशासनिक पदाधिकारी मौजूद थें।

विचार मंथन

सम्पादकीय

अंतिम फैसला तो जनता के हाथ में

सर्वोच्च अदालत ने लोक सभा चुनाव से पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय को लेकर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से सवाल किया और जांच एजेंसी से इसका जवाब मांगा।अदालत ने पांच सवाल पूछे और उनके जवाब लेकर आने का निर्देश दिया। दो सदस्यीय बेंच ने कहा कि स्वतंत्रता बहुत महत्त्वपूर्ण है। आखिरी सवाल गिरफ्तारी के संबंध में है। न्यायिक कार्यवाही के बिना, जो कुछ हुआ उसके संदर्भ में कार्यवाही कर सकते हैं।अदालत ने पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के लिए कहा कि पक्ष और विपक्ष में निष्कर्ष हैं। हमें बताएं कि केजरीवाल का मामला कहां है। क्या हम सीमा को बहुत विस्तृत बनाते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि जो व्यक्ति दोषी है, उसका पता लगाने के लिए मानक समान हों। केजरीवाल 21 मार्च से शराब नीति घोटाले के मामले में न्यायिक हिरासत के तहत दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं। केजरीवाल इस गिरफ्तारी से पहले ही सार्वजनिक तौर पर कई मर्तबा दोहरा चुके थे कि मोदी सरकार लोक सभा चुनाव के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर सकती है।दिल्ली सरकार के नेता पहले ही जेल में हैं। माना जा रहा है कि आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता विभिन्न राजनैतिक दलों के लिए चुनौती बनती जा रही है। सत्ताधारी दल की यह जिम्मेदारी है कि वह अन्य विपक्षी दलों के साथ पूर्वाग्रह भरा बर्ताव करने से बचे। दंड प्रक्रिया संहिता के अध्याय 5 में स्पष्ट प्रावधान है, कोई भी गिरफ्तारी इसके अधीन ही होनी चाहिए। केजरीवाल अपनी गिरफ्तारी और हिरासत को अवैध बता रहे हैं।यह कहना गलत नहीं है कि चुनाव के दरम्यान लगातार गिरफ्तारियां हो रही हैं तथा नोटिस भी थमाए जा रहे हैं या छापे तक डाले जा रहे हैं। दरअसल, केजरीवाल की गिरफ्तारी की टाइमिंग को लेकर सवाल उठ रहे हैं, जिनके उत्तर मिलने चाहिए। यह स्थिति लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए उचित नहीं कही जा सकती।बेशक, न्यायिक व्यवस्था अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। सार्वजनिक जीवन में रहने वाला कोई भी राजनीतिज्ञ यदि किसी तरह के घोटाले में शामिल है तो उसे दंडित करने के लिए अदालतें हैं। अदालतोंपर पहले ही लंबित मामलों का दबाव है।उस पर मोदी सरकार लगातार आरोपियों को भाजपा में शामिल कर उन्हें क्लीन चिट देने का काम कर स्पष्ट संकेत दे रही है। यह अपने आप में गलत संदेश दे रहा है। बावजूद इसके अंतिम फैसला तो जनता के हाथ में है, जो मूकदर्शक जरूर है, लेकिन अपना निर्णय समय आने पर देगी।

चुनाव में ध्रुवीकरण

अवधेश कुमार

मुस्लिम आरक्षण इस चुनाव में एक बड़ा मुद्दा बन गया है।। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित पूरी भाजपा कांग्रेस पर आरोप लगा रही है कि वह अनुसूचित जाति-जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्ग के आरक्षण हटाकर मुसलमान को देना चाहती है।कांग्रेस सहित समूचा विपक्ष और भाजपा विरोधी कह रहे हैं कि मोदी और भाजपा देश में हिन्दू मुस्लिम के नाम पर चुनाव में ध्रुवीकरण चाहते हैं, जो सरेआम सांप्रदायिककरण है। अगर चुनाव में किसी संप्रदाय पर हमला किया जाए या उसके विरुद्ध दूसरे संप्रदाय को भड़काया जाए तो यह सांप्रदायिकता की श्रेणी में आएगा और इसके लिए चुनाव कानून ही नहीं सामान्य कानूनों में भी मुकदमा चलाने तथा सजा देने का प्रावधान है।प्रश्न है कि क्या प्रधानमंत्री ने जो आरोप लगाया उसे चुनाव को सांप्रदायिक रंग देने का षड्यंत्र मान लिया जाए या उसके पीछे तथ्य भी हैं? कांग्रेस के नेता और प्रवक्ता प्रधानमंत्री पर हमले कर रहे हैं किंतु यह कहने को तैयार नहीं है कि वह मुसलमानों को आरक्षण देने के पक्ष में नहीं है। कांग्रेस यह भी स्पष्ट नहीं करती कि वह धर्म के आधार पर आरक्षण के विरुद्ध है। कांग्रेस अपने घोषणा पत्र में आरक्षण की सीमा बढ़ाने का वचन देते हुए यह सुनिश्चित करने की घोषणा करती है कि अल्पसंख्यकों को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, सार्वजनिक रोजगार, सार्वजनिक कार्य अनुबंध, कौशल विकास, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में बिना किसी भेदभाव के अवसरों का उचित हिस्सा मिले तो इसलिए मंशा पर प्रश्न उठता है क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि है।कांग्रेस सरकारों ने पहले भी मुसलमानों को आरक्षण देने की पहल की है। चूंकि धर्म के आधार पर आरक्षण मान्य नहीं था, इसलिए अन्य पिछड़े वर्ग के आरक्षण में से ही कर्नाटक में मुसलमानों को चार प्रतिशत आरक्षण दिया गया। केंद्र में यूपीए सरकार के कार्यकाल के दौरान आंध्र प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने मुसलमानों को आरक्षण देने का कानून बना दिया। यह विषय सर्वोच्च अदालत तक गया। आज भी अनुसूचित जनजाति से धर्म परिवर्तन कर मुसलमान या ईसाई बनने वालों को आरक्षण का लाभ मिलता है। वे अल्पसंख्यक होने का भी लाभ पाते हैं और अनुसूचित जनजाति का भी। कांग्रेस यह तो कह रही है कि इसमें मुस्लिम शब्द कहीं नहीं है पर अल्पसंख्यक का अर्थ क्या है? प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 9 दिसम्बर 2006 को राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक के भाषण में कहा कि मेरा मानना है कि हमारी सामूहिक प्राथमिकताएं कृषि, सिंचाई, जल संसाधन, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण बुनियादी ढांचे में निवेश के साथ ही एससी/एसटी, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यकों, महिलाओं और बच्चों का उत्थान है। हमें ऐसी नई योजनाएं बनानी होंगी, जिनसे अल्पसंख्यकों खासकर मुस्लिमों को विकास में समान भागीदारी मिल सके। देश के संसाधनों पर उनका पहला हक होना चाहिए।इ 2014 लोक सभा चुनाव के लिए आचार संहिता लागू होने से ठीक एक दिन पहले मनमोहन सरकार ने 5 मार्च 2014 को दिल्ली की 123 प्रमुख संपत्तियों को दिल्ली वक्फ बोर्ड के हवाले कर दिया। दिल्ली वक्फ बोर्ड ने 27 फरवरी, 2014 को राष्ट्रीय राजधानी में इन प्रमुख संपत्तियों पर दावा किया था। अनेक उदाहरण मिलेंगे जिनसे साबित होगा कि मनमोहन सरकार ऐसी मुस्लिम संस्थाओं, संगठनों और व्यक्तियों के पूरी तरह प्रभाव में था। यह आदेश सरकार ने उचित मुआवजे का अधिकार और भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्स्थापन में पारदर्शिता अधिनियम, 2013 के तहत मिली शक्तियों का प्रयोग करते हुए किया। तो क्या यह संशोधित अधिनियम ऐसे ही कार्यों को ध्यान में रखते हुए पारित हुआ था? नरेन्द्र मोदी सरकार के आने के बाद इन संपत्तियों को मुक्त कराया गया और उसके लिए भी न्यायालय में संघर्ष करना पड़ा। जिस तरह तेलंगाना एवं कर्नाटक में कांग्रेस को मुस्लिम समुदाय का वोट मिला उससे उसको लगता है कि ऐसी नीतियों पर आगे बढे से उसका खोया जनाधार वापस आ सकता है। इसलिए राहुल गांधी और उनके नेतृत्व में पूरी कांग्रेस यह साबित करने में लगी है कि मुसलमान के हितों के प्रति वह पूरी तरह समर्पित है या उसके लिए किसी सीमा तक जाने को तैयार है। ध्यान रखिए, पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन जाति को आरक्षण पहले से प्राप्त है, नरेन्द्र मोदी सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 फीसद आरक्षण का प्रावधान कर दिया है। तो आप आरक्षण की सीमा को बढ़ाना किसके लिए चाहते हैं? अपने भाषणों और वक्तव्यों में राहुल गांधी सहित ज्यादातर नेता अनुसूचित जाति-जनजाति व पिछड़े वर्ग के साथ ही अल्पसंख्यकों और मुसलमानों के उत्थान की बात करते हैं।आखिर अनुसूचित जाति-जनजाति जाति और पिछड़े वर्ग के साथ मुसलमान को क्लब कैसे किया जा सकता है? मुसलमानों ने देश में लंबे समय तक शासन किया और इस कारण वे विशेषाधिकार वर्ग में आते हैं। मोदी सरकार में ही सरकारी नौकरियों में मुसलमानों की संख्या 2014 के मुकाबले दोगुनी से ज्यादा हुई है। किंतु हमारे यहां जाति व्यवस्था में हाशिए पर रहे समूहों के कारण आरक्षण का प्रावधान संविधान में लाया गया। इसमें धर्म के आधार पर आरक्षण की कोई व्यवस्था न थी और न हो सकती है। ऐसी अवस्था में निश्चित रूप से अन्य पिछड़े वर्ग का हक मार कर ही कांग्रेस या आईएनडीआईए के अन्य दल उन्हें आरक्षण दे सकते हैं। पश्चिम बंगाल से इसके संदर्भ में एक डराने वाला आंकड़ा आया है।इस समय वहां 179 जातियां अन्य पिछड़े वर्ग में शामिल हैं, जिनमें 118 मुस्लिम हैं और हिंदू सिर्फ 61। मोदी सरकार ने जब राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया तो उसने राज्यों को भी पिछड़े वर्ग की सूची में जातियों को शामिल करने का अधिकार दिया। ममता बनर्जी ने 71 जातियां शामिल की जिनमें 65 मुस्लिम थे। जब पिछड़ा वर्ग आयोग ने इसका कारण पूछा तो बताया गया कि पिछड़े हिन्दुओं ने धर्म परिवर्तन कर इस्लाम ग्रहण कर लिया। जब यह पूछा गया कि कहां-कहां ऐसा हुआ तो उत्तर आया कि इसकी जानकारी नहीं है। सरकारों ने ऐसे नियम और ढांचे बना दिया जिनसे राजस्थान, बंगाल, कर्नाटक सहित कई राज्यों में पिछड़े वर्ग के आरक्षण का ज्यादातर लाभ मुस्लिम समुदाय को मिल रहा है। इसके बाद क्या किसी संदेह की गुंजाइश रह जाती है?

भारत में अंगदान की कमी से जा रही लोगों की जान

तीन लाख से अधिक रोगियों की प्रतीक्षा सूची और अंग के इंतजार में हर दिन कम से कम 20 लोगों की मृत्यु के साथ, भारत में अंग दान की कमी, विशेष रूप से मृतक दान, भारी नुकसान उठा रही है। भारत में मृतक अंगदान की दर पिछले एक दशक से प्रति दस लाख की आबादी पर एक दाता से कम रही है। भारत को इसे प्रति मिलियन जनसंख्या पर 65 दान तक बढ़ाने की आवश्यकता है और ऐसा करने के लिए, सार्वजनिक क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ना होगा। देश में लगभग 600 मेडिकल कॉलेज और 20 से अधिक एम्स हैं। अगर हमें हर साल उनसे एक-एक दान भी मिले तो हम बेहतर स्थिति में रहेंगे।ह्न दुनिया भर में भी, अंगों की आवश्यकता वाले केवल 10% रोगियों को ही समय पर अंग मिल पाते हैं। स्पेन और अमेरिका में बेहतर अंग दान प्रणाली है, जहां प्रति मिलियन 30-50 दान की दर है। मरीजों के परिवारों को आगे आने और दान करने में मदद करने के लिए ट्रॉमा और आईसीयू डॉक्टरों को प्रशिक्षित करना समय की मांग है, कई संभावित मामलों की उपलब्धता के बावजूद, भारत में अंग दान की कम दर मस्तिष्क मृत्यु या मस्तिष्क स्टेम मृत्यु मामलों की अपर्याप्त पहचान और प्रमाणीकरण के कारण हो रही है। अंगदान के मामले में देश का वार्षिक औसत अब भी प्रति दस लाख लोगों पर एक से भी कम दाता है। सड़क परिवहन के आंकडों के मुताबिक भारत में हर साल, करीब 150, 000 लोग सड़कों पर मारे जाते हैं। इसका मतलब औसतन हर रोज सड़कों पर 1000 से ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं और 400 से ज्यादा लोग दम तोड़ देते हैं।

डॉ सत्यवान सौरभ
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

देश में तीन लाख मरीज अंगदान का इंतजार कर रहे हैं और देश में दाताओं की संख्या में वृद्धि मांग के अनुरूप नहीं है; विशेषज्ञों का कहना है कि देश को तत्काल मृतक दान दर बढ़ाने की जरूरत है, और आईसीयू डॉक्टरों और परिवारों के बीच इस बारे में अधिक जागरूकता होनी चाहिए कि कैसे एक मृतक दानकर्ता कई जिंदगियां बचा सकता है। तीन लाख से अधिक रोगियों की प्रतीक्षा सूची और अंग के इंतजार में हर दिन कम से कम 20 लोगों की मृत्यु के साथ, भारत में अंग दान की कमी, विशेष रूप से मृतक दान, भारी नुकसान उठा रही है। भारत में मृतक अंगदान की दर पिछले एक दशक से प्रति दस लाख की आबादी पर एक दाता से कम रही है।

भारत को इसे प्रति मिलियन जनसंख्या पर 65 दान तक बढ़ाने की आवश्यकता है और ऐसा करने के लिए, सार्वजनिक क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ना होगा। देश में लगभग 600 मेडिकल कॉलेज और 20 से अधिक एम्स हैं। अगर हमें हर साल उनसे एक-एक दान भी मिले तो हम बेहतर स्थिति में रहेंगे।ह्न दुनिया भर में भी, अंगों की आवश्यकता वाले केवल 10% रोगियों को ही समय पर अंग मिल पाते हैं। स्पेन और अमेरिका में बेहतर अंग दान प्रणाली है, जहां प्रति मिलियन 30-50 दान की दर है। मरीजों के परिवारों को आगे आने और दान करने में मदद करने के लिए ट्रॉमा और आईसीयू डॉक्टरों को प्रशिक्षित करना समय की मांग है, कई संभावित मामलों की उपलब्धता के बावजूद, भारत में अंग दान की कम दर मस्तिष्क मृत्यु या मस्तिष्क स्टेम मृत्यु मामलों की अपर्याप्त पहचान और प्रमाणीकरण के कारण हो रही है। अंगदान के मामले में देश का वार्षिक औसत अब भी प्रति दस लाख लोगों पर एक से भी कम दाता है।

सड़क परिवहन के आंकडों के मुताबिक भारत में हर साल, करीब 150, 000 लोग सड़कों पर मारे जाते हैं। इसका मतलब औसतन हर रोज सड़कों पर 1000 से ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं और 400 से ज्यादा लोग दम तोड़ देते हैं। अंग दान में मृत डोनर के अंगों- जैसे हृदय, यकृत (लिवर), गुर्दे (किडनी), आंतें, आंखें, फेफड़े और अग्न्याशय (पैनक्रियाज) को निकाल कर दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है, जिसे जीवित रहने के लिए उनकी जरूरत है। एक मृत डोनर, जिसे कैडेवर भी कहा जाता है, इस तरह नौ लोगों की जान बचा सकता है। हालांकि हेल्थ प्रोफेश्नल आमतौर पर अंगदान के विषय पर मृतक के परिजनों से बात करने में अटपटा महसूस करते हैं। डॉक्टर मृतक के अंगों को दान देने के बारे में पूछने से कतराते हैं। कोई इस बारे में प्रोत्साहन भी नहीं है और बदले की कार्रवाई का डर भी रहता है।

जनता अनिच्छुक और अविश्वासी है क्योंकि वे मस्तिष्क मृत्यु, अंग दान के विचार या इसके फायदों को पूरी तरह से नहीं समझते हैं। मृत्यु के बाद शरीर के बारे में सांस्कृतिक रीति-रिवाज सहमति में बाधा डाल सकते हैं, और कुछ धार्मिक मान्यताएँ अंग दान पर रोक लगाती हैं।भारत में पर्याप्त प्रत्यारोपण केंद्र, आवश्यक प्रशिक्षण वाले चिकित्सा पेशेवर या अंगों की पुनर्प्राप्ति, संरक्षण और परिवहन के लिए संसाधन नहीं हैं। अंग दान के लिए परिवार की सहमति प्राप्त करना अक्सर आवश्यक होता है। यह एक लंबी और भावनात्मक रूप से कठिन प्रक्रिया हो सकती है, जो दान में देरी कर सकती है या उसे रोक भी सकती है। यहां तक कि ऐसे मामलों में जहां अंग उपलब्ध हैं, कई रोगियों की पहुंच प्रत्यारोपण सर्जरी और पोस्ट-ऑपरेटिव देखभाल की उच्च लागत के कारण और भी सीमित है।

अंग विफलता वाले कई मरीज अंग की तीव्र कमी के परिणामस्वरूप प्रत्यारोपण का इंतजार करते समय मर जाते हैं।अगों की अत्यधिक आवश्यकता के कारण अवैध अंग व्यापार नेटवर्क को बढ़ावा मिलता है, जो कमजोर लोगों को नैतिक और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के साथ-साथ शोषण के खतरे में डालता है। अंगों की सीमित आपूर्ति के कारण स्वास्थ्य संबंधी असमानताएं बढ़ जाती हैं, जिससे पैसे वाले लोगों के लिए इसकी संभावना अधिक हो जाती है। जीवनरक्षक प्रत्यारोपण प्राप्त करें। डायलिसिस और अन्य सहायक देखभाल उन कई संसाधनों में से हैं जिन पर अंतिम चरण के अंग विफलता वाले रोगियों के प्रबंधन के कार्य द्वारा भारी कर लगाया जाता है।

सभी बातों पर विचार करने पर, भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली निम्न अंगदान दरों से बहुत प्रभावित होती है, जिसके परिणामस्वरूप टाली जा सकने वाली मौतें, अनैतिक व्यवहार और जीवन रक्षक देखभाल तक असमान पहुंच होती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी को अंग प्रत्यारोपण तक उचित पहुंच मिले, इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है जिसमें नैतिक विचार, कानूनी सुधार, बुनियादी ढांचे का विकास और सार्वजनिक शिक्षा शामिल है। एक मृत अंग दाता आठ लोगों की जान बचा सकता है। दान की गई दो किडनी दो रोगियों को डायलिसिस उपचार से मुक्त कर सकती हैं।

दान किए गए एक लीवर को प्रतीक्षा सूची के दो रोगियों के बीच विभाजित किया जा सकता है। दो दान किए गए फेफड़ों का मतलब है कि दो अन्य रोगियों को दूसरा मौका दिया गया है, और एक दान किए गए अग्न्याशय और दान किए गए हृदय का मतलब दो और रोगियों को जीवन का उपहार प्राप्त करना है। एक ऊतक दाता - कोई व्यक्ति जो हड्डी, टेंडन, उपास्थि, संयोजी ऊतक, त्वचा, कॉर्निया, श्वेतपटल, और हृदय वाल्व और वाहिकाओं को दान कर सकता है। 75 लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। भारत में अंग दान की प्रतिज्ञा को वास्तविक दान में तब्दील करने की जरूरत है और इसके लिए मेडिकल स्टाफ को शिक्षित करने की जरूरत है। उन्हें मस्तिष्क मृत्यु और अंग दान के महत्व के बारे में परिवारों को पहचानने, पहचानने, सूचित करने और परामर्श देने में सक्षम होना चाहिए।

संकुचित व षड्यंत्रकारी चुनावी विमर्श अत्यंत चिंतनीय

जो खिलाफ हैं वह हराम जादे हैं। इसके साथ ही स्वयं बहुसंख्यकवाद की राजनीति करने वाली यही भाजपा अपने विरोधी दलों को अल्पसंख्यक परस्त व मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाले दलों के रूप में पूरे जोर शोर से प्रचारित कर रही है। अपने इस ह्यअनैतिकह्न अभियान में वह वर्तमान चुनावी बेला में सार्वजनिक मंचों से जिन शब्दों व वाक्यों का इस्तेमाल कर रही है वह भारतीय राजनीति के इतिहास का अब तक का सबसे गिरा व निम्नस्तरीय चुनाव अभियान है। यह इस बात का भी परिचायक है कि अबकी बार चार सौ पार का हवाई नारा देने वाली भाजपा व इसके शीर्ष नेता समझ चुके हैं कि जनता अब उनके विघटनकारी मंसूबों को समझ चुकी है। और 400 पार की बात तो दूर इस बार तो उनकी सत्ता में वापसी पर भी प्रश्न चिन्ह लग चुका है। गौरतलब है कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर अयोध्या स्थित विवादित मंदिर मस्जिद मुकददमे का निर्णय सुनाया गया। इसी फैसले में केंद्र सरकार से एक ट्रस्ट बनाकर मंदिर निर्माण करने को कहा गया। यहाँ यह भी काबिल-ए-गौर है कि मंदिर-मस्जिद अदालती वाद परिवाद में मुद्दई के रूप में न तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ था न विश्व हिन्दू परिषद् न ही भाजपा। परन्तु केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली एन डी ए सरकार होने के नाते बड़ी ही चतुराई से ट्रस्ट के गठन से लेकर मंदिर निर्माण व उद्घाटन तक के इस पूरे प्रकरण का भाजपा द्वारा निजीकरण कर लिया गया।

निर्मल रानी
लेखक वरिष्ठ राजनीतिक टिप्पणीकार हैं

विगत चार दशकों से भारतीय जनता पार्टी भगवान राम के नाम पर राजनीति कर स्वयं को स्थापित करने की कोशिश करती रही है। आखिरकार धार्मिक ध्रुवीकरण व राम मंदिर की राजनीति ने उसे केंद्रीय सत्ता में आने में मदद की और यह भाजपा का लोकप्रिय मुद्दा बन गया। अब वही भाजपा इससे भी दो कदम आगे बढ़कर जहाँ सर्वव्यापी मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम को अपना निजी ह्यभगवानह्न समझने लगी है वहीं अपने विरोधी दलों को राम विरोधी तो राम द्रोही आदि प्रचारित कर रही है। इसी दल की एक सांसद यहाँ तक कह चुकी है कि जो हमारे साथ हैं वह रामजादे हैं और जो खिलाफ हैं वह हराम जादे हैं। इसके साथ ही स्वयं बहुसंख्यकवाद की राजनीति करने वाली यही भाजपा अपने विरोधी दलों को अल्पसंख्यक परस्त व मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाले दलों के रूप में पूरे जोर शोर से प्रचारित कर रही है। अपने इस ह्यअनैतिकह्न अभियान में वह वर्तमान चुनावी बेला में सार्वजनिक मंचों से जिन शब्दों व वाक्यों का इस्तेमाल कर रही है वह भारतीय राजनीति के इतिहास का अब तक का सबसे गिरा व निम्नस्तरीय चुनाव अभियान है। यह इस बात का भी परिचायक है कि अबकी बार चार सौ पार का हवाई नारा देने वाली भाजपा व इसके शीर्ष नेता समझ चुके हैं कि जनता अब उनके विघटनकारी मंसूबों को समझ चुकी है। और 400 पार की बात तो दूर इस बार तो उनकी सत्ता में वापसी पर भी प्रश्न चिन्ह लग चुका है। गौरतलब है कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर अयोध्या स्थित विवादित मंदिर मस्जिद मुकददमे का निर्णय सुनाया गया। इसी फैसले में केंद्र सरकार से एक ट्रस्ट बनाकर मंदिर निर्माण करने को कहा गया। यहाँ यह भी काबिल-ए-गौर है कि मंदिर-मस्जिद अदालती वाद परिवाद में मुद्दई के रूप में न तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ था न विश्व हिन्दू परिषद् न ही भाजपा। परन्तु केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली एन डी ए सरकार होने के नाते बड़ी ही चतुराई से ट्रस्ट के गठन से लेकर मंदिर निर्माण व उद्घाटन तक के इस पूरे प्रकरण का भाजपा द्वारा निजीकरण कर लिया गया। यहाँ तक कि 22 जनवरी 2024 को हुये मंदिर उद्घाटन के दौरान इसके प्राण प्रतिष्ठा के धार्मिक विधि विधान सम्बन्धी तौर तरीकों व समय को लेकर देश के चारों शंकराचार्यों सहित तमाम संतों महंतों द्वारा इसका कितना तार्किक विरोध किया गया। परन्तु उन सब की अनसुनी कर दी गयी। और मंदिर ट्रस्ट से लेकर इसके उद्घाटन तक को पूर्णतः भाजपाई इवेंट के रूप में पेश किया गया। और अब उसी आधार पर यह कहकर वोट माँगा जा रहा है कि ह्यजो राम को लाये हैं हम उनको लाएंगे।

देश के चारों शंकराचार्य ही नहीं बल्कि हजारों वरिष्ठ संतों ने तथा भाजपा विरोधी दलों ने यह बखूबी समझ लिया था कि ट्रस्ट गठन से लेकर प्राणप्रतिष्ठा तक का पूरा कार्यक्रम पूरी तरह राजनैतिक व अनैतिक है। इसी लिये जहां शंकराचार्यों ने इस आयोजन में शिरकत नहीं की वहीं विपक्षी दलों के नेताओं ने भी 22 जनवरी के इस ह्यराजनैतिक आयोजनह्न से दूरी बनाये रखी। इतना ही नहीं बल्कि कई प्रमुख केंद्रीय मंत्री व भाजपाई मुख्यमंत्री भी अभी तक अयोध्या के नवनिर्मित मंदिर दर्शन करने नहीं गए हैं। परन्तु भाजपा के निशाने पर केवल कांग्रेस व इंडिया गठबंधन के नेता हैं। भाजपा इसे लेकर ऐसे ऐसे दुष्प्रचार कर रही है ताकि वह किसी तरह कांग्रेस व इंडिया गठबंधन के अन्य दलों व उनके नेताओं को राम विरोधी साबित कर सके। अफसोस की बात तो यह है कि कल के धर्मनिर्पेक्षतावादी जो आज भगवा रंग में रंग रहे हैं उनसे भी भाजपा यही कहलवा रही है कि कांग्रेस राम विरोधी है। और कांग्रेस अयोध्या मंदिर दर्शन करने का विरोध करती है।

जबकि सच्चाई इससे बिल्कुल अलग है। कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेट अयोध्या दर्शन करने जा चुकी हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय रॉय पूरी उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के साथ राम मंदिर जा चुके। सांसद दीपेंद्र हुडा, छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जेसे तमाम कांग्रेस नेता 22 जनवरी के बाद अयोध्या जा चुके हैं। परन्तु कांग्रेस आला कमान ने किसी नेता से इस विषय पर कोई सवाल नहीं किया। क्योंकि कांग्रेस शुरू से यही मानती आ रही है कि धर्म व धर्म पालना किसी भी व्यक्ति का आस्था सम्बन्धी अत्यंत निजी विषय है। इसकी पालना करने या न करने का प्रत्येक व्यक्ति का अपना निजी अधिकार है। कांग्रेस ने न तो कभी राम के नाम पर वोट माँगा न ही राम के विरोध के नाम पर। परन्तु दुष्प्रचार की इंतेहा यह कि नरेंद्र मोदी स्वयं यह कह रहे हैं कि मैं ह्यलोकसभा चुनाव में 400 सीट इसलिए जीतना चाहता हूं कि ताकि कांग्रेस अयोध्या में राम मंदिर पर बाबरी ताला ना लगा दे। कांग्रेस की चली तो कांग्रेस कहेगी कि भारत में जीने का पहला हक भी उसके वोट बैंक (मुसलमानों) का है। लेकिन जब तक मोदी जिंदा है, नकली सेक्युलरिज्म के नाम पर भारत की पहचान मिटाने की कोई भी कोशिश मोदी सफल नहीं होने देगा, और ये हजारों वर्ष पुराने भारत को, उसकी इस संतान की गारंटी है ह्नह्न देश के प्रधानमंत्री के मुंह से निकला हुआ यह वाक्यविपक्षी दलों के लिये कितनी कुंठा से भरा व हताशा से परिपूर्ण प्रतीत होता है? आज देश मंहगाई, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, अमेरिकी डालर के मुकाबले भारतीय मुद्रा में आ रही अभूतपूर्व गिरावट, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम, (पीएसयू) के चंद निजी हाथों में सौंपे जाने जैसे अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों से जूझ रहा है। परन्तु सरकार के पास इनका न तो कोई जवाब है न ही इनके समाधान की कोई नीति। 2019 का चुनाव इसी मोदी सरकार ने मुफ़्त राशन पाने वाले

पर्याप्त सुविधाओं के अभाव से प्रभावित होती बालिका शिक्षा

आशा नारंग

हाल ही में आईसीएसई समेत विभिन्न राज्यों के दसवीं और बारहवीं के परिणाम घोषित हुए हैं, जिनमें बड़ी संख्या में छात्राओं ने उम्मीद से कहीं अधिक बढ़कर प्रदर्शन किया है. यह आंकड़े बताते हैं कि यदि अवसर और सुविधाएं प्रदान किये जाएं तो लड़कियां भी किसी भी परिणाम को अपने पक्ष में करने की भरपूर सलाहियत रखती हैं. दरअसल आजादी के बाद हमारे देश में चाहे केंद्र की सरकार हो, या राज्य की सरकारें, सभी ने जिन बुनियादी सुविधाओं के विकास पर सबसे अधिक फोकस किया उसमें शिक्षा भी एक अहम विषय था. शहर से लेकर गांव और अमीर से लेकर गरीब तक के सभी बच्चों को समान रूप से शिक्षा प्राप्त हो इसके लिए कई स्तर पर योजनाएं तैयार की गई. बच्चों के लिए स्कूल तक पहुंच को आसान बनाने पर जोर दिया गया, गरीब के बच्चों की शिक्षा में कोई बाधा न आये इसके लिए अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था की गई, किताब-कॉपियां और स्कूल ड्रेस मुफ्त उपलब्ध कराये जाने लगे. सरकार की इस पहल का बहुत सकारात्मक परिणाम भी नजर आने लगा. आजादी के बाद 1951 की पहली जनगणना में जहां देश में साक्षरता की कुल दर महज 18.33 प्रतिशत थी वहीं 60 वर्षों बाद 2011 में यह बढ़कर 74 प्रतिशत से अधिक हो गई. लेकिन इस सुखद आंकड़ों के साथ सिक्के का एक दूसरा पहलू यह है कि अभी भी किशोरियों विशेषकर दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों की किशोरियों के सामने शिक्षा प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती है. अभी भी हमारे देश में कई ऐसे ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां महिलाओं की साक्षरता दर बेहद कम है. जहां मुश्किल से लड़कियां 12वीं तक भी शिक्षा प्राप्त कर पाती हैं. ऐसा ही एक गांव राजस्थान के अलवर जिला स्थित शादीपुर है. जहां आज भी महिलाओं में साक्षरता की दर दहाई के आंकड़े को भी पार नहीं कर सका है. इस गांव में बालिका शिक्षा के प्रति जहां समाज में उदासीनता है वहीं शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की योजनाएं भी दम तोड़ती नजर आती है. अलवर जिला से करीब 67 किमी और तिजारा तहसील से लगभग 20 किमी की दूरी पर आबाद इस गांव की जनसंख्या 300 के आसपास है. इसमें महिलाओं की जनसंख्या करीब 48 प्रतिशत है. मुस्लिम बहुल इस गांव में 2011 की जनगणना के अनुसार कुल साक्षरता की दर 18 प्रतिशत से भी कम है. पुरुषों में जहां साक्षरता की दर करीब 30 प्रतिशत है वहीं महिलाओं में यहां साक्षरता की दर पांच प्रतिशत से भी कम है.

जो न केवल चिंता का विषय है बल्कि बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने वाले हमारे आंकड़ों पर भी प्रश्न चिन्ह लगाता है. इतना ही नहीं गांव में न तो कोई पंचायत घर है, न आंगनबाड़ी और न ही सार्वजानिक शौचालय की कोई सुविधा उपलब्ध है. गांव वालों के रोजगार का मुख्य साधन पशुपालन, दैनिक मजदूरी, थ्रेसर मशीन चलाना, ट्रक ड्राइवर का काम करना और कुछ परिवार की अपनी जमीन है जिस पर वह खेती करते हैं. महिलाएं घर के काम के साथ साथ खेती के काम में भी पुरुषों का हाथ बटाती हैं. गांव में पक्की सड़क का अभाव होने के कारण आवागमन की सुविधा भी सुलभ नहीं है.गांव में बालिका शिक्षा की चिंताजनक स्थिति के बारे में 35 वर्षीय अब्बास बताते हैं कि गांव में केवल 8वीं तक ही स्कूल है. इससे आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लड़कियों को 10 किमी दूर अन्य गांव में जाना पड़ेगा. लेकिन आवागमन की सुविधाओं का अभाव, लड़कियों के साथ होने वाले छेड़छाड़ का डर और बालिका शिक्षा के प्रति समाज की सीमित सोच के कारण अभिभावक लड़कियों को इतनी दूर भेजने से इंकार कर देते हैं. जिससे चाह कर भी कोई लड़की 9वीं या 10वीं की शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाती है. वह बताते हैं कि गांव में 8वीं तक जो सरकारी विद्यालय संचालित हैं उनमें भी सुविधाओं का घोर अभाव है. प्रधानाध्यापक सहित केवल 4 शिक्षकों के भरोसे यह पूरा स्कूल चल रहा है. इसके अतिरिक्त स्कूल में न तो पीने के साफ पानी की व्यवस्था है और न ही छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय की उचित व्यवस्था है.नाम नहीं बताने की शर्त पर एक छात्रा की मां बताती है कि उनकी बेटी कई बार स्कूल में सुविधाओं की कमी की शिकायत कर चुकी है. लेकिन वह आर्थिक रूप से इतनी सशक्त नहीं हैं कि अपनी बेटी का एडमिशन गांव से बाहर या किसी निजी शिक्षण संस्थान में करा सकें. वह बताती है कि स्कूल में कोई महिला शिक्षिका के नहीं होने से लड़कियों को अक्सर माहवारी के दौरान समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

संक्षिप्त खबरें

पोखर में डूबने से दो बच्चों की हुई मौत

ढाका,(पूर्वी चम्पारण) कुंडवा चैनपुर थाना क्षेत्र के दोस्तियां गांव के पोखर से दो बच्चे का शव बुधवार को बरामद किया गया। जानकारी के अनुसार मंगलवार की शाम से ही दोनों बच्चे लापता थे। जिसे बुधवार को ग्रामीणों ने देखा तो इसकी सूचना परिजनों को दी जिसके बाद पोखर से दोनों बच्चे का शव बरामद किया गया। दोनो मृतक की पहचान दोस्तिया गांव निवासी साबिर अख्तर के आठ वर्षीय पुत्र मो. अयान और जाहिद अख्तर के दस वर्षीय पुत्र मो. राशिद के रूप में हुई है। इधर इस अहलोनी घटना से परिजनों का रो- रोकर बुरा हाल है।पूरा गांव में मातमी सन्नाटा है। थानाध्यक्ष राकेश कुमार राय ने बताया की पुलिस घटनास्थल पर पहुंच जानकारी ली।और दोनों शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

तीयर नदी में डूबने से 35 वर्षीय युवक की मौत

छपरा। बनकटवा पु च लखौरा थाना क्षेत्र के तीयर नदी में डूबने से एक 35 वर्षीय युवक की मौत बुधवार को गोलापकरीया गाँव के निकट मछली पकड़ने के दौरान हो गया उक्त मृतक की पहचान निमोईया गाँव निवासी बिरचन मुखिया पिता शंकर मुखिया के रूप में किया गया मौके पर लखौरा पुलिस ने पहुंच कर शव को अपने अभिरक्षा में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोतिहारी भेज दिया गया जानकारी लखौरा थाना अध्यक्ष पंकज कुमार ने दी

कदाचार मुक्त परीक्षा हमारी प्राथमिकता : कुलपति

छपरा सदर । जयप्रकाश विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर सत्र 2021-23 द्वितीय सेमेस्टर तथा सत्र 2020-22 तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा बुधवार को विश्वविद्यालय परिसर स्थित मल्टीपर्पस परीक्षा भवन में प्रारंभ हुई। पहले दिन पहली पाली में द्वितीय सेमेस्टर के पेपर सीसी 5 एवं द्वितीय पाली में तृतीय सेमेस्टर के पेपर सीसी 10 की सभी विषयों की परीक्षा कदाचारमुक्त एवं शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हुई। पहले दिन की परीक्षा में कुल 8 परीक्षार्थियों को नकल के आरोप में निष्कासित किया गया। कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने प्रथम पाली की परीक्षा का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी कक्षों में घूम-घूमकर परीक्षा का जायजा लिया और केंद्राधीक्षक एवं वीक्षकों को आवश्यक निर्देश दिए। कुलपति ने कहा कि कदाचारमुक्त परीक्षा उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि ससमय परीक्षाफल प्रकाशन का संकल्प लिया गया है जिसे हर हाल में पूर्ण किया जाएगा। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. रणजीत कुमार और समायोजक, महाविद्यालय विकास परिषद प्रो. हरिश्चंद्र भी उपस्थित थे।

शराब मामले में आजीवन कारावास

छपरा कोर्ट। विशेष अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश उत्पाद अतुल वीर सिंह ने रसूलपुर थाना कांड संख्या 92/20 के उत्पाद सत्र संख्या 195 /22 के अभियुक्त राज किशोर पांडे को अंदर धारा 304(') भा द वी के अन्तर्गत आजीवन कारावास और शराब पीने के आरोप में एक माह की सजा सुनाई है। बताते चलें कि अभियुक्त ने शराब पिकर 17 अगस्त 2020 को अपने चाचा रसुलपुर थाना के बलिया निवासी देवनाथ पांडे को मामुली विवाद पर चाकू मारकर हत्या कर दिया था।पर अपने चाचा देवनाथ पांडे के पेट में चाकू मार कर घायल कर दिया था जख्मी कर दिया और इलाज के क्रम में चाचा का निधन 1 सितंबर 2020 को पटना मे हो गया।अभियोजन की ओर से विशेष लोक अभियोजक उत्पाद सर्वजीत ओझा तथा उनके सहायक अनिल कुमार पांडे तथा सुसृति एवं कृति ने भी सरकार का पक्ष न्यायालय में रखा।बचाव पक्ष की ओर से विधिक प्राधिकार की अधिवक्ता सुनीता कुमारी ने न्यायालय में पक्ष रखा।

बिहार सरकार के पीएचईडी मंत्री निरज सिंह बबलू का घोड़ासहन में स्वागत

घोड़ासहन बिहार सरकार के पीएचईडी मंत्री नीरज सिंह बबलू का स्वागत घोड़ासहन के कैलाश मार्केट में भाजपा के वरिष्ठ नेता व शिवहर लोकसभा के एनडीए के संयोजक प्रभु नारायण के द्वारा किया गया। मौके पर मंत्री श्री सिंह ने कहा कि शिवहर लोकसभा व पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र में भ्रमण पर निकले है। इन दोनों क्षेत्रों की जनता मन बना लिया है कि देश में तीसरी बार नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाना है। डबल इंजन की सरकार में तेज गति से विकास हो रहा है। देश व बिहार की जनता प्रचण्ड जनादेश देने वाली है। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष दिलिप सर्राफ ,अभय सिंह, मन्टू सिंह, आयुष नारायण, राम एकबाल यादव, नरेन्द्र साह, रामाकान्त गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

सारण लोक सभा क्षेत्र के लिए इवीएम का द्वितीय रैंडमाइजेशन संपन्न

समान्य प्रेक्षक और प्रत्याशियों/राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। लोक सभा आम चुनाव को लेकर मंगलवार को जिला सूचना विज्ञान कार्यालय में सारण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए इवीएम का द्वितीय रैंडमाइजेशन किया गया। इस अवसर पर समान्य प्रेक्षक गुरप्रीत सिंह बत्रा, जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी अमन समीर, आरओ सह एडीएम एसएस पांडेय, डीडीसी प्रियंका रानी, नगर आयुक्त सुमित कुमार, सोनपुर एसडीएम कुमार निशांत विवेक, सदर एसडीएम संजय कुमार राय, उप निर्वाचन पदाधिकारी जावेद एकबाल, डीएमडब्लूओ रवि प्रकाश, डीसीओ हरिशंकर कुमार, डीपीआरओ रविन्द्र कुमार, डीआईओ श्री तारणी कुमार समेत निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थी या उनके प्रतिनिधि उपस्थित थे। प्रेक्षक श्री सिंह ने अभ्यर्थियों और प्रतिनिधियों से सफल और शांतिपूर्ण मतदान आयोजन में सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि किसी भी छोटी-बड़ी बात से आरओ को अवगत कराएं। प्रशासन बिल्कुल निष्पक्षता से कार्य के प्रति कृतसंकल्पित है। जिला निर्वाचन पदाधिकारी श्री समीर ने रैंडमाइजेशन की पूरी प्रक्रिया को विस्तार से समझाते हुए बताया कि रैंडमाइजेशन ऐसी प्रक्रिया है जिससे इवीएम के मामले में पारदर्शिता सुनिश्चित होती है। प्रथम रेंडमाइजेशन में इवीएम को विधान सभा वार एलॉट किया गया था। वहीं दूसरे रैंडमाइजेशन से मशीनों को बूथ वार चिन्हित किया जाएगा। इस पूरी प्रक्रिया में कोई मानवीय या मैनुअल कार्य नहीं होता। इसमें किसी को जानकारी नहीं होती कि कौन सी मशीन किस किस बूथ पर जाएगी और न ही इसके द्वारा निर्मित सूची से छेड़ छाड़ की जा सकती है। प्रथम रैंडमाइजेशन के बाद मशीनों को पृथक और स्कैन कर संबंधित विधान सभा के डिस्पैच सेंटर पर भेज दिया गया है। अब उनको बूथवार चिन्हित कर कमिशनिंग का कार्य किया जाएगा। चुनाव आयोग इवीएम की पारदर्शिता को लेकर अति संवेदनशील है। उन्होंने कहा कि इवीएम के प्रत्येक मूवमेंट की सूचना सभी राजनीतिक दलों को दी जाती है। उनकी उपस्थिति में ही सारे कार्य किए जाते हैं ताकि पारदर्शिता बनी रहे। साथ ही उनके साथ सभी सूचियां साझा की जाती हैं। मशीनों के कमिशनिंग या वोटिंग के समय खराब होने वाली मशीनों का विवरण भी तत्काल आप से शेयर किया जाएगा। सभी प्रत्याशियों से भी उम्मीद है कि प्रत्येक डिस्पैच सेंटर पर स्वयं या अपने प्राधिकृत प्रतिनिधि के माध्यम से उपस्थिति सुनिश्चित कर कार्यों का अवलोकन करेंगे। सामान्य प्रेक्षक के आदेश पर चुनाव आयोग के ईएमएस सिस्टम पर रैंडमाइजेशन प्रारम्भ किया गया। मढ़ौरा के 293 बूथ के लिए 368 बीयू, 369 सीयू और 400 वीवीपैट आवंटित किया गया। जबकि छपरा के 331 बूथ के लिए 415 बीयू, 416 सीयू और 450 वीवीपैट, गरखा के 305 बूथ के लिए 383 बीयू, 384 सीयू और 416 वीवीपैट, अमनौर के 275 बूथ के लिए 347 बीयू, 348 सीयू और 376 वीवीपैट, परसा के 280 बूथ के लिए 353 बीयू, 368 सीयू और 399 वीवीपैट तथा सोनपुर के 292 बूथ के लिए 367 बीयू, 368 सीयू और 399 वीवीपैट अलॉट किए गए। रैंडमाइज्ड मशीनों की सूची के प्रत्येक पृष्ठ पर ऑब्जर्वर, जिला निर्वाचन पदाधिकारी, आरओ, इवीएम के वरीय प्रभारी के साथ ही सभी प्रत्याशियों या उनके प्राधिकृत प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए। डीएम ने बताया कि हस्ताक्षरित प्रति जिला और आयोग के वेबसाइट पर भी अपलोड कर दी जाएगी। जिसे कोई भी देख सकेगा। वहीं उन्होंने सभी प्रत्याशियों को रैंडमाइज्ड मशीनों की सूची और बूथ लिस्ट की हार्ड कॉपी उपलब्ध कराने का निदेश दिया।

प्रो. किरण बाला का प्रोफेसर के रूप में प्रोन्नति

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। रक्सौल निवासी और प्रख्यात शिक्षाविद् ठाकुरराम बहुमुखी क्यामपस, बीरगंज, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल के वनस्पति विज्ञान में कार्यरत प्रो. किरण बाला त्रिभुवन विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान में प्रोफेसर के पद पर प्रोन्नति प्राप्त की है। प्रो. बाला उस विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान विभाग में 1989 से कार्यरत है। यह गर्व की बात है। विद्यार्थियों के बीच अतिलोकप्रिय, कुशल प्राध्यापक और सख़्त अनुशासन इनकी विशेषता है। प्रो. बाला पर्यावरणविद् और वक्ता भी है। मैट्रिक से लेकर स्नातकोत्तर में लगातार प्रथम श्रेणी प्राप्त किया है। बिहार विश्वविद्यालय ,मुजफ़्फ़रपुर वनस्पति विज्ञान में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान, गोल्ड मेडल प्राप्त प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया था। इन्हें ह्लइमीनेंट साइंटिस्ट अवार्ड-2020 भी प्राप्त हो चुका है। इनके शोधपत्र कई राज्यों एवं नेपाल में प्रस्तुत हुआ है, साथ ही इनके पीएचडी का भी कृषि विकास में विशेष स्थान प्राप्त है। सीमांचल क्षेत्र के शिक्षा क्षेत्र में इनका विशेष स्थान प्राप्त है। देश विदेश में इनके शिष्य आज भी इनसे जुड़े है, जो गुरु शिष्य के प्रगाढ़ संबंध को दशार्ता है। इनकी प्रोन्नति पर बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अनिल कुमार सिन्हा, प्रो. चंद्रमा सिंह, प्रो. राजकिशोर सिंह, प्रो. पंकज कुमार श्रीवास्तव, प्रो. रामाशंकर प्रसाद, प्रो. जगदीश गुप्ता, प्रो. मनीष दुबे, प्रो. दिनेश पांडेय, सामाजिक कार्यकर्ता स्वच्छता के सिपाही सुरेश कुमार, गुड्डू सिंह, पिंटू गिरी, दुर्गेश साह, प्रो. धनंजय श्रीवास्तव, प्रो. शोभा बनर्जी, ई. जितेंद्र कुमार, राजकिशोर राय उर्फ.भगत जी, राकेश कुशवाहा, नितिन कुमार, चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अरुण गुप्ता, आलोक श्रीवास्तव, गणेश धनोठिया, उदय सिंह, संतोष छात्रवंशी, समरजीत कुमार आदि ने प्रो. बाला को बधाई देते हुए कहा है कि उनके प्रोफेसर बनने से रक्सौल का शिक्षा क्षेत्र गौरवान्वित हुआ है। सीमांचल क्षेत्र की पहली महिला है जिन्हें यह स्थान मिला है। एक कुशल गृहिणी के साथ अध्यात्म के प्रति त्यो पूर्णरूपेण समर्पित प्रतिदिन कम से कम दो घंटे तक स्वध्याय करना इनकी विशेष हॉबी है। देश विदेश में इनके शिष्य आज भी जुड़े हैं। गुरुपूर्णिमा के दिन सुबह में गुआना, अफ़्रीकी देश से गुरुपूर्णिमा के दिन प्रो. अब्दुल अंसारी का फोन आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आता है। उन्हें एक आदर्श शिक्षिका बताते हुए बधाई एवं शुभकामनाएँ दी है। इस उपलब्धि पर सीमांचल क्षेत्र विशेषकर रक्सौल आज गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

रामकृष्ण मिशन आश्रम सभागार में माना रेड क्रॉस दिवस

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा : विश्व रेड क्रॉस दिवस के अवसर पर रेड क्रॉस सोसाइटी सारण द्वारा रामकृष्ण मिशन आश्रम के सभागार में एक विशेष आयोजन किया गया ।जिसमें मुख्य अतिथि स्वामी अतिदेवानंद महाराज उपस्थित हुए ।रेड क्रॉस सोसाइटी सारण के सभी सदस्य एवं रेड क्रॉस युवा इकाई के सदस्य कार्यक्रम में शामिल हुए ।मंच संचालन रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्य डॉ० शहजाद आलम ने किया ।रेडक्रॉस के लिए इस वर्ष का थीम था ह्लमानवता को जीवित रखनाह्व इस थीम पर विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार रखे ।रेड क्रॉस सोसाइटी के उपाध्यक्ष डॉ एच० के० वर्मा ने रेड क्रॉस के मूल सिद्धांत की चर्चा की तथा उन्होंने कहा कि हम अपने पड़ोसी से प्रेम रख हम सभी प्रेम संदेश पूरे विश्व में फैलाने का प्रयत्न करें। रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्य जितेंद्र कुमार ने युवाओं को कई उदाहरण देकर सेवा भाव एवं शांति के बारे में संदेश दिया। जिला सचिव जीनत मसीह ने रेड क्रॉस सोसाइटी के इतिहास एवं जनक हेनरी डूनन्त के जीवनी पर प्रकाश डाला तथा उन्होंने अपने संबोधन में नैतिकता पर बल दिया एवं रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा किए गए कार्य कलापो का वर्णन किया ।रेड क्रॉस सोसाइटी के युवा इकाई के प्रभारी भुनेश्वर कुमार ने युवा इकाई के कार्यों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। मुख्य अतिथि स्वामी अतिदेवानंद महाराज ने रेड क्रॉस के मूल सिद्धांतों के विषय में जानकारी देते हुए सभी स्वयंसेवी(रेड क्रॉस) की प्रशंसा करते हुए उन्हें सेवा करने के लिए प्रेरित किया । धन्यवाद ज्ञापन तथा पुर्व में कराए गए निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता का पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरण संस्था के सदस्य डॉ० सुरेश प्रसाद सिंह के द्वारा कराया गया ।इस सभा में रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्य डॉ० शशिकांत परासर,सतेन्द्र श्रीवास्तव,मुन्नी कुमारी,संजीव चौधरी, अमरेश मिश्रा,नुसरत,श्रुति आदि उपस्थित थे।

मेन रोड स्थित जर्जर ताड़ के पेड़ों को हटाने का काम शुरू

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। नगर परिषद रक्सौल द्वारा मेन रोड पर स्थित सूखे और जर्जर ताड़ के पेड़ों को हटाए जाने का कार्य शुरू कर दिया गया है। बीते 12 अप्रैल को शिक्षाविद डॉ. स्वयंभू शलभ ने इन जर्जर ताड़ के पेड़ों को सुरक्षित तरीके से हटाये जाने का आग्रह नगर परिषद सभापति व कार्यपालक पदाधिकारी से किया था, जिस पर संज्ञान लेकर इन पेड़ों को सुरक्षित तरीके से हटाने की व्यवस्था बनाई गई। नगर परिषद जेई राजकुमार राय ने बताया कि 10 सूखे ताड़ के पेड़ों को हटाने का निर्देश मिला है जिनमें 4 हटा दिए गए। बाकी दो तीन दिन में हटा दिए जाएंगे। मौके पर नप उपसभापति प्रतिनिधि राकेश कुशवाहा, डॉ. स्वयंभू शलभ, जेई राजकुमार राय समेत नप कर्मी मौजूद थे। विदित है कि रक्सौल अनुमंडलीय अस्पताल से सोना टॉकीज के बीच करीब एक दर्जन ताड़ के पेड़ मौजूद है, जिनमें अधिकांश सूखकर ठूंठ बन चुके है, जो आँधी में सड़क पर या किसी के घर पर गिर सकते हैं। इनके सूखे हुए पत्ते बिजली के तारों पर गिरकर अक्सर पावर ब्रेकडाउन का कारण बनते हैं। पूर्व में आईडीबीआई बैंक के समीप और नगर परिषद कार्यालय के समीप ताड़ के पेड़ जड़ से टूट कर गिर चुके हैं। इन जर्जर पेड़ों के कारण आसपास के मकान में रहने वालों, आम नागरिकों और सड़क पर चलनेवाले सवारी साधनों के आगे हर समय खतरा मंडराता रहता है। इस कार्य को शुरू किए जाने से लोगों ने राहत की सांस ली है।

इस बार पश्चिम चंपारण लोकसभा की जनता सिर्फ बदलाव चाहती है: मदन मोहन तिवारी

प्रात : किरण, संवाददाता

सुगौली : लोकसभा चुनाव के चुनाव के दिन जैसे जैसे करीब होते जा रहे है वही चुनाव में मतदाताओं के बीच प्रत्याशी लगातार भ्रमण करते हुए दिखाई पड़ रहे है। इंडिया गठबंधन के कांग्रेस के पश्चिम चंपारण के प्रत्याशी मदन मोहन तिवारी सुगौली बाजार सहित नगर के कई क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए धर्मेंद्र प्रसाद नायक के आवास पर लोगो से वोट की अपील ।करते हुए बताया की इस बार का वोट देश हित और संविधान बचाने की लड़ाई है और पश्चिम लोकसभा में इस बार की जनता बदलाव और वंशवाद को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है। आम लोग भाजपा के जुमले से परेशान है देश में इस बार चुनाव संविधान बचाने की है।इस बार पश्चिम लोकसभा चुनाव का परिणाम जनता के पक्ष में इंडिया गठबंधन का होगा। मौके पर राजद के सुगौली विधायक शशि भूषण सिंह ने कहा की इस बार लोकसभा चुनाव में मतदाता अपने मतो का प्रयोग बदलाव के लिए करेगी जनता जुमलोबाजी की सरकार निजात चाहती है। कांग्रेस नेता रघुनाथ प्रसाद गुप्ता ने कहा की हमारे महात्मा गांधी भी गुजरात वासी थे मगर उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला देश को एक सूत्र में शांति और अमन का पाठ पढ़ाया वही हमारे हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी गुजरात से आते है वे झूठ के सिवा कुछ बोलते ही नहीं देश में सिर्फ हिंदू मुसलमान के अलावा इनके पास कोई और बात है ही नही। देश को गुमराही के रास्ते पर ले जा रहे है ।मौके पर राजद युवा के जिला अध्यक्ष असलम आलम सुगौली कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष अजय कुमार झा राजद प्रखंड अध्यक्ष ताराचंद यादव अमिरका यादव जेपी यादव बैधनाथ त्यागी राधेश्याम शर्मा ओजैर आलम पारस साह रामाश्रय पासवान शेख अदालत ध्रुव सर्राफ राजेश कुमार भोला साह जगत पासवान मो अनिसुरहमान चंदकिशोर यादव दीपू मिश्रा अफरोज आलम तूफान मिया सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

पूर्व राज्यपाल गंगा प्रसाद का रक्सौल मे हुआ स्वागत

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। चौरसिया, बरई समाज सेवा संघ, रक्सौल के अध्यक्ष शम्भु प्रसाद चौरसिया के नेतृत्व मे सिक्किम के पूर्व राज्यपाल बाबू गंगा प्रसाद चौरसिया का एक दिवसीय कार्यक्रम के तहत रक्सौल की पावन भूमि के आगमन पर रक्सौल कोईरिया टोला, नहर चौक पर सैकड़ों स्थानीय गणमान्य स्वजातीय के साथ ग्राम पंचायत राज हरदिया के सरपंच लक्ष्मण प्रसाद चौरसिया, समाजसेवी अजय कुमार चौरसिया, शिवम चौरसिया, हदेश प्रसाद चौरसिया, सुरेन्द्र चौरसिया, शुकुल जी चौरसिया, डॉ. कुमार मनीष चौरसिया, ई.निशांत प्रवीण चौरसिया, विंध्याचल चौरसिया, नवल किशोर चौरसिया, कृष्ण मोहन चौरसिया, सिंहासन प्रसाद चौरसिया, वार्ड पार्षद पति छोटेलाल चौरसिया तथा रिची रोहन आदि ने पुष्प माला पहनाकर स्वागत व अभिनंदन किया। जिसकी जानकारी अध्यक्ष शम्भु चौरसिया ने देते हुए बताया कि महामहिम पूर्व राज्यपाल बाबू गंगा प्रसाद चौरसिया जी का रक्सौल के स्वजातीय बंधुओं से अंतरंग स्नेह व प्यार वर्षों से प्रगाढ़ रहा है। प्रत्येक वर्ष किसी न किसी अवसर पर रक्सौल की पावन भूमि पर महामहिम जी के आगमन से यहां के स्वजनों मे अपनापन व अटूट स्नेहिल भाव के रूप आशिर्वाद प्राप्त होता रहता है। इसी यात्रा क्रम मे पूर्व राज्यपाल जी ने बेतिया लोकसभा संसदीय क्षेत्र रक्सौल के विभिन्न ग्रामीण इलाकों हरदिया कोठी, रतनपुर, गम्हरिया, भवानीपुर, भैरवा टोला, श्यामपुर, आदापुर,बेलदरवा आदि मे जाकर हजारों स्वजातीय बंधुओं से औपचारिक मुलाकात कर समाजिक क्रियाकलापों तथा राष्ट्र हित मे मतदान करने आह्वान किया। जहां सभी स्वजनों ने गंभीरता से वर्तमान राजनीतिक घटनाक्रमों व समाजिक कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। आदापुर के सैकड़ों लोगों ने रात्रि मे महामहिम जी के साथ एक बैठक कर अपनी अपनी बातों को साझा किया और राष्ट्र हित मे अधिक से अधिक मतदान करने की प्रतिबद्धता से अवगत कराया। वहीं श्यामपुर चौक अवस्थित बबलू चौरसिया के आवास पर संध्या नास्ता तथा श्यामपुर गांव मे मुखिया पति रामचन्द्र चौरसिया व चन्द्र मोहन चौरसिया के नेतृत्व मे सैंकडों लोगों ने पूर्व राज्यपाल जी का स्वागत व अभिनंदन किया तथा आदापुर बाजार मे रात्रि भोजन स्व. अनुठा लाल चौरसिया के आवास पर प्रबंध किया गया। जहां बेलदरवा के पूर्व मुखिया आलोक चौरसिया, सुबोध चौरसिया, बच्चु चौरसिया, विजय कुमार चौरसिया, डॉ.सुजीत चौरसिया आदि मौजूद रहे। साथ ही रक्सौल के आर्य समाज सेवा सदन मे प्रोफेसर रामाशंकर प्रसाद, समाजसेवी भरत प्रसाद गुप्ता,मनोज कुमार चौरसिया, विपिन चौरसिया, विक्की चौरसिया,आयुष चौरसिया आदि के साथ साथ सैकड़ों वैश्य समाज के प्रतिनिधियों ने महामहिम जी के विचारों को शांतिपूर्ण ढंग से श्र्वन किया। वहीं मित्र राष्ट्र नेपाल के सांसद सह पूर्व मंत्री अजय चौरसिया ने बाबू गंगा प्रसाद चौरसिया जी से औपचारिक व स्नेहिल शिष्टाचार मुलाकात कर कुशल-क्षेम जाना और ईश्वर से दिघार्यु होने की कामना किया। पूर्व राज्यपाल ने अपनी सुखद यात्रा को सफल व यादगार बनाने के लिए सभी लोगों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि पटना प्रस्थान से लेकर रक्सौल से वापसी तक कि यात्रा मे प्रशासनिक अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिला।

हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस 40 वर्षों बाद अपने गुरु से मिल, हो गए विभोर

● अंग बस्त्र व पुष्पगुच्छ देकर गुरु को किया सम्मानित, लिया आशीर्वाद

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। वीरगंज नेपाल स्थित हाईकोर्ट के चिफ जस्टिस रत्न बहादुर बागचंद मोतिहारी पहुँच अपने गुरू से मिल उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। चालिस बर्ष पहले ब्रृज किशोर श्रीवास्तव ने हाईस्कूल में उन्हें पढाया था। अंग्रेजी के प्रसिद्व शिक्षक श्री श्रीवास्तव ने पश्चिम नेपाल के धनगढी शहर स्थित पंचोदय सेकेण्डरी स्कूल में अपने विद्यार्थी रत्न बहादुर बागचन्द को पढ़ाया था। नेपाल के न्यायिक सेवा में रहकर अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाये हुए चिफ जस्टिस रत्न बहादुर का अपने जीवन में श्रीवास्तव सर के प्रति अटूट प्रेम व स्नेह रहा। पिछले तीन दशक तक इस गुरु व शिष्य का मुलाकात नहीं हुई थी। अपने वीरगंज प्रवास के क्रम में चिफ जस्टिस ने अपने शिक्षक को फिर से तलाशना शुरू किया। इधर श्रीवास्तव सर सेवा निवृत्त होकर चम्पारण के मोतिहारी में रह रहे थे। आखिरकार गुरु शिष्य का मिलन हो ही गया। मोतिहारी में ब्रिज किशोर श्रीवास्तव सर को चिफ जस्टिस रत्न बहादुर बागचन्द ने अंग बस्त्र व पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया और गुरु का आशीर्वाद प्राप्त किया। जब इस बात की जानकारी आसपास के लोगों को मिला तो वे भी गुरु शिष्य का अटूट प्रेम देखने पहुचे व गुरु के प्रति समर्पण भाव को देख भाव विभोर हो गए। नेपाल सरकार के इतने उच्चे पद पर कार्यरत रहकर भी चिफ जस्टिस की विनम्रता और गुरु भक्ति का उपस्थित लोगों ने काफी सराहना किया। नेपाल भारत जन सम्बन्ध की यही विशेषता है कि लोग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। नेपाल के शैक्षिक उन्नयन में भारतीय नागरिकों का अमूल्य योगदान बताया जाता है।

रोटरी सारण ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। पहले मतदान,फिर जलपान इस युक्ति को चरितार्थ करने हेतु शहर की अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्था रोटरी सारण के द्वारा शहर में आज भव्य बाइक रैली निकाली गई ।इस रैली में सभी सदस्यों ने अपनी भागीदारी बखूबी निभाई ।इस रैली की सफलता के लिए आज सुबह 6:30 से सभी सदस्य काफी उत्सुक थे ।सभी सदस्य अपने हाथों में छोटे-छोटे स्लोगन लिखे हुए तख्तियां लिए हुए थे ।जिस पर लिखा हुआ था,लोकतंत्र की सशक्त तस्वीर,उंगली पर नीली लकीर।,जागरूक समाज की पहचान,शत प्रतिशत मतदान। इत्यादि बहुत सारे स्लोगन से लिखे हुए थे ।रैली शहर के राजेंद्र स्टेडियम से निकलकर थाना चौक,साहेबगंज चौक,मौना चौक होते हुए बाजार समिति,उमा नगर,प्रभुनाथ नगर,दहियावा टोला,जोगणिया कोठी,नगर पालिका चौक,राजेंद्र सरोवर होते हुए राजेंद्र स्टेडियम में वापस आकर समाप्त हुई ।इस खूबसूरत कार्यक्रम में जिला के प्रशासनिक अधिकारी भी शामिल रहे ।टीम को संबोधित करते हुए क्लब अध्यक्ष प्रदीप कुमार ने बताया कि एक भारतीय होने के नाते हमारा दायित्व है हम जरूर अपना मत का प्रयोग करें और एक सशक्त मजबूत सरकार का गठन कर राष्ट्र को समर्पित करें ।कार्यक्रम के संयोजक पूर्व अध्यक्ष राजेश फैशन रहे ।उनके साथ पूर्व अध्यक्ष पंकज कुमार, राजेश जायसवाल, मनोज गुप्ता, दिनेश कुमार गुप्ता, दिलीप पोद्दार, अशोक गुप्ता, उदय गुप्ता, अजय प्रसाद, विजय रंजन, मुकेश गुप्ता, अनिल कुमार पप्पू, शंभू गुप्ता, बासुकी गुप्ता एवं अन्य बहुत सारे सदस्य उपस्थित रहे।

कॉलेज, में मनाया गया अंतराष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। सेहत केंद्र, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रेड रिबन क्लब राजेंद्र कॉलेज, छपरा के संयुक्त तत्वावधान में आज दिनांक 8 मई 2024 को अंतराष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस के उपलक्ष्य पर एक सेहत संवाद का आयोजन किया गया। संवाद का विषय था -ह्वविश्व में थैलेसीमिया के वर्तमान स्थिति लक्षण एवं रोकथाम और रक्तदान का महत्वह्व। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार श्रीवास्तव ने किया और अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि यह दिवस आनुवंशिक विकारों से पीड़ित रोगियों के संघर्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने सहित थैलेसीमिया के बारे में समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि थैलेसीमिया एक आनुवंशिक विकार है जो माता-पिता से युवा पीढ़ी में रोग स्थानांतरित करता है। मंच संचालन करते हुए सेहत केंद्र की नोडल पदाधिकारी डॉ जया कुमारी पांडेय ने इस वर्ष की थीम ह्लजीवन को सशक्त बनाना, प्रगति को अपनाना: सभी के लिए समान और सुलभ थैलेसीमिया उपचारह्व, पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि पहली बार साल 1994 में थैलेसीमिया इंटरनेशनल फेडरेशन (टीआईएफ) द्वारा अंतरराष्ट्रीय मनाया गया था। तत्पश्चात सेहत केंद्र के पियर एजुकेटर रूपेश कुमार निषाद, अंशु कुमार, रॉबिन राजपूत, जन्नत अफरीन एवम शिवम मिश्रा ने विस्तार से थैलेसीमिया के प्रकार, लक्षणों, कारणों एवम उपचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला। पियर एजुकेटर ने कहा कि दुर्भाग्य से, थैलेसीमिया का अभी तक कोई इलाज नहीं है, लेकिन रक्त आधान, अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण और जीन थेरेपी जैसे उपचार मौजूद हैं। थैलेसीमिया का शीघ्र पता लगाना और इसे अच्छी तरह से प्रबंधित करना इस विकार से पीड़ित लोगों को बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. देवेश रंजन ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ. अनुपम कुमार सिंह ने छात्रों से इस दिवस की सार्थकता हेतु अपने आस पास के समुदाय को इस के बारे में जागरूक करने की अपील की साथ ही रक्तदान करने हेतु प्रेरित किया ।इस अवसर पर सचिन कुमार चौरसिया, आशीष, मुस्कान, रोहित, रोशनी, मनीष आदि ने अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में छपरा वासियों ने निकाली मतदाता जागरूकता साइकिल रैली

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। लोकसभा आम निर्वाचन-2024 के अवसर पर अधिक से अधिक मतदाताओं की सहभागिता सुनिश्चित कर मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिये स्वीप कोषांग के माध्यम से पूरे सारण जिले में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का लगातार आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में बुधवार को जिलाधिकारी अमन समीर एवं पुलिस अधीक्षक डॉ० गौरव मंगला के नेतृत्व में छपरा वासियों ने मतदाता जागरूकता साइकिल रैली निकाली। इस रैली में समाज के विभिन्न वर्गों एवं संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने सैकड़ो की संख्या में भाग लिया। मतदाता जागरूकता साइकिल रैली राजेन्द्र स्टेडियम छपरा से प्रारम्भ होकर थाना चौक-साहेबगंज-प्रधान डाकघर-मौना चौक- साढा ढाला-प्रभुनाथ नागर-शक्ति नगर- ओवर ब्रिज- कचहरी स्टेशन- जोगिनिया कोठी- नगर पालिका चौक- राजेन्द्र सरोवर- गोपेश्वर नगर- अनुमंडल पदाधिकारी आवास होते हुये पुनः राजेन्द्र स्टेडियम में समाप्त हुई। इस रैली में एनसीसी, स्काउट एंड गाइड, रोटरी, लायंस क्लब, रोटी बैंक, विभिन्न कोचिंग संस्थान, विद्यालय एवं कॉलेज के प्रतिनिधियों/छात्र/छात्राओं के साथ साथ अन्य स्थानीय लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। रैली में मतदाता जागरूकता से संम्बन्धित स्लोगन की तख्तियों तथा मतदाता जागरूकता गीत के माध्यम से छपरा एवं संपूर्ण सारण जिला वासियों को बढ़ चढ़ कर अपने मताधिकार के उपयोग हेतु प्रेरित किया गया। रैली को स्वीप कोषांग के वरीय प्रभारी -सह- उपविकास आयुक्त श्रीमती प्रियंका रानी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर नगर आयुक्त, अपर समाहर्त्ता, अपर समाहर्त्ता लोकशिकायत सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी एवं स्वीप कोषांग के सभी नोडल पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

विश्व थैलेसीमिया दिवस के मौके पर लियो क्लब छपरा टाउन ने लगाया रक्तदान शिविर

प्रात : किरण, संवाददाता

छपराः अंतरराष्ट्रीय स्वयं सेवी संस्था लियो क्लब छपरा टाउन के द्वारा ह्यवर्ल्ड थैलेसीमिया डेह्न के मौके पर छपरा सदर अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमे काफी संख्या में युवा युवती ने भाग लिया। लायंस क्लब के पुर्व जिलापाल वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉ एस के पाण्डेय ने कहा की थैलेसीमिया एक ऐसी बीमारी है जिसके बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है। इस बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए हर साल 8 मई को ह्यवर्ल्ड थैलेसीमिया डेह्न मनाया जाता है। थैलेसीमिया एक जेनेटिक ब्लड डिसऑर्डर है जिसमें शरीर में हीमोग्लोबिन का स्तर असामान्य तरीके से प्रभावित होने लगता है। इस वजह से शरीर में धीरे-धीरे खून की कमी होने लगती है। वही लियो अध्यक्ष आशुतोष पाण्डेय के देखरेख में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। लियो मनीष मनी ने कहा की थैलेसीमिया एक गंभीर बीमारी है, इस बीमारी से ग्रसित मरीज को महीने में दो बार रक्त की आवश्यकता कभी कभी हो जाती है जब भी ब्लड बैंक के माध्यम से जानकारी मिलती है हमारे लियो क्लब सदस्यो के द्वारा हमेशा सहयोग करने की प्रयास किया जाता है। इस मौके लायंस अध्यक्ष गोविंद सोनी ने रक्तदान शिविर में उपस्थित होकर सभी रक्तदाताओ का हौसला बढ़ाया और सभी को रक्तदान करने की अपील किया। उक्त मौके पर लियो अमित सोनी, रोमी कश्यप, खुशबू कुमारी, रोशनी परासर, सर्वेश रंजन आदि मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

जिला विधिज्ञ संघ ने किया सम्मानित

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद के एडीजे रत्नेश्वर कुमार सिंह को जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद के अध्यक्ष विजय कुमार पाण्डेय और महासचिव जगनरायण सिंह ने शाल और बुके देकर सम्मानित किया। उसके सुखद भविष्य की कामना की। जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद के अध्यक्ष विजय कुमार पाण्डेय ने कहा कि एडीजे रत्नेश्वर कुमार सिंह अपने न्यायिक कार्यों के प्रति पूरी तरह से निष्ठावान रहे। उनके व्यवहार कुशलता और सादगी प्रेरक है। अपने 41 माह के कार्यकाल में बहुत सारे लम्बित मामलों का निष्पादन किया है जो सराहनीय है। महासचिव जगनरायण सिंह ने कहा कि बार और बेंच में मधुर सम्बन्ध में उनका अमूल्य योगदान रहा है।

जहां तीर्थ यात्री करने जाते थे पिंडदान, वह धर्मशाला आज हुआ वीरान

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित जम्होर में अवस्थित पुनपुन बटाने संगम तट के समीप विष्णु धाम से कुछ ही दूरी पर अवस्थित अनुग्रह नारायण रोड घाट स्टेशन के समीप अवस्थित धर्मशाला की स्थिति काफी जर्जर हो चुकी है। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने अवलोकन करते हुए बताया कि इस धर्मशाला की स्थापना राय बहादुर सूरजमल जी शिवप्रसाद झुनझुनवाला ने 1907 ईस्वी में की थी। कोलकाता के निवासी सूरजमल जी ने जिस समय धर्मशाला की स्थापना की थी उस समय का शिलालेख उन्होंने धर्मशाला के मेन गेट पर खुदवाई थी। जिसमें इसका जिक्र किया गया है। 117 साल पुराने धर्मशाला के शिलालेख में जिक्र है कि संगम तट पर कोई भी पिंड दानी आकर तीर्थ यात्री पिंडदान करने या विष्णु धाम का दर्शन करने आए तो उसे तीन दिन तक इस धर्मशाला में ठहरने के लिए जगह दी जाए। ठहरने के लिए उसे किसी प्रकार का कोई किराया नहीं लिया जाए। 100 वर्ष पहले पुनपुन बटाने के संगम की धारा धर्मशाला के समीप ही गुजरती थी। बाढ़ की विभीषिका के कारण नदी के कटाव के कारण पुनपुन एवं बटाने का धारा मुड़कर संगम का तट धर्मशाला से आधा किलोमीटर दक्षिण की ओर चला गया।

राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन द्वारा मनाई गई रविन्द्र नाथ टैगोर की जयंती

गया। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित और महान कवि रविंद्र नाथ टैगोर जी का 163वीं जयंती राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश कार्यालय में मनाया गया बिहार प्रदेश अध्यक्ष डॉ मनीष पंकज मिश्रा जी के द्वारा सर्वप्रथम उनके चित्र पर माला पुष्प चढ़ा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया इस मौके पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने कहा भारत के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता को हम आज श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं बंगाल में जन्मे रविंद्र नाथ टैगोर जी साहित्य में नोबेल पुरस्कार मिला रवींद्रनाथ टैगोर जी का प्रतिभा को देखते हुए नॉन यूरोपीय और प्रथम भारतीय होने का नोबेल पुरस्कार पाने का गौरव क्षणप्राप्त हुआ डॉ रविंद्र नाथ टैगोर जी को सबसे प्रसिद्ध कविता संग्रह गीतांजलि के लिए दिया गया था वह कवि के साथ-साथ नाटककार संगीतकार दार्शनिक समाज सुधारक थे आज श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में राणा रणजीत सिंह प्रमोद कुमार हीरा यादव सुनील बंबईया बबलू गुप्ता विक्की बनवाल सहित दर्जनों श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं।

डीएम ने लोगों की सुनी फरियाद, समाधान का अधिकारियों को दिया निर्देश

गया दोपहर को अत्यधिक गर्मी के बावजूद समाहरणालय में आए अनेकों फरियादी को देख जिला पदाधिकारी गया डॉ0 त्यागराजन एसएम अपने कार्यालय कक्ष से निकलकर सभी फरियादियों से बारी बारी से सबकी फरियाद को सुना है। लगभग 10 लोगों की समस्याओं को सुना गया है। डोभी अंचल के भदेरा गाँव एरिया से आये व्यक्ति ने आपसी जमीन बटवारा को लेकर झगड़ा से संबंधित समस्या को बताया इस पर जिलाधिकारी ने अंचल अधिकारी से मोबाइल पर से बात करते हुए निर्देश दिया है कि मामले को सुनकर उचित निर्णय करें। उन्होंने कहा कि संबंधित विवादित स्थल को स्वयं निरीक्षण भी करना सुनिश्चित करेंगे। शेरघाटी प्रखंड के एक आवेदक ने बताया कि उन्हें मुख्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई है परंतु उसमें कॉलोनी का निर्माण करने के कुछ लोग जबरन नहीं दे रहे हैं इस पर जिला पदाधिकारी ने अनुमंडल पदाधिकारी शेरघाटी को उक्त मामले की समीक्षा कर नियमानुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिए हैं। तेतर मोहड़ा के आवेदक ने बताया कि उनके घर कॉलोनी (घर) बनाने का पैसा अब तक नहीं मिला है, जिसके कारण वो घर बनाने से वंचित हैं। डीएम ने प्रखंड विकास पदाधिकारी मोहरा को दूरभाष के माध्यम से फोन कर संबंधित मामले की जांच कर अभिलंब नियम अनुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिए हैं।

भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी भोजपुर के द्वारा मनाया गया विश्व रेड क्रॉस दिवस

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। विश्व रेड क्रॉस दिवस के अवसर पर भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी भोजपुर जिला इकाई की तरफ से दो स्थानों पर , रेड क्रॉस कार्यालय आरा एवं उत्क्रमित मध्य विद्यालय बैंपली आंचल उदवंत नगर में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। आज के कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता विक्रम विरकर वाइस प्रेसिडेंट सह उप विकास आयुक्त भोजपुर रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा विवेकानंद यादव अध्यक्ष भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी ने की। 1.साईकिल रैली ---सर्वप्रथम कार्यक्रम का उद्घाटन विक्रम विरकर वाइस प्रेसिडेंट के द्वारा विभिन्न स्कूलों से आए बच्चों की साइकिल रैली को सुबह 7.30 झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस साइकिल रैली में बच्चों के द्वारा रेड क्रॉस दिवस, मानवता की सेवा के साथ-साथ मतदाता जागरूकता से संबंधित बैनर और पोस्ट भी प्रदर्शित किए गए। यह रैली शहर के मुख्य मार्गो से होते हुए पुनः रेड क्रॉस परिसर दक्षिणी रमना रोड में आकर समाप्त हुई। आज के इस कार्यक्रम में जिन विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सहभागिता निभाई उसमें संभावना आवासीय उच्च विद्यालय, आर एस मेमोरियल स्कूल जगदेव नगर ,बालिका विद्यालय, जैन कन्या पाठशाला, भगिनी निवेदिता एवं मॉडल इंस्टिट्यूट प्लस टू के बच्चे प्रमुख रहे । 2.झंडोतोलन ---साइकिल रैली की शुरूआत के साथ ही कदम से कदम मिलते हुए हिंदुस्तान स्काउट गाइड की एक टुकड़ी ने रणधीर कुमार ठाकुर एवं समन्वयक मंटू चौधरी के नेतृत्व में सभी विशिष्ट जनों को गाड आफ आनर देते हुए एस्कॉर्ट कर झंडोतोलन मंच तक लाकर अपनी भूमिका निभाई। झंडोतोलन वाइस प्रेसिडेंट के द्वारा किया गया। झंडोतोलन के साथ ही संभावना आवासीय उच्च विद्यालय के जूनियर रेड क्रॉस की छात्राओं की टीम के द्वारा रेड क्रॉस झंडा गीत प्रस्तुत किया गया जिसे बच्चों ने संगीत शिक्षा धर्मेंद्र सिंह एवं उनकी टीम के दिशा निर्देश में तैयार किया। 3.सर हेनरी डुनाट के चित्र पर माल्यार्पण --तदुपरांत रेड क्रॉस के संस्थापक सर हेनरी डुनॉट के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करते हुए पीड़ित मानवता की सेवा का सभी सदस्यों के द्वारा संकल्प भी लिया गया ।4. सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक भोजपुर द्वाराआरो वाटर कूलर का अनुदान---इस अवसर पर रेड क्रॉस दिवस की गरिमा को बढ़ाते हुए सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक भोजपुर के द्वारा भीषण गर्मी के प्रकोप से राहत दिलाने के लिए जनहित में भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी भोजपुर जिला इकाई को 120 लीटर का आरो वाटर कूलर भी अनुदानित किया गया, जिसका फीता काट कर वाइस प्रेसिडेंट एवं अध्यक्ष डॉक्टर वी एन यादव ने उद्घाटन किया और पानी को भी ग्रहण किया । 5. रेड क्रॉस सेमिनार भवन का उद्घाटन--आज के इस कार्यक्रम में रेड क्रॉस भवन के ऊपरी तल पर स्थित सेमिनार हॉल जिसका पुनर्निर्माण कराया गया है उसका भी फीता काटकर उद्घाटन किया गया । इस हाल का जीर्णोद्धार एवं संसाधनों द्वारा सुसज्जित सभी कार्यकारिणी के सदस्यों के सहयोग से किया गया है जो आने वाले समय में छोटे-बड़े आयोजन में अपनी सहभागिता निभाएगा।

6. गोष्ठी का आयोजन---"डीस्प्र्ल्लॅ ल्र्४ल्ल३८ अ'५ी"प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व रेड क्रॉस की दिवस के अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया- गोष्ठी का विषय, "कीपिंग ह्यूमैनिटी अलाइव" है।गोष्ठी में अपने उदगार व्यक्त करते हुए श्री विक्रम विरकर वाइस प्रेसिडेंट ने सर्वप्रथम समस्त रेड क्रॉस के सदस्यों को शुभकामनाएं दी और यह बताया कि जिस प्रकार विश्व लगातार युद्ध की विभीषिका और प्राकृतिक अप्राकृतिक आपदाओं को झेल रहा है उसमें इंसानियत ही सबसे महत्वपूर्ण है जो मानवता की सेवा करने की प्रेरणा हमें देता है। हम सभी को सर हेनरी डुनॉट के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने जीवन में कुछ ना कुछ ऐसी सेवा भावना उतारनी चाहिए जो विश्व की रक्षा कर सके, देश और समाज की रक्षा कर सके।कीपिंग ह्यूमैनिटी अलाइव अर्थात मानवता जिंदा रहे यह विषय आज के संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण हो चुका है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वाइस चेयरमैन डॉ राजेश सिंह ने सर हेनरी डुनॉट नॉट के चरित्र पर प्रकाश डाला और रेड क्रॉस की स्थापना के संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण बातें बतायी। अध्यक्ष अध्यक्ष डॉ वी एन यादव ने कहा कि जिस प्रकार विश्व में लगातार होते हुए युद्ध की विभिषिका से मानवता प्रभावित हो रही है उसकी रक्षा करना और मानव में मानव का मानव के प्रति प्रेम जगाना बहुत ही आवश्यक है।

इसरो के वैज्ञानिकों ने किया दरभंगा के तारामंडल का दौरा, सुन्दरता व शैली को सराहा

प्रात: किरण संवाददाता

पटना / दरभंगा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिकों ने बुधवार को दरभंगा के तारामंडल का दौरा किया। मौके पर वैज्ञानिक एमके पांडे व दिलीप वर्मा ने तारामंडल की सुंदरता, उपकरणों की विशेषता और शैली को खूब सराहा । वे मानते हैं कि यह विश्व स्तरीय तारामंडल है, जो छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान में रुचि लेने के लिए प्रेरित करेगा। तारामंडल का यह दौरा विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया। वैज्ञानिकों ने तारों की चमक, आसमान की साफ-सफाई और तारामंडल की सामग्री के प्रयोग से उत्पन्न होने वाली मानवता की अद्भुतता की चर्चा की।

उन्होंने तारामंडल के उपकरणों की विशेषता पर भी प्रकाश डाला` इसके अलावे वैज्ञानिकों ने स्थानीय लोगों से भी इस तारामंडल की महत्ता पर ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इस तरह की पहल स्थानीय बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण सीखने का माध्यम हो सकती है, जो अंतरिक्ष विज्ञान और उसमें होने वाली घटनाओं के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक हैं।

इस प्रकार की पहल से स्थानीय समुदाय की तकनीकी और शैक्षिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान होगा, जो आने वाले सालों में भारत को विकसित देशों के रूप में सामिल होने में मदद करेगा` वहीं वैज्ञानिकों ने दरभंगा इंजीनियरिंग कॉलेज का भी दौरा कर विश्व स्तरीय भाषा प्रयोगशाला, सेमिनार हॉल, सम्मेलन कक्ष, कंप्यूटर केंद्र, ऑडिटोरियम की खूबसूरती देखा । वहीं इस दौरे को लेकर डीसीई दरभंगा के प्राचार्य डॉ संदीप तिवारी ने कहा कि इस यात्रा के माध्यम से, वैज्ञानिकों ने डीसीई दरभंगा के छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के महत्व को साझा करने का मौका दिया। उन्होंने कहा कि इसरो वैज्ञानिकों का दरभंगा के तारामंडल का दौरा एक महत्वपूर्ण कदम है जो अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में जागरूकता और उत्साह को बढ़ावा देगा।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के जिलाध्यक्ष की अध्यक्षता में किया गया बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के जिलाध्यक्ष निर्मल सिंह शक्रवार की अध्यक्षता में बैंक कॉलोनी अहीरपूरवा में बैठक आयोजित की गई जिसमें गुरु परंपरा के वर्तमान गुरु डॉ शशि बाबा के 25वें दांपत्य जीवन पर पूजन, परिचर्चा एवं भजन- संध्या , रामेश्वरपीठ ,मोहनपुर करजा, बड़हरा में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। श्री शक्रवार की अध्यक्षता में आयोजन समिति द्वारा कार्यक्रम मनाने की सभी आवश्यक तैयारियों का जायजा लिया गया ।इसमें श्री शक्रवार ने बताया कि सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरूआत वैदिक रीति से शंखनाद के बीच मंगलाचरण एवं स्वस्तिवाचन एवं वर-कन्या पूजन पंडित रवि शास्त्री के आचार्यत्व में होगा उसके बाद, "विवाह बंधन है या अवसर"विषय पर परिचर्चा का आयोजन होगा जिसकी अध्यक्षता प्रोफेसर गांधी जी राय करेंगे तथा मुख्यवक्ता डॉ आचार्य भारत भूषण पांडे होंगे जबकि विषय प्रवर्तन एवं स्वागत भाषण डॉ शशि बाबा स्वयं करेंगे। इसके साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के सीनेटर एवं विश्व हिंदी सम्मेलन के जिला अध्यक्ष प्रोफेसर बलराज ठाकुर, भोजपुरी के विभागध्यक्ष प्रोफेसर दिवाकर पांडे,वरिष्ठ अधिवक्ता लक्ष्मी नारायण राय, साहित्यकार डॉ जनार्दन मिश्रा, पूर्व मेयर रूबी कुमारी ,डा ममता मिश्रा, डॉ किरण,डॉ रेणु, डॉ मधु, डॉ मृत्युंजय, इत्यादि होंगे। अंत में भंडारा का आयोजन किया जाएगा। अंत में बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री शक्रवार ने कहा डॉ शशि बाबा गृहस्थ का सबसे बड़ा धर्म गृहस्थी मानते हैं। अपने परिवार को ठीक से चलाना और सही समाज का निर्माण करना यही गृहस्थ धर्म का सार है। डॉ शशि बाबा शिष्यों को बताते हैं कि गुरु के कमजोर होने से समाज कमजोर होता है। वे बताते हैं, राज्य को राजा चलाते हैं और राजा को गुरु। इतिहास साक्षी है राजा चंद्रगुप्त को चाणक्य ने बनाया और शिवाजी को समर्थ रामदास ने। आज देश को चरित्रवान गुरु की आवश्यकता है, तभी भारत विश्व गुरु बन सकता है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा सतत प्रयासशील है। शास्त्रीय संगीत भी होगा, जिसमें बीएचयू से दीपक कुमार, तबला पर जगदंबा सिंह शास्त्रीय संगीत के लिए पंडित राकेश, अमरेंद्र ओझा, शिवम सिंह इत्यादि भाग लेंगे।

गायत्री महायज्ञ के तीसरे दिन कड़ी धूप के बाद भी भारी भीड़

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के दुर्गा मैदान के प्रांगण में पांच दिवसीय गायत्री महायज्ञ के तीसरे दिन विभिन्न संस्कारों की चर्चा की गई। नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में पधारे शांतिकुंज हरिद्वार के योग्य आचार्यो के सान्निध्य में प्रातः देव पूजन जप एवं हवन का कार्यक्रम चलाया गया। नवधा भक्ति की चर्चा करते हुए भक्तमाल के कथा के निमित महान भक्त नरसी मेहता की कथा को कहते हुए प्रवाचिका संगिता मिश्रा ने कहा कि कलियुग में भगवान श्री कृष्ण ने भक्त नरसी मेहता को साक्षात दर्शन दिए। नरसी मेहता का सारा जीवन भजन,कीर्तन एवं भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में बीता।श्री कृष्ण के भक्ति में अपने जीवन की सारी कमाई को जरूरतमंदों में दान कर दिया था। सुबह सवेरे से ही यज्ञ में फेरी देने वाले श्रद्धालुओं की तांता लगी रही।

राजा परीक्षित ने कलयुग को आने से रोका : राधा मोहन महाराज

भागवत कथा में श्रद्धांलूओं ने लगाई डुबकी

प्रात: किरण संवाददाता

तरारी प्रखंड के जेठवार भट्ट में माँ बरेजी मंदिर के भूमि पूजन के अवसर पर माँ बरेजी ट्रस्ट द्वारा आयोजित भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में श्रीमद जगदगुरू निम्बकाचार्य पीठाधिश्वर स्वयंभू श्री राधा मोहन शरण देवचार्य जी महाराज ने आज की कथा का प्रारम्भ योग शब्दों से किया. परम पूज्य श्री महारज ने कहा कि जब कलयुग प्रवेश कर रहा था तब राजा परीक्षित ने कलयुग को आने से रोका. फिर भी कलयुग ने कुछ जगह मांगी. उन जगहों की व्याख्या करते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने उन कथाओं की विस्तार पूर्बक व्याख्या की. उन्होंने बताया कि किस प्रकार से परीक्षित का कुछ श्राप लगा।

देवचार्य जी महाराज ने 18 पुराणों के श्लोकों के बारे में बताया. इसके साथ ही सुखदेव चरित्र भीष्म चरित्र आदि का श्रवण कराया. सुबह से दोपहर तक यज्ञ कुंड की परिक्रमा के लिए श्रद्धांलूओ की लाइन लगी रही. माँ बरेजी मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजिए इस भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में आज मथुरा वृन्दावन से आये रासलीला मण्डली ने श्रद्धांलूओ का मन मोह लिया. ट्रस्ट के उपाध्यक्ष पुरोषोत्तम भट्ट ने बताया की वैदिक मन्त्रोंचरण, भागवत कथा, रासलीला आदि अध्यात्म से प्राकृतिक और आत्मिक शुद्धि होती हैं. जेठवार भट्ट पंचायत के मुखिया एवं आयोजन समिति के वरीय सदस्य युवा नेता श्री मुन्ना कुमार ने कहा कि यज्ञ स्थान पर किसी श्रद्धांलू को कोई परेशानी न हो इस बात के लिए पंचायत परिवार व यज्ञ समिति पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं. इस अवसर पर राहुल राय ,संतोष राय, वेद प्रकाश राय, जितेंद्र राय, सत्येन्द्र राय,राकेश राय, अमन राय,पिंटू राय,बोलबम राय, बोलबम राय, संतोष राय, मुकेश यादव, मुन्ना यादव, सुधीर यादव, कमलेश यादव आदि युवा स्वयमसेवी श्रद्धांलूओं की सेवा में तत्पर दिखे।

दहेज हत्या के मामले में जेल में बंद पति दोषमुक्त

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे दस रत्नेश्वर कुमार सिंह ने कासमा थाना कांड संख्या -09/23 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए साक्ष्य के अभाव में मृतका सिम्पी देवी के सास- कलावती देवी, देवर -सदानंद कुमार और काराधीन पति- दयानंद कुमार पडरिया कासमा को भादंवि धारा 304 (बी)34 में दोषमुक्त कर रिहा कर दिया है। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक विंदेश्वर यादव पौथू ने 10 जनवरी 2023 को प्राथमिकी में कहा था कि शादी के कुछ माह बाद पचास हजार रुपए लड़की के ससुराल वालों ने मांग की जिसे सूचक ने दे दिया तो पुनः एक लाख की मांग हुई जिसे देने में सूचक ने असमर्थता जताई। 10 जनवरी 2023 को खबर आई कि लड़की आग से जल गई है। रफीगंज अस्पताल गया तो मालुम हुआ कि बेहतर इलाज हेतु मगध मेडिकल कॉलेज गया रेफर कर दिया गया है। मगध मेडिकल कॉलेज में लड़की की मृत्यु हो गई थी, घटना के बाद से पुरे परिवार घर छोड़ कर भाग गया था। न्यायालय से गैर-जमानती वारंट जारी होने पर परिवारवालों ने 15 जुलाई 2023 को न्यायालय में आत्मसमर्पण किया था। जेल में बंद पति मैकेनिकल इंजीनियर था। उपरोक्त अभियुक्तों पर संज्ञान 17 अगस्त 2023 को लिया गया था और आरोप गठन 03 अक्टूबर 2023 को हुई थीं। मात्र 17 माह में मामले का निष्पादन किया गया है।

सर्वाधिक 39 बार रक्तदान करने वाले रक्तवीर सल्लू खान को किया गया सम्मानित

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। विश्व रेडक्रॉस दिवस पर शहर के रेडक्रॉस भवन के सभागार में एक कार्यक्रम आयोजित कर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं रक्तवीर सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। सम्मान कार्यक्रम में सर्वाधिक 39 बार रक्तदान करने वाले रक्तवीर एवं पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय के जिलाध्यक्ष शाहनवाज खान उर्फ सल्लू खान को सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें रेडक्रॉस के चेयरमैन सतीश कुमार सिंह के द्वारा दिया गया। गौरतलब है कि सल्लू खान जिले के ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता है जो जाड़ा गर्मी या बरसात हर मौसम में सामाजिक कार्यो के प्रति समर्पित रहते है। रात्रि के दो बजे भी अगर किसी को इनकी जरूरत पड़े और इन्हें याद करे तो मदद के लिए हाजिर रहते है। सल्लू खान को उनके समाजसेवा को लेकर कई बार जिला प्रशासन से सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। रक्तदान से संबंधित सम्मानित होने पर समाजसेवी समाजसेवी सल्लू खान को सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉक्टर आशुतोष कुमार सिंह मजबूत आलम उर्फ मुन्नू वार्ड परिषद सिकंदर हयात डॉक्टर रवि रंजन डॉक्टर शोभा रानी नगर परिषद के मुख परिषद औरंगाबाद के अध्यक्ष उदय गुप्ता कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह नगर परिषद के उपाध्यक्ष मोहम्मद अहसान आदि लोगों ने बधाई देते हुए कहा कि सल्लू खान एक सामाजिक कार्यकर्ता और वह समाजसेवी के लिए जाने जाते हैं वहीं सल्लू खान ने भी सम्मानित होने पर कहा कि मुझे आज का दिन गर्भ महसूस हो रहा है कि मैं इसी तरीके से अपना सेवा लोगों की बीच करता रहूं ताकि सेवा से ही लोगों का करने पर इंसानियत का मिसाइल टाइम करना हमारा मकसद है।

डॉ मनीष ने नगर निगम द्वारा टेक्स बढ़ोतरी पर पुनः विचार करने की मांग की

गया। नगर निगम गया के द्वारा होल्डिंग टैक्स बढ़ोतरी की अधिसूचना जारी होने पर भाजपा गया के द्वारा सरकार से पुनः विचार करने के लिए किसान मोर्चा के सह जिला प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा के कार्यालय में बैठक आहूत की गई बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि नगर निगम गया के द्वारा होल्डिंग टैक्स बढ़ोतरी पर चर्चा करते हुए डॉक्टर मनीष ने कहा कि जो टैक्स का श्रेणी रखा गया हैं वह पुनर्विचार करने की जरूरत हैं कुछ सड़के जो तीसरे श्रेणी में रहना चाहिए था जो सर्वे करने वाले अधिकारी कर्मचारी वर्गीकरण नहीं किया गया जो त्रुटिपूर्ण हैं इस टैक्स बढ़ोतरी एक सुनियोजित साज़िश रच कर टैक्स बढ़ाया गया हैं जो गया जी जनता के साथ अन्याय किया गया हैं।

एस. बी. कॉलेज आरा के भूगोल विभाग में एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा के अंगीभूत इकाई एसङ्क बीङ्क कॉलेज मे भूगोल विभाग तथा कद.अ.उ के संयुक्त प्रयास से एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय है- रिमोट सेंसिंग(सुदूर संवेदन) विकास एवं प्रक्रिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन कॉलेज की प्राचार्य डॉक्टर पूनम कुमारी, मुख्य वक्ता डॉ सदफ, पीङ्क जीङ्क भूगोल विभाग, संयोजीका सह विभागाअध्यक्ष डॉ मनीषा कुमारी तथा सहसंयोजक डॉ सद्दाम हुसैन के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। मुख्य वक्ता डॉक्टर सदफ, सहायक प्राध्यापिका स्नातकोत्तर भूगोल विभाग आरा ने सुदूर संवेदन के विकास एवं प्रक्रिया पर बेहतरीन वक्तव्य दिया। इससे छात्र एवं छात्राएं बहुत लाभान्वित हुए। संयोजीका डॉ मनीषा कुमारी ने सुदूर संवेदन के विभिन्न आयामों को रेखांकित किया। सह संयोजक डॉ सद्दाम हुसैन ने सुदूर संवेदन के वर्तमान महत्व तथा रिसर्च में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालें। कार्यक्रम में संचालन आलोक दुबे ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ सद्दाम हुसैन ने किया। इस कार्यक्रम में भूगोल विभाग के शिक्षक डॉ मुन्ना कुमार ज्योति, डॉ महताब इमाम, के अलावा डॉ चुनन कुमारी, डॉ मिराज दानापुरी, डॉ रामनारायण मिश्र, डॉ कुमार शिव शंकर, डॉ आशा रानी, डॉ श्वेता सिंह,डॉ सिमरन, डॉ पूजा कुमारी, डॉ एसङ्क डीङ्क सिंह, डॉ अशोक तिवारी, डॉ राकेश रंजन, डॉ वेंकटेश चौधरी, डॉ राकेश चौधरी शोधार्थी रमजान, रामदास पासवान उपस्थित थे भरत सिंह, सलोनी, राणा, जन्नत आफरीन आदि छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

भारत निर्वाचन आयोग के नियुक्त प्रेक्षक ने निर्वाचन संबंधी तैयारियों को लेकर की बैठक

मोतिहारी।लोकसभा आम निर्वाचन 24 को स्वतंत्र, निष्पक्ष, सहभागिता पूर्ण एवं भयमुक्त संपन्न कराने को लेकर भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा नियुक्त 03-पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक के हर्षवर्धन, 04-शिवहर लोकसभा क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक डॉ कैलाश बाबूराव शिंदे, 03-पूर्वी चंपारण एवं 04-शिवहर लोकसभा क्षेत्र के पुलिस प्रेक्षक एल एम हाओकिप तथा 04- शिवहर लोकसभा क्षेत्र के व्यय प्रेक्षक राकेश सी सज्जन के द्वारा जिलाधिकारी पूर्वी चंपारण सौरव जोरवाल एवं पुलिस अधीक्षक पूर्वी चंपारण कांतेश कुमार मिश्रा की उपस्थिति में जिला के सभी 12 विधान सभाओं के सहायक निवार्ची पदाधिकारी तथा जिला स्तर पर गठित किए गए सभी को कोषांगों के नोडल पदाधिकारी के साथ समाहरणालय मोतिहारी स्थित डॉ राजेंद्र प्रसाद सभा भवन में लोकसभा निर्वाचन की तैयारी की जानकारी प्राप्त की गई। इस अवसर पर विकास आयुक्त समीर सौरभ एवं नगर आयुक्त सौरभ सुमन यादव भी उपस्थित थे।बैठक में सर्वप्रथम जिलाधिकारी पूर्वी चंपारण के द्वारा सभी प्रेक्षकगण का स्वागत किया गया। इसके पश्चात उप विकास आयुक्त के द्वारा जिला प्रशासन पूर्वी चंपारण के द्वारा जिला प्रशासन के द्वारा की गई तैयारी एवं जिला प्रोफाइल को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तृत रूप से प्रेक्षक गण को जानकारी दी गई। उप विकास आयुक्त ने बताया कि जिले की आबादी लगभग 60 लाख है जिसमें 36 लाख मतदाता हैं। इस जिला में कुल 12 विधानसभा क्षेत्र हैं जिसमें छः- हरसिद्धि, गोविंदगंज, केसरिया,कल्याणपुर, पिपरा एवं मोतिहारी विधानसभा क्षेत्र पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र में,तीन- मधुबन, चिरैया एवं ढाका विधानसभा क्षेत्र शिवहर लोकसभा क्षेत्र में तथा तीन- रक्सौल,सुगौली एवं नरकटिया विधानसभा क्षेत्र पश्चिम चंपारण लोकसभा क्षेत्र में आते हैं। पूर्वी चंपारण एवं शिवहर लोकसभा की मतगणना मोतिहारी स्थित एमएस कॉलेज में कराई जाएगी। जबकि रक्सौल, सुगौली तथा नरकटिया विधानसभा के पोल्ड ईवीएम बेतिया जाएंगे ।जहां उसकी मतगणना होगी।उप विकास आयुक्त ने बताया कि जिला में 35 हजार मतदान कर्मियों को प्रथम प्रशिक्षण दे दिया गया है। मतदान कर्मियों का विधानसभा वार रेंडमाइजेशन कर दिया गया है, अब उनको द्वितीय पत्र निर्गत किया जाएगा। जिसके आधार पर उनका द्वितीय प्रशिक्षण 14 मई से 18 मई तक कराया जाएगा। उप विकास आयुक्त ने बताया कि राजनीतिक दलों के जिला अध्यक्षों की उपस्थिति में ईवीएम का रेंडमाइजेशन भी कर दिया गया है। अब ईवीएम को डिस्पैच सेंटर पर भेजा जाएगा जहां उसकी कमिशनिंग कराई जाएगी। इस दौरान ईवीएम प्रोटोकॉल का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित कराई जाएगी।उन्होंने कहा कि सभी 12 विधानसभाओं के लिए अलग-अलग 12 डिस्पैच सेंटर बनाए गए हैं जो 07 लोकेशन (जगह) पर स्थित हैं।उन्होंने बताया कि जिला में मतदान की तिथि 25 मई को निर्धारित है और मतगणना 4 जून को होनी है। स्वच्छ एवं प्रलोभनमुक्त चुनाव कराने के लिए जिला में 39 एफएसटी, 39एसएसटी,भीएसटी वीवीटी की टीम बनाई गई है।

सामान्य प्रेक्षक द्वारा की गई समीक्षा

प्रात: किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम).बुधवार को समाहरणालय सभागार में लोकसभा आम निर्वाचन 2024 छठे चरण मतदान हेतु नियुक्त पश्चिम चम्पारण एवं वाल्मीकिनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक महोदय द्वारा सभी कोषांगों के वरीय पदाधिकारियों एवं सभी नोडल पदाधिकारियों सहित सभी ए0आर0ओ0 के साथ समीक्षात्मक बैठक की गई। इस बैठक में दोनों लोकसभा क्षेत्रों से संबंधित सभी कोषांगों एवं सभी ए0आर0ओ0 द्वारा अबतक की गयी निर्वाचन संबंधी तैयारी की विस्तृत जानकारी ली गयी। 1-वाल्मीकिनगर लोकसभा के लिए भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली द्वारा नियुक्त सामान्य प्रेक्षक जे0 इनोसेन्ट दिव्या एवं एस0 कृष्णा चैतन्य सामान्य प्रेक्षक 2-पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र द्वारा सर्वप्रथम सभागार में उपस्थित सभी कोषांगों के वरीय पदाधिकारी, नोडल पदाधिकारी एवं सभी ए0आर0ओ0 से परिचय प्राप्त करते हुए अपना भी परिचय दिया गया। इस बैठक का संबोधन दोनों रिटर्निंग पदाधिकारी द्वारा किया गया।

समीक्षा के क्रम में सभी संबंधित पदाधिकारियों से अबतक की गई तैयारियों की गहन समीक्षा की गयी एवं आवश्यक दिशा-निर्देश भी दी गयी। सामान्य प्रेक्षक एवं उपस्थित व्यय प्रेक्षक के द्वारा कहा गया कि हम प्रेक्षक सिर्फ अवलोकन करेंगे परन्तु सफलतापूर्वक निर्वाचन सम्पन्न कराने की जिम्मेवारी आप सभी उपस्थित पदाधिकारियों के कंधों पर है। उन्होंने कहा कि आप सभी पदाधिकारी यदि आवश्यक हुआ तो हम सभी प्रेक्षकों से किसी भी समय मिलकर आ रहे अपने-अपने व्यवधानों के समाधान हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। सामान्य प्रेक्षकों द्वारा अपने संबोधन में कहा गया कि अब मात्र लगभग कुछ दिन शेष रह गये हैं।

इसमें सभी निर्वाचन संबंधी शेष कार्य पूरा करना है। सभी पदाधिकारी अपने दायित्वों का निवर्हन पुरी मेहनत के साथ करने में रूचि लें ताकि शांतिपूर्ण, निष्पक्ष, भयमुक्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में मतदान एवं मतगणना आदि सभी कार्य सम्पन्न हो जाय। ज्ञात हो कि समाचार पत्रों में सभी प्रेक्षकों के सम्पर्क संख्या, आवासन स्थान आदि के बारे में आम सूचना प्रकाशित भी की गयी है। इस बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी, श्री दिनेश कुमार राय, पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र के रिटर्निंग अधिकारी एवं वाल्मीकिनगर लोकसभा क्षेत्र के रिटर्निंग अधिकारी, श्री राजीव कुमार सिंह सहित उप विकास आयुक्त महोदया सहित पूर्वी चम्पारण जिला के पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र में पड़ने वाले ए0आर0ओ0 भी उपस्थित थे। इस सभा का समापन जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा किया गया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने आशा व्यक्त की कि उपस्थित सभी पदाधिकारी अपने-अपने निर्वाचन संबंधी दायित्वों का निवर्हन ससमय बखूबी करेंगे एवं लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के छठे चरण अंतर्गत पश्चिम चम्पारण एवं वाल्मीकिनगर लोकसभा आम निर्वाचन को सफल बनाने में अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

मथुराधाम घाट के सौंदर्यीकरण के लिए हुई बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

पानापुर(सारण)गंडक नदी के किनारे कोंध गांव स्थित पर्यटन स्थल के रूप में विख्यात मथुराधाम घाट के सौंदर्यीकरण के लिए बुधवार को श्री मोती बाबा की अध्यक्षता में बुद्धिजीवियों एवं गणमान्य लोगों की बैठक हुई ।इस बैठक में निमार्णाधीन सूर्यमंदिर के सुस्त पड़े कार्य को गति देने ,तालाब के सौंदर्यीकरण के लिए साफ सफाई, तालाब के किनारे स्थित छठ घाट पर बने सुरसोते एवं चबूतरे को समन्वय स्थापित कर पूर्वी छोर पर स्थानांतरित करने एवं पवित्र मथुराधाम घाट की चहारदीवारी निर्माण करने पर विस्तृत चर्चा की गयी ।बैठक में घाट के सौंदर्यीकरण कार्य के लिए एक कमिटी का गठन करने एवं जनसहयोग से इस कार्य को मूर्तरूप देने का निर्णय लिया गया ।बैठक में अवकाशप्राप्त बीइओ शुभनारायन सिंह ,पूर्व जिलापार्षद प्रतिनिधि रणविजय सिंह ,बीडीसी प्रतिनिधि रूपेश साह हलवाई ,पारसनाथ सिंह ,बलिराम तिवारी ,हंसनाथ भगत, वेदप्रकाश तिवारी , सुरेश सिंह ,कमला सिंह ,संजय सिंह ,संतोष सिंह ,विजय सिंह ,गौरीशंकर सिंह ,रामप्रकाश सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

कानूनी मुसीबत में घिरी जॉली एलएलबी 3 फिल्म के खिलाफ दर्ज कराई गई शिकायत?

अभिनेता अक्षय कुमार और अरशद वारसी फिल्म जॉली एलएलबी 3 को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है, जिसकी जानकारी बीते दिनों खुद अक्षय कुमार ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए साझा की। अब मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म कानूनी पचड़े में फंस गई है। फिल्म के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई है। शिकायत में आरोप लगाए गए हैं कि इस फिल्म में वकीलों और जजों का मजाक उड़ाने की कोशिश की जा रही है।

निर्माता-निर्देशकों पर लगाए आरोप

फिल्म जॉली एलएलबी 3 के खिलाफ दर्ज कराई गई शिकायत में दावा किया गया है कि इस फिल्म में न्यायतंत्र का अपमान करने की कोशिश की गई है। यह शिकायत जिला बार एसोसिएशन अध्यक्ष चंद्रभान की ओर से दायर कराई गई है। इस पर मंगलवार को कोर्ट में सुनवाई होगी। अजमेर जिला बार एसोसिएशन ने सिविल न्यायाधीश अजमेर उत्तर की अदालत में जॉली एलएलबी 3 की शूटिंग रोकने की अर्जी लगाई है।

शूटिंग पर रोक लगाने की मांग?

बार एसोसिएशन अध्यक्ष ने फिल्म के निर्माता-निर्देशक और कलाकारों पर वकीलों और जजों का मजाक उड़ाने के लिए शिकायत दर्ज कराई है। शिकायतकर्ता ने कोर्ट से नोटिस जारी करने का अनुरोध भी किया है। साथ ही फिल्म की शूटिंग पर रोक लगाने की मांग भी की है। बता दें कि फिल्म का पहले शेड्यूल अजमेर में शूट हो रहा है।
इसलिए लिया शिकायत का फैसला!
रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म के खिलाफ शिकायत का फैसला 'जॉली एलएलबी' के पहले और दूसरे भाग को ध्यान में रखकर लिया गया है। शिकायत में कहा गया है कि ऐसा लगता है कि फिल्म निर्माता, निर्देशक और अभिनेता देश के संविधान की न्यायपालिका की गरिमा और प्रतिष्ठा का बिल्कुल भी सम्मान नहीं करते हैं। 'जॉली एलएलबी 3' की शूटिंग अजमेर के डीआरएम ऑफिस सहित आसपास के क्षेत्रों और ग्रामीण इलाकों में चल रही है।

मनोज बाजपेयी ने द फैमिली मैन सीजन 3 की शूटिंग की शुरू

एक्टर मनोज बाजपेयी ने राज और डीके की जोड़ी के निर्देशन में द फैमिली मैन के तीसरे सीजन की शूटिंग शुरू कर दी है। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो ने इंस्टाग्राम पर कलाकारों की एक तस्वीर के साथ क्लैपबोर्ड की एक पिक्चर शेयर की। साथ ही कैप्शन में लिखा, द फैमिली मैन की शूटिंग शुरू हो गई है। सीजन तीन में मनोज मध्यमवर्गीय व्यक्ति श्रीकांत तिवारी के किरदार में हैं, जो एक जासूस है। पहला सीजन, जिसका प्रीमियर 2019 में हुआ, उसमें प्रियामणि, शरद केलकर, नीरज माधव, शारिब हाशमी, दलीप ताहिल, सनी हिंदुजा और श्रेया धनवंतरी शामिल हैं। एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु दूसरे सीजन के कलाकारों में शामिल हुईं। इस सीरीज की कहानी सुमन कुमार, राज और डीके द्वारा लिखी गई है।

यंग ग्लोबल लीडर्स की लिस्ट में शामिल होने पर खुश हैं भूमि

बॉलीवुड अभिनेत्री भूमि पेडनेकर अपनी प्रोफेशनल लाइफ के अलावा अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी खूब चर्चा में चलती रहती हैं। अभिनेत्री की पिछली फिल्म भक्षक दर्शकों को खूब पसंद आई थी। यह फिल्म फ्लॉप की कतार में अभिनेत्री के लिए संजीवनी साबित हुई थी। अब हाल ही में, भूमि पेडनेकर उन पांच भारतीयों में से बनी हैं, जिन्हें वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम ने अपने यंग ग्लोबल लीडर्स कम्युनिटी- द क्लास ऑफ 2024 का हिस्सा बनने के लिए चुना गया है। भूमि फिलहाल जिनेवा में हैं।

यंग ग्लोबल लीडर बनीं भूमि

इस महीने की शुरुआत में, विश्व आर्थिक मंच ने 40 वर्ष से कम उम्र के लगभग 90 चेंज मेकर्स की अपनी सूची जारी की, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य, आर्थिक विकास, प्रौद्योगिकी और स्थिरता के क्षेत्रों में अपने काम से सुनहरे भविष्य के लिए अपना योगदान दे रहे हैं। विश्व आर्थिक मंच ने कहा कि 2024 की सूची राजनीति, व्यवसाय, नागरिक समाज, कला और शिक्षा जगत के उभरते सितारों के एक समूह से बनी है।

युवा वैश्विक नेता होने पर गोर्वान्वित हैं भूमि

अपनी खुशी जाहिर करते हुए भूमि ने कहा, मुझे विश्व आर्थिक मंच पर भारत से एक युवा वैश्विक नेता होने पर गर्व है। यह मुझे अपने जीवन का हर मिनट सामाजिक भलाई के लिए समर्पित करने के लिए प्रेरित करता है। यह मेरे लिए और भी खास है क्योंकि यह अगले साल सिनेमा में मेरे 10वें वर्ष के जश्न में भी शामिल होगा!

दुनिया में लाना चाहती हैं बदलाव

भूमि ने आगे कहा, मैं दुनिया के विभिन्न हिस्सों से बदलाव लाने वालों के साथ बातचीत करके लगातार प्रेरित होती हूं। यह प्रतिष्ठित मंच मुझे ऐसे प्रतिभाशाली दिमागों से जुड़ने और हमारी भावी पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए एकजुट होने का अवसर देता है। मैं बदलाव की दिशा में काम करना चाहती हूं। मेरा फोकस स्थिरता पर जोर देना है और मैं अपने लोगों को स्वस्थ रखने के लिए अधिक से अधिक लोगों को एकजुट करना चाहती हूं। मैं सहयोग करने, विचारों का आदान-प्रदान करने और वैश्विक स्तर पर अच्छे प्रभाव डालने के अवसरों की प्रतीक्षा कर रही हूं।

इस एक फिल्म ने बदल दी थी अल्लू अर्जुन की जिंदगी

साउथ के स्टाइलिश सुपरस्टार अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा 2 द रूल जल्द ही रिलीज होने वाली है। इस फिल्म को लेकर अल्लू लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। इस फिल्म से जुड़ी हर एक जानकारी पर दर्शकों की नजर टिकी रहती है। 2003 में फिल्म गंगोत्री से अपने करियर की शुरुआत करने वाले अभिनेता ने एक खास पोस्ट अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर साझा किया है, जिसमें उन्होंने अपने दिल की बात को खुलकर बताया है।
7 मई 2024 को अल्लू अर्जुन की रोमांटिक ड्रामा फिल्म आर्या की रिलीज के पूरे 20 साल पूरे हो गए हैं। इस फिल्म का सुकुमार ने निर्देशन किया था। इस फिल्म के निर्माण की जिम्मेदारी दिल राजू ने उठाई थी। फिल्म आर्या अल्लू के करियर की उन फिल्मों में से एक है जो अभिनेता के दिल के बेहद करीब है। इस फिल्म को लेकर अल्लू ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा किया है। अल्लू ने आज सुबह अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, आर्या के पूरे हुए 20 साल, यह सिर्फ एक फिल्म नहीं है... यह मेरी जिंदगी का वो अहम समय जिसने मेरी जिंदगी के मायने ही बदल दिए। हमेशा के लिए धन्यवाद। अल्लू के इस पोस्ट के बाद फैंस लगातार उन्हें कमेंट्स कर रहें हैं।

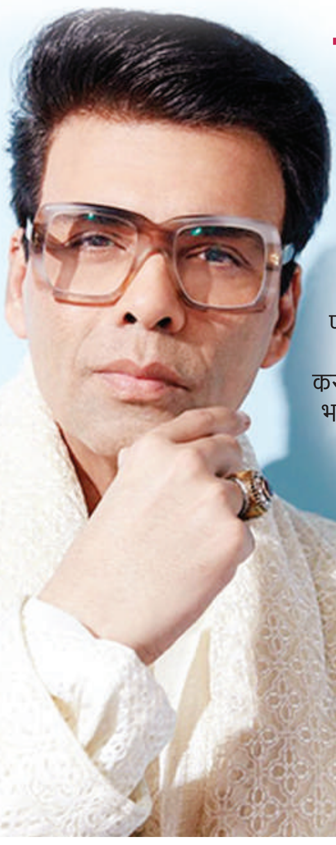

कॉमेडी शो में मजाक उड़ाए जाने पर भड़के करण जौहर

कॉमेडियन केतन सिंह ने फिल्ममेकर करण जौहर से माफी मांग ली है। उन्होंने कहा कि उनका इरादा करण की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था। दरअसल, केतन ने एक नए कॉमेडी शो मेडनेस मचाएंगे के प्रोमो में करण का मजाक उड़ाया था जिसके बाद करण भड़क गए थे और उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपना गुस्सा जाहिर किया था।

क्या कहा था करण ने?

करण ने केतन के एक मिमिक्री एक्ट को देखने के बाद सोशल मीडिया पर अपना रिएक्शन देते हुए एक लंबा चौड़ा नोट शेयर किया था। उन्होंने लिखा था, मैं मां के साथ टीवी देख रहा था। उसी दौरान मैंने एक बड़े टीवी चैनल के रियलिटी कॉमेडी शो का प्रोमो देखा। एक कॉमेडियन खराब तरीके से मुझे मिमिक कर रहा था। मैं ये ट्रोल्स से एक्स्पेक्ट करता था जो कि ऐसे लोग होते हैं जिनका न कोई नाम होता है और न ही चेहरा लेकिन जब 25 साल तक टिके रहने के बावजूद आपकी इंडस्ट्री के लोग ही आपका अपमान करें तो ये बहुत बुरी बात है। इस बात से मुझे गुस्सा नहीं आ रहा बल्कि बेहद दुख हो रहा है।

कॉमेडियन ने मांगी माफी

करण जौहर का रिएक्शन सामने आने के बाद कॉमेडियन केतन सिंह ने उनसे माफी मांग ली है। उन्होंने इंटरव्यू में कहा, मैं करण जौहर सर से माफी मांगता हूं। मैं उनके काम का कायल हूं। चाहे कॉफी विद करण हो या उनकी पिछली फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी जो कि मैंने 5-6 बार देखी है। मुझे उनकी फिल्में और शोज बेहद पसंद हैं। अगर उन्हें मेरी किसी भी बात से दुख हुआ है तो मैं उनसे माफी मांगता हूं। मेरा मकसद उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था। मेरा मकसद सिर्फ ऑडियंस को एंटरटेन करने का था और मैं अगर कुछ एक्स्ट्रा कर गया तो मैं उनसे सॉरी कहता हूं।

अपकमिंग प्रोजेक्ट कॉल मी बे में नजर आएंगी अनन्या पांडे

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे ने अपने अगले प्रोजेक्ट कॉल मी बे की एक झलक शेयर की। उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर वैनिटी वैन की एक तस्वीर पोस्ट की, जिस पर बे लिखा हुआ है। एक्ट्रेस ने तस्वीर को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, देखो कौन वापस आया है... आप लोगों को दिखाने के लिए इंतजार नहीं कर सकती, इसके बाद उन्होंने रेड हार्ट वाला इमोजी भी शेयर किया। सीरीज में अनन्या पांडे एक अरबपति फैशन आइकन बे का रोल अदा कर रही हैं, जिसे एक बड़े घोटाले के बाद उसके परिवार ने खुद से बहुत दूर कर दिया है। पहली बार उसे अपना बचाव करना है। इस यात्रा में, वह रूढ़ियों को, पूर्वधारणाओं को तोड़ती हैं और जानती हैं कि वह असल में कौन है। कॉल मी बे करण जौहर, अपूर्व मेहता और एक्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर के रूप में सोमेन मिश्रा द्वारा निर्मित और कॉलिन कुन्हा द्वारा निर्देशित धर्मा एंटरटेनमेंट प्रोडक्शन की सीरीज है। यह सीरीज जल्द ही प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होगी। बता दें कि, अनन्या को पिछली बार अर्जुन वरैन सिंह द्वारा निर्देशित और अर्जुन, जोया अख्तर और रीमा कागती द्वारा लिखित फिल्म खो गए हम कहां में देखा गया था। फिल्म का निर्माण एक्सेल एंटरटेनमेंट और टाइगर बेबी फिल्म्स के बैनर तले रितेश सिधवानी, जोया अख्तर, रीमा कागती और फरहान अख्तर ने किया था। अनन्या के पास कंट्रोल और द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सी शंकरन नायर भी है। जिसमें वह काम कर रही हैं।

शिखर पहाड़िया के साथ तिरुपति में सात फेरे लेंगी जान्हवी कपूर?

जान्हवी कपूर अपनी निजी जिंदगी के बारे में अफवाहों पर ध्यान देने के मूड में नहीं हैं। भले ही शिखर पहाड़िया के साथ उनके रिश्ते ने मीडिया का ध्यान खींचा है, लेकिन अभिनेत्री इसके बारे में ज्यादा बात नहीं करती हैं। इसलिए, जब इंस्टाग्राम पर एक पैपराजी पेज ने साझा किया कि जान्हवी सोने की साड़ी में तिरुपति मंदिर में शिखर के साथ शादी करेंगी, तो अभिनेत्री ने एक छोटी लेकिन प्रफुल्लित करने वाली प्रतिक्रिया के साथ अफवाहों पर विराम लगा दिया। इंस्टाग्राम पर पैपराजी की पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, जान्हवी ने टिप्पणी की, कुछ भी। कई प्रशंसकों ने जान्हवी की टिप्पणी के तहत हंसते हुए चेहरे के इमोटिकॉन के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की। जान्हवी ने अपने रिश्ते के बारे में तब खुलासा किया जब वह पिछले साल कॉफी विद करण के नवीनतम सीजन में दिखाई दीं। शिखर पहाड़िया की बात करें तो वह महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री सुशील कुमार शिंदे के पोते हैं। कथित तौर पर उन्होंने और जान्हवी ने पहले डेट किया और बाद में अज्ञात कारणों से अलग हो गए। यह जोड़ी अब एक साथ वापस आ गई है क्योंकि उन्हें कई बार एक साथ देखा गया है। जान्हवी कपूर और शिखर पहाड़िया ने इस साल की शुरुआत में जनवरी में तिरुपति मंदिर में पूजा की थी। हाल ही में जान्हवी एक कार्यक्रम का हिस्सा बनी थीं। उन्होंने गले में एक चेन भी पहनी थी जिस पर शिखू लिखा हुआ था। यह वह उपनाम है जो उन्होंने कथित बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया को दिया है। काम के मोर्चे पर, जान्हवी कपूर आखिरी बार वरुण धवन के साथ फिल्म बवाल में नजर आई थीं। वह अगली बार मिस्टर एंड मिसेज माही और उलझन में नजर आएंगी।

हाउसफुल 5 में नजर आएंगे अभिषेक

अभिषेक बच्चन हाउसफुल फ्रेंचाइजी की पांचवी किस्त के कलाकारों में शामिल हो गए हैं। इसमें अक्षय कुमार और रितेश देशमुख लीड रोल में हैं। अभिषेक बच्चन फिल्म के तीसरे पार्ट का हिस्सा थे। उनका कहना है कि फिल्म की फ्रेंचाइजी में वापस आना घर लौटने जैसा लगता है। अभिषेक ने कहा, हाउसफुल मेरी पसंदीदा कॉमेडी फ्रेंचाइजी में से एक है, और इसमें वापस आना घर लौटने जैसा महसूस हो रहा है। साजिद नाडियाडवाला के साथ काम करना हमेशा से खुशी की बात रही है। मैं अपने साथी कलाकारों अक्षय और रितेश के साथ सेट पर जमकर मस्ती करने के लिए तैयार हूं। उन्होंने कहा, मैं अपने प्यारे दोस्त तरुण मनसुखानी के साथ फिर से काम करने के लिए बहुत उत्साहित हूं। मैं दोस्ताना के बाद उनके साथ दोबारा काम करने वाला हूं। यह बहुत मजेदार होने वाला है। निर्माता साजिद ने अभिषेक की वापसी की घोषणा की। अगस्त 2024 से यूके में शूटिंग शुरू होने वाली है। साजिद ने कहा, मैं अभिषेक को हाउसफुल फ्रेंचाइजी में वापस लाकर रोमांचित हूं। उनका समर्पण, कॉमिक टाइमिंग और ईमानदारी ही हमारी फिल्म को ऊपर उठाएगी। हाउसफुल 5 का निर्देशन तरुण मनसुखानी ने किया है। यह फिल्म 6 जून को रिलीज होने वाली है।

करीना के साथ फिर काम नहीं करने पर इम्तियाज अली ने की बात

इम्तियाज अली इन दिनों अपनी फिल्म चमकीला की सफलता का जश्न मना रहे हैं। इम्तियाज के निर्देशन में बनी इस फिल्म में दिलजीत दोसांझ ने अमर सिंह चमकीला और परिणीति चोपड़ा ने चमकीला की पत्नी अमरजोत कौर का किरदार निभाया है। इम्तियाज जब वी मेट जैसी सुपरहिट फिल्म भी दे चुके हैं। करीना कपूर खान और शाहिद कपूर अभिनीत यह फिल्म रोमांस का प्रतीक है और आज भी दर्शकों से जुड़ी हुई है। हम प्रशंसक काफी समय से निर्देशक से सीक्वल के बारे में पूछ रहे हैं। जब वी मेट के सीक्वल के बारे में बात करते हुए इम्तियाज अली ने इसके विचार को खारिज कर दिया, लेकिन यह भी कहा कि वह करीना कपूर खान के साथ फिर से काम करना पसंद करेंगे। यह बताते हुए कि ऐसा अभी तक क्यों नहीं हो सका निर्देशक ने आगे कहा कि जब भी कोई फिल्म निर्माता किसी कलाकार के साथ काम करता है तो उस पर यह जिम्मेदारी होती है कि वह केवल उस कलाकार के के लिए ही कुछ भी न करें। विचार यह है कि पुनर्मिलन केवल तभी किया जाए, जब आपने पहले जो किया है उसकी तुलना में कोई बेहतर या पूरी तरह से अलग प्रोजेक्ट हो। इसके साथ ही उन्होंने जब वी मेट का सीक्वल बनाने को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा कि जब वी मेट का सीक्वल क्यों बनाया जाए? यदि लोग फिल्म का आनंद लेते रहना चाहते हैं तो वे पहली फिल्म देखना जारी रख सकते हैं। जब वी मेट 2 बनाने के लिए एक कहानी और एक कारण होना चाहिए, लेकिन देखते हैं क्या ऐसा होता है।

संक्षिप्त खबरें

ट्रेन से गिरकर एक 54 वर्षीय महिला की मौत

बरियारपुर (मुंगेर)। बरियारपुर रतनपुर स्टेशन के बीच ऋषि कुंड हॉल्ट के समीप ट्रेन से गिरकर एक 54 वर्षीय महिला की मौत हो गई। जिसकी पहचान पड़िया निवासी 54 वर्षीय आभा देवी के रूप में की गई है। घटना के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार अप ट्रैक पर ऋषि कुंड हॉल्ट पोल संख्या 349/5 के समीप एक महिला ट्रेन से गिर गई। जिसकी सूचना ग्रामीणों के द्वारा बरियारपुर स्टेशन के आरपीएफ एवं जीआरपी को उपलब्ध कराई गई। सूचना पर बरियारपुर जीआरपी के साथ आरपीएफ के एसआई अनुपम कुमार, एसआई जीके राय घटनास्थल पर पहुंचे एवं मामले की छानबीन प्रारंभ की। इस बीच शव की पहचान कर परिजनों को इसकी सूचना उपलब्ध कराई गई। परिजनों ने बताया कि वह घर से 12:15 बजे के करीब निकली थी। पड़िया कि वह बेटी थी। गोगरी जमालपुर में उनकी शादी हुई थी। उनके दो पुत्र भी है। आरपीएफ एवं जीआरपी ने बताया कि महिला किस ट्रेन से गिरी इसका अभी पता नहीं चल पाया है। मृतका के शव को पोस्टमार्टम हेतु सदर अस्पताल मुंगेर भेज दिया गया है।

दो शराबी गिरफ्तार

बरियारपुर (मुंगेर)। बरियारपुर थाना क्षेत्र के विजयनगर गांव से दो शराबी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। विजयनगर मोड़ के समीप दो शराबी शराब के नशे मे धुर्त होकर पुलिस वाहन को रोकने का प्रयास किया। जब पुलिस गस्ती दल को देख भागने का प्रयास किया। मौके ऐ बरदात पुलिस वल उसे खदेड़कर उसे 100 गज की दुरी से दोनों को पकड़ लिया गया। माउथ ऐनलाइजर से सत्यापन किया गया तो शराब के नशे मे धूर्त मिला। जिसे बरियारपुर थाना प्रांगण मे पुछ ताछ के क्रम मे अपना नाम धर्मेन्द्र कुमार व पंकज कुमार मंडल बताया घर पुछने पर नौवागढी थाना रामनगर जिला मुंगेर बताया जिसे गिरफ्तार कर मंडल कारा मुंगेर भेजा गया।

पीड़ित पिता के लिखित बयान पुलिस ने ट्रक चालक के विरुद्ध किया मामला दर्ज

नवगछिया (भागलपुर)। विगत दिनों बिहपुर थाना क्षेत्र के इंदिरा मंच समीप एनएच 31 पर तेज रफ्तार ट्रक चालक की जबरदस्त टक्कर में बाइक सवार मां और उसके बेटे की इलाज के दौरान हुई मौत मामले में मृत महिला के पति रमेश शर्मा के दिये लिखित बयान के आधार पर बिहपुर थाना पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त ट्रक चालक के विरुद्ध केस दर्ज किया है। वही मिली जानकारी के मुताबिक घटना के बाद पुलिस ने उक्त दुर्घटनाग्रस्त ट्रक को जप्त कर लिया गया था। वही मामले को लेकर बिहपुर थाना के थानाध्यक्ष राहुल कुमार ठाकुर ने बताया केस दर्ज कर संबंधित ट्रक चालक के गिरफ्तारी को लेकर त्वरित कार्यवाई की दिशा में दबिश दी जा रही है।

जिले के चौक चौराहे पर की गई वाटर कूलर की व्यवस्था : डॉ. अजय

भागलपुर। जिले भर में शहरी क्षेत्र के प्रशिद्ध व नामचीन संगठन के रूप में उभरकर सामने आने वाली जीवन जागृति सोसायटी संस्था के द्वारा लगातार जन कल्याण उद्देश्य के मद्देनजर अनेक प्रकार के कार्य करते दिख रही है। इसी बाबत यातायात पुलिस व जीवन जागृति सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार सिंह के नेतृत्व में संस्था के कार्यकताओं द्वारा भीषण गर्मी को देखते हुए जिले के विभिन्न चौक चौराहों पर वाटर कूलर सुविधा मुहैया कराने की शुरूआत की है। मामले को लेकर संस्था के अध्यक्ष डॉ. सिंह ने कहा कि चिलचिलाती धूप व भीषण गर्मी में पेयजल आपूर्ति के मद्देनजर शहर के बीच सड़क किनारे फुटपाथ पर बैठे मोची व अन्य दुकान अपनी पेट के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और ठंडा पानी पीने के लिए तरसते हैं। अब उन्हें ठंढा पानी पीने के लिए मिलेगा। ऐसे लोगों के लिए सरकार ने कोई व्यवस्था नहीं की है इसके लिए गरीब लाचार व असहाय जैसे लोगों के लिए जीवन जागृति सोसायटी के कार्यकर्ताओं की टीम न्योछावर करने को आगे रही है।

शहर के कई रेस्टोरेंट में एक साथ पुलिस की हुई दबिश

भागलपुर। जोगसर थाना क्षेत्र के नागरमल मॉल के समीप एक चर्चित रेस्टोरेंट प्रांगण में पुलिस टीम ने अचानक दबिश दी। इस दौरान पुलिस टीम ने रेस्टोरेंट के ग्राउंड फ्लोर में बनाए एक केबिन रुपी कमरे से कई प्रेमी जोड़ों को रंगेहाथ पकड़ लिया। वही पुलिस ने सभी युगल जोड़ो लो पूछताछ के लिए अपने साथ थाने लेजाया गया है, हालांकि रेस्टोरेंट प्रांगण से पुलिस ने कोई भी आपत्ति जनक सामान की बरामदगी नहीं की है। बता दें कि विगत दिनों से पुलिस को रेस्टोरेंट प्रांगण में संदिग्ध गतिविधि की लगातार सुचना प्राप्त हो रही थी। उक्त सूचना के आलोक में पुलिस टीम ने रणनीति तैयार कर योजनाबद्ध तरीके से दबिश दी थी। इस दौरान पुलिस टीम में काफी संख्या में महिला बल को शामिल कर अचानक ही पुलिस की संयुक्त टीम ने रेस्टोरेंट प्रांगण में धावा बोल दिया।

करोड़ों खर्च करने के बाद चांकेन सिंचाई डैम बेकार हुआ साबित, किसानों के खेत की 1 इंच भी सिंचाई नहीं

प्रातः किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। करोड़ों खर्च करने के बाद चांकेन सिंचाई डैम किसानों के लिए बेकार साबित हुआ है। इस संबंध में बताया जाता है कि राज्य सरकार ने बषो से कई एक बार चांकेन सिंचाई डैम को बनाने के लिए बहुत सारी राशि खर्च की है। इस परियोजना को पूर्ण करने में 35 करोड़ 70 लाख रुपए खर्च हो चुका है।

किसानों ने इस परियोजना के निर्माण के समय जो आशा लगाई थी कि किसानों के खेत में पानी के साथ सिंचाई की व्यवस्था होगी। लेकिन लूट खोसोट की शिकार होकर यह परियोजना बेकार साबित हो गई। रतैठा-मुंडेरी और तारापुर विधानसभा क्षेत्र के करीब आधा दर्जन गांव भी इस सिंचाई योजना से लाभान्वित हो सकता था। लेकिन एक बड़ी राशि 35 करोड़ की राशि खर्च होने के बावजूद भी खड़गपुर और तारापुर के लगभग 57 गांव गांव के किसानों ने खरीफ फसल की सिंचाई में सुविधा उपलब्ध कराने की जो आशा रखी थी इस योजना से वह किसानों के मंसूबे पर पानी फिर गया (किसानों के खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए नहर एवं कैनाल का निर्माण नहीं कराया गया यह आज भी कई वर्षों से चुनावी मुद्दा बनकर रह गया है विभाग इस परियोजना पर 35 करोड़ 70 लाख का खर्च किए लेकिन किसानों की एक एकड़ भूमि का सिंचाई नहीं हो पा रहा है महालेखाकार ने अपनी रिपोर्ट में इस परियोजना को लेकर सवाल खड़े किए हैं उधर तारापुर सिंचाई प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता अनीश रंजन का कहना है कि किसानों के खेत तक पानी पहुंचाने के लिए फिर से नहर और कैनाल बनाने की स्वीकृति राज्य सरकार ने दी है। सिंचाई परियोजना के लिए 14 एकड़ भूमि अधिग्रहण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। लेकिन मात्र दो एकड़ भूमि के अधिग्रहण पर काम शुरू कर दिया गया है। बांध तो बन गया है, लेकिन इस बांध किसानों के खेतों में पानी कैसे उपलब्ध हो इस पर सिंचाई विभाग के अधिकारी ने कोई विचार नहीं किया है। परिणाम स्वरूप यह परियोजना किसानों के लिए बेकार साबित हो रहा है। ज्ञात होगी कि 160 वर्ष पहले दरभंगा महाराज ने किसानों की सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए जमालपुर विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत खड़गपुर के अगिया नदी पर मिट्टी का बांध निर्माण कराया था। नहर की व्यवस्था भी की गई थी। लेकिन समय के अंतराल के साथ-साथ मिट्टी का बांध और नहर दोनों ध्वस्त हो गए। वर्ष 2013 में सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने इस परियोजना पर फिर से काम शुरू किया। बताया जाता है कि इस परियोजना को पूरा करने के लिए विभाग में इसके पहले 1989 के पूर्व मंत्री स्वर्गीय राजेंद्र प्रसाद सिंह ने इसका शिलान्यास भी किया था। उस पर सरकार ने एक अच्छी खासी राशि भी खर्च की थी। लेकिन कांग्रेस की सरकार खत्म होते ही यह परियोजना ठंडी बस्ती में बंद कर दिया गया और पुनः 2013 में इस परियोजना को शुरू किया गया लेकिन आज तक 57 गांव के हजारों किसानों की समस्या आज भी बनी हुई है जिससे किसानों की कोई व्यवस्था करोड़ों खर्च के बाद भी नहीं हो सका है। हर चुनाव में प्रतिनिधि आते हैं और वादा करके चले जाते हैं कि किसानों के खेत तक पानी पहुंचाया जाएगा। लेकिन आज तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं की जा सकी है चुनाव खत्म होने के बाद प्रतिनिधि अपने विधानसभा और लोकसभा के जहां मंदिर में मौज मस्ती करते हैं। वहीं किसान आज भी भगवान भरोसे खेती कर अपने और देश का पालन पोषण कर रहे हैं।

बारिश से आवागमन बाधित, ग्रामीणों में आक्रोश देखने को मिला

प्रातः किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। मंगलवार के देर शाम आई आंधी व बारिश से करहरिया पश्चिमी पंचायत के वार्ड संख्या 9 में पानी बहाव के कारण पार्टिशन दीवार के गिरने से ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त हो गया। पार्टीशन दीवाल के गिर जाने से ग्रामीणों के आवागमन बाधित हो गया इस सम्बन्ध मे स्थानीय ग्रामीण रामानंद पासवान, प्रद्युम्न पासवान ने कहा कि पहले आंधी का प्रकोप हुआ फिर मुसलाधार बारिश शुरू हुआ जो लगभग एक घंटा तक जोर कि आवाज से ग्रामीणों दहशतगर्दी हो गया लोगों का हतप्रभ देखा गया सभी ग्रामीणों में भय व्याप्त हो गया। बारिश के गति थिमी होने का प्रतिक्षा ग्रामीण करने लग। जैसे ही बारिश खत्म हुआ। आम ग्रामीण अपने वार्ड संख्या 09 नम्बर वार्ड जाने को तैयार हुआ तब उन्हें पता चला कि वार्ड नंबर 09 का पहुंच पथ धाराशाही हो चुके हैं। ग्रामीण को सम्पूर्ण रात्रीकालीन समय देखनी पड़ी। ग्रामीण सुबह होने की प्रतिक्षा करते रहे। अस्थाई फूल का निर्माण होने से ग्रामीणों का गमन प्रारंभ हुआ।

मतदाता प्रतिशत को बढ़ाने हेतु मुंगेर पहुंची मैथिली ठाकुर

प्रातः किरण संवाददाता

जिला प्रशासन द्वारा आयोजित मतदाता जागरूकता हेतु संगीत कार्यक्रम एवं अपील के आयोजन में लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के अंतर्गत बिहार राज्य स्वीप आईकॉन लोक गायिका मैथिली ठाकुर यहां जमालपुर पहुंची हुई थी चौथे चरण में आगामी 13 मे को मुंगेर संसदीय क्षेत्र में मतदान होना है जिसमें मतदान प्रतिशत को बढ़ाने के उद्देश्य से उनका कार्यक्रम आयोजित किया गया था उन्होंने अपने अपील में लोगों से अपने घर से निकाल कर मतदान के दिन अपना वोट देने की अपील की इतना ही नहीं मैथिली ठाकुर और मुख्य अतिथि जिला अधिकारी अवनीश कुमार सिंह ने वहां उपस्थित तमाम लोगों को मतदान करने की शपथ भी दिलाई जिसमें कहा गया कि तमाम मतदाता जाति धर्म का भेदभाव भूलकर और बगैर किसी प्रलोभन के अपना वोट अवश्य करेंगे

लोगों की फरमाइश पर गीत प्रस्तुत कर खूब तालियां बटोरी मैथिली ठाकुर ने अपना पहला गीत गाकर लोगों को मतदान करने के प्रति आगाह किया जिसके बाद उन्होंने "पनिया के जहाज से पलटनीयां बनी आईहो पिया" और "जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती हो बसेरा वह भारत देश है मेरा" जीत की प्रस्तुति की उन्होंने लोगों से उनकी पसंद पूछी और उस इस सिलसिले में पहला गीत "राम जी से पूछे जनकपुर की नारी" गाकर खूब तालियां बटोरी बीच-बीच में लोगों को मतदान करने के प्रति प्रेरित भी करती रही

13 मई को अपना मतदान करने के प्रति डीएम ने किया प्रेरित : जिलाधिकारी ने कार्यक्रम का उद्घाटन अन्य अतिथियों के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए कहां की आगामी 13 में को चाहे धूप हो या बारिश हो सभी लोग निश्चित रूप से अपना वोट देने निकलेंगे यहां प्रातः 7:00 बजे से संध्या 6:00 बजे तक मतदान होगा उन्होंने बताया कि चुनाव मैदान में 12 उम्मीदवार डटे हुए हैं आप सभी लोग अपने मन से अपने प्रत्याशी को ईवीएम का बटन दबाकर वोट करेंगे इसी के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है क्योंकि पिछले विधानसभा चुनाव के दौरान जमालपुर शहरी क्षेत्र में मतदान का प्रतिशत काफी कम देखा गया था बाद में उन्होंने स्टेट आईकॉन मैथिली ठाकुर के साथ मिलकर लोगों को मतदान करने की शपथ भी दिलाई।

मंगलवार की रात तेज बारिश के कारण परेशान रहे आयोजक : मंगलवार की रात हुई तेज बारिश के कारण पूरा मैदान गीला हो गया था इतना ही नहीं मैदान में जगह-जगह बारिश का पानी जमा हो गया था आयोजन की तैयारी को लेकर आयोजक द्वारा बेहतर व्यवस्था की गई थी और अतिथियों के लिए कालीन बिछाए गए थे परंतु बारिश के पानी में कालीन भी गीला हो गया था फिर भी आयोजन स्थल को बेहतर बनाने का लगातार प्रयास किया जाता रहा और इस सिलसिले में कई स्थानों पर नए कालीन बिछाए गए श्रोताओं को बैठने के लिए जितनी कुर्सियों का इंतजाम किया गया था श्रोताओं की संख्या कहीं उससे अधिक थी जिसके कारण लोग खड़े होकर भी मैथिली ठाकुर के गीतों का आनंद उठा रहे थे इस सिलसिले में मैथिली ठाकुर के कार्यक्रम के पहले गोपाल और नंदन द्वारा मनभावन गीत प्रस्तुत किए गए गोपाल ने भी मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए कई गीत प्रस्तुत किया इस मौके पर अपर समाहर्ता मनोज कुमार और जिला आईकॉन श्रेया सेन गुप्ता स्वीप कोषांग की कविता चौरसिया कार्यपालक पदाधिकारी विजयशील गौतम प्रखंड विकास पदाधिकारी नंदकिशोर और अंचल अधिकारी विवेक आनंद सहित तमाम अधिकारी मौजूद थे।

डीजे कॉलेज स्थित वज्र गृह का प्रमंडलीय आयुक्त व डीएम ने किया निरीक्षण

प्रातः किरण ब्यूरो

मुंगेर। लोक सभा आम निर्वाचन के चौथे चरण में 28 मुंगेर लोक सभा संसदीय क्षेत्र में होने वाले निर्वाचन की तैयारी अंतिम चरण में चल रही है। मंगलवार को प्रमंडलीय आयुक्त संजय कुमार सिंह एवं जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह द्वारा आरडी एंड डीजे कॉलेज स्थित बने वज्र गृह का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर नगर आयुक्त निखिल धनराज निप्पणीकर , उप मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी देवव्रत मिश्र, उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी सहित अन्य उपस्थित थे। आयुक्त द्वारा वज्र गृह स्थित 28 मुंगेर संसदीय क्षेत्र के सभी विधान सभा क्षेत्र के ईवीएम मशीनों को व्यवस्थित ढंग से रखने, उसकी सुरक्षा, मतगणना हॉल सहित अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी ली गई। जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा उन्हें बताया गया कि वज्र गृह में ईवीएम रख रखाव एवं उसके सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। मुंगेर एवं जमालपुर विधान सभा क्षेत्र के लिए ईवीएम डिस्पैच सेंटर का निर्माण भी यहीं किया गया है। 11 मई को जहां ईवीएम का डिस्पैच किया जाएगा वहीं सभी पीठासीन पदाधिकारियों, दंडाधिकारियों एवं अन्य मतदान कर्मियों को मतदान कार्य हेतु ब्रीफिंग की भी व्यवस्था की गई है। साथ ही 13 मई को मतदान समाप्ति के पश्चात ईवीएम रिसीविंग का कार्य भी आरडी एंड डीजे कॉलेज स्थित वज्र गृह में ही किया जाएगा। ईवीएम डिस्पैच एवं रिसीविंग तथा मतगणना के लिए भी पर्याप्त दंडाधिकारियों एवं कर्मियों की व्यवस्था की गई है। आयुक्त ने वज्र गृह की तैयारियों पर संतुष्टि जाहिर करते हुए निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान कराने का निर्देश दिया।

दो दिवसीय महर्षि मेंहि संत मत कथा का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। प्रखंड क्षेत्र के बड़ौनियाँ गांव स्थित शिव मंदिर में दो दिवसीय महर्षि मेंहि संत मत कथा का आयोजन बुधवार को हो गया। इस संत मत कथा को सुनने के लिए श्रद्धालु एवं अनुयायियों की अच्छी खासी संख्या मौजूद थी। कथा के पहले दिन कथा कहने के लिए मंच पर विराजमान आचार्य प्रमोद बाबा ने अपने प्रवचन के दौरान मनुष्य के आचरण को ही उसका सबसे बड़ा शस्त्र बताया। उन्होंने कहा की मनुष्य का आचरण ही उसकी पहचान होती है। अच्छी आचरण से इस लोक में तो अच्छा स्थान मिलता ही है साथ ही साथ परलोक में भी उच्च स्थान के भागी बनते हैं। ईश्वर के द्वारा मनुष्य को सभी प्रकार की इंद्रियां अच्छे कर्मो के लिए दी गई है परंतु मनुष्य अपनी स्वाभाविक मार्गो से भटक कर अपनी इंद्रियों एवं अपनी आंतरिक ऊर्जा को गलत कार्यों में ही खर्च कर देता है। कोई भी मनुष्य जन्म से अच्छा या बुरा नहीं होता है उस की संगति उसका अचार उसका आचरण उसे अच्छा या बुरा बनता है। उन्होंने मांस और मदिरा के सेवन को आसुरी प्रवृत्ति बताते हुए इससे परहेज करने की बात कही। इस मौके पर श्रद्धालुओं के लिए भंडारे की व्यवस्था भी की गई थी। कार्यक्रम के सफल आयोजन में गोपाल सिंह, अकालू सिंह, मुकेश सिंह, अशोक साह इत्यादि अपना योगदान दे रहे थे।

कोई विरोध करता है, तो पुलिस की आड़ ले दिखाता है कार्रवाई का भय : एबीभीपी

प्रातः किरण संवाददाता

भागलपुर। टीएमबीयू प्रशासन के भ्रष्टाचार निति के विरुद्ध अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के दर्जनों छात्रो के द्वारा हल्लाबोल प्रदर्शन किया। इस दौरान प्रदर्शन कर रहे छात्रों का कहना था कि वर्तमान कुलपति डॉ. जवाहर लाल पर लगातार प्रमाणित हो रहे भ्रष्टाचार के कई आरोपों को प्रत्यक्ष प्रमाण दिख रहा है, जिसके खिलाफ एबिभीपी के नेतृत्व में दर्जनों छात्र छात्राओं ने लगातार दूसरे दिन भी विश्वविद्यालय प्रांगण में जोरदार प्रदर्शन जारी है। ज्ञात हो कि विगत दिनों विद्यार्थी परिषद के दर्जनों कार्यकर्ता विश्वविद्यालय प्रांगण पहुंच कर विश्वविद्यालय प्रशासन के खिलाफ जमकर नारीबाजी करने लगे थे। इसी दौरान मौके पर पहुंची विश्वविद्यालय थाना पुलिस ने तीन विद्यार्थी परिषद के छात्र नेता व कार्यकताओं को हिरासत में ले लिया था। वही दिन भर चले प्रदर्शन के बाद विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं ने देर शाम विद्यार्थी परिषद नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में विश्वविद्यालय के कुलपति का पुतला दहन किया। आपको बता दे कि छात्रों के कई मूलभूत सुविधाओं व विश्वविद्यालय में गलत तरीके से कर्मचारियों की बहाली जैसे विभिन्न मुद्दों को लेकर विद्यार्थी परिषद संगठन के दर्जनों कार्यकताओं ने वर्तमान कुलपति से व्यवस्था सुदृढ़ करने की मांग कर रहे थे। वही छात्रों ने विश्वविद्यालय प्रांगण के जगह जगह पोस्टर चस्पा कर विद्यार्थी परिषद संगठन के बैनर तले छात्रों ने गली गली में शोर है, टीएमबीयू के कुलपति चोर है, चोर कुलपति इस्तीफा दो एवं अन्य नारा के संबंधित स्लोगन लिखे दिखे थे। वही छात्र व कार्यकताओं ने उक्त पोस्टर को विश्वविद्यालय के दीवार पर चिपकाए थे। वही प्रदर्शनकारियों के कहना था कि पूर्व से निर्धारित बिहार सरकार के सात निश्चय योजना के तहत एससी एसटी वर्गो के छात्र एवं सभी वर्गों की छात्रों का निशुल्क नामांकन प्रस्तावित है, एवं बिहार के सभी विश्वविद्यालय में इसे लागू भी किया गया, लेकिन तिलकामांझी विश्वविद्यालय में पिछले सत्र में विद्यार्थी परिषद के आंदोलन को देखते हुए इसे लागू किया गया था, लेकिन फिर अगले सत्र से इस नियम को मोटी रकम वसूल करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय प्रशासन के आदेश पर हटा दिया गया। वही मामले से नाराज विद्यार्थी परिषद संगठन के प्रदेश सह मंत्री हैप्पी आनंद एवं जिला संयोजक रोहित राज ने कहा कि टीएमबीयू के कुलपति पर लगातार वित्तीय अनियमितता बरतने के आरोप लगातार सामने आ रहे हैं, अब तो मुंगेर जिला के विश्वविद्यालय में प्रतिकूलपति रहते हुए जो आईफोन और लैपटॉप की सुविधा सरकारी कर्मचारी होने के नाते उन्हें उक्त सुविधाओं को उपलब्ध कराया गया था, जिसे तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बनने के बाद लैपटॉप और फोन को अपने व्यक्तिगत इस्तेमाल के रख लिया गया है, जो यह पूर्ण रूप से चोरी ही नहीं बल्कि यह खुलेआम डकैती का मामला बनाया जा सकता है। आज कुलपति के आवास से दर्जनों लैपटॉप और आईफोन प्राप्त हुआ है जो मुंगेर विश्वविद्यालय के कर्मचारियों का हक मारी की गई है, ऐसे हथकंडे अपना कर कुलपति छात्रों के लिए क्या सीख देना चाहते हैं। विश्वविद्यालय में बतौर कुलपति के पद पर आने के बाद वह अपने आप को संविधान निमार्ता से भी ऊपर समझने की भूल कर रहे हैं, वो कई रिक्त पदों का गलत तरीके से सृजन कर विश्वविद्यालय में आने के बाद उन्होंने मोती रकम वसूल कर नियुक्ति की गई है जो गैर संवैधानिक है। आगर पद की बात करे तो मीटिंग ऑफिसर, पीआरओ एवं अन्य कई ऐसे पदों का असंवैधानिक रूप से बहाल किया है जो गलत है। इस पर कुलपति को जवाब देना पड़ेगा, अपने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए अपने परिवार के लोगों की ही नियुक्ति क्यों और कैसे की गई, इस पर भी कुलपति को जवाब देना पड़ेगा। वही उन्होंने कहा कि आज विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं ने प्राण लिया है जब तक कुलपति इन सभी बातों का जबाब नही दे देते तबतक आंदोलन निरंतर जारी रहेगा।

25 मई तक सभी नालों की उड़ाही करने के दिए निर्देश : डीएम

प्रातः किरण संवाददाता

भागलपुर। जिलाधिकारी कार्यालय बेस में एक बैठक के क्रम में जिलाधिकारी डॉ. नवल किशोर चौधरी के द्वारा भागलपुर नगर निगम के सभी क्षेत्र इलाके के नाला उड़ाही व साफ सफाई करवाने को लेकर कई आवश्यक दिशा निर्देश दिये हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि वर्षा के दौरान शहर के संभावित जगहों पर होने वाले जल जमाव के मद्देनजर शहर के सभी प्रमुख नालों की उड़ाही आगामी 14 मई तक तथा सभी वार्डो के नालों की साफ सफाई को आगामी 25 मई तक कर लेने का निर्देश नगर आयुक्त नितिन कुमार सिंह को दिये है।

इसी क्रम में जिलाधिकारी ने कहा कि इसके लिए नगर विकास एवं आवास विभाग यदि सहमति प्रदान करता है तो भाड़े पर भी अतिरिक्त सफाई कर्मी रखकर नालों की उड़ाही ससमय कर ली जाए, ताकि बरसात के दौरान शहर में जल जमाव की स्थिति उत्पन्न न हो सके। वही उन्होंने संभावित स्थानों पर जल जमाव की समस्या से निपटने के लिए उच्च क्षमता वाले पंप सेट क्रय कर लिया जाने के भी निर्देश दिये हैं। इस क्रम में संबंधित पदाधिकारी द्वारा बताया गया है कि भैरवा तालाब के निमार्णाधीन रहने के कारण पानी की निकासी की समस्या उत्पन्न हो गई है। पूर्व में शहर का जल संबंधित भैरवा तालाब में ही जाता था। जिसे लेकर जिलाधिकारी ने कहा कि भैरवा तलब का इनलेट फिल्टरयुक्त बनाना सुनिश्चित होगा, ताकि तालाब में गाद या कचरा जमा ना हो सके।

इसके साथ ही आउटलेट कहां होगा इसे भी चिन्हित करना होगा ये सुनिश्चित कर लिया जाय। साथ ही उन्होंने कहा कि वाई सैप में इनलेट डिजाइन करना होगा, ताकि तालाब में कचड़े के भर जाने पर पहले चैनल बंद कर दूसरा चैनल पानी को बाहर ले जाने के लिए चालू किया जा सके। बैठक में बताया गया की नाला उड़ाही के दौरान अतिक्रमण हटाओ दस्ता साथ-साथ चलती है। जिलाधिकारी ने कहा कि अतिक्रमणकारियों का वीडियोग्राफी एवं फोटोग्राफी कराकर त्वरित उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

वही उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्र में नालों की मिसिंग लिंक की जानकारी प्राप्त करने हेतु सभी वार्ड पार्षदों के साथ नगर आयुक्त को बैठक कर लेने का भी निर्देश दिये है। साथ ही उन्होंने कहा कि वार्ड पार्षद अपने वार्ड की जनता से जानकारी लेकर नालों की मिसिंग लिंक की सूची उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। इस दौरान सुझाव दिया गया कि मारवाड़ी कॉलेज के छात्रावास के समीप जल जमाव की समस्या बनी रहती है, जिससे निपटने के लिए विश्वविद्यालय परिसर में एक स्थाई पंपिंग स्टेशन बनाकर जल की निकासी की जा सकती है। इसके लिए 15 वर्ग फीट जमीन की आवश्यकता होगी। जिलाधिकारी ने नगर आयुक्त को विश्वविद्यालय से समन्वय स्थापित कर पंपिंग स्टेशन बनवाने के निर्देश दिए है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि शहर के सभी ह्यूम पाइप एवं कल्वर्ट की जांच करवा ली जाए, ताकि जल निकासी में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न रह सके। इस मौके पर संयुक्त निदेशक जनसंपर्क नागेंद्र कुमार गुप्ता के अलावा अन्य निगम संबंधित पदाधिकारी मौजूद थे।

कुख्यात अपराधी गुड्डा यादव चढ़ा पुलिस के हत्थे : एसपी

भागलपुर। पुलिस जिला परिक्षेत्र के नवगछिया पुलिस जिला अंतर्गत कदवा दियरा क्षेत्र के नवीनगर झर- कहवा के गुड्डा यादव को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उक्त आशय की जानकारी एसपी कार्यालय बेस में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान एसपी पुरन झा ने जानकारी साझा करते हुए कहा कि वांछित कुख्यात अपराधी गुड्डा यादव के खिलाफ हत्या का प्रयास एवं आर्म्स एक्ट के कई कांड दर्ज हैं। उन्होंने कहा कि उक्त अपराधी द्वारा लगातार कदवा क्षेत्र के किसानों को हथियार का भय दिखाकर रंगदारी वसूलने का काम किया करते थे। वह तरबूज, खीरा, परबल आदि व्यवसायियों व किसानों से भी रंगदारी वसूलता चल था, वही दसहत फैलाने की नियत से गोलीबारी करने की भी शिकायत मिली रही थी। वही कांड की गंभीरता को देखते हुए अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई थी।

मृत मां और बेटे के शव का गंगा घाट पर हुआ दाह संस्कार

प्रातः किरण संवाददाता

नवगछिया (भागलपुर)। सोमवार शाम बिहपुर थाना क्षेत्र एनएच 31 इंदिरा मंच समीप बेकाबू ट्रक की चपेट में मोटरसाइकिल सवार मां बेटे की मौत के बाद मृतक के घर कोहराम मच गया। मंगलवार को दोनो का शव अनुमंडल अस्पताल नवगछिया में पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने परीजन को सौंप दिया। शव घर पहुंचते ही तीनो पुत्रियां व घरवाले दहाड़ मारकर रोने चिल्लाने लगे। गांव में मयूषी छाई हुई है। मृतक पति रमेश शर्मा बेसुध हो अपने मृत पत्नी व बैठे के चेहरे को निहार रहे थे। वही दोनों के शव के अंतिम संस्कार के लिए स्वजनों व ग्रामीणों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। दोनों के शव का स्थानीय गंगा घाट पर विधिवत रूप से दाह संस्कार किया गया। वही पति रमेश शर्मा ने अपनी पत्नी मृतिका माला देवी को मुखाग्नि दी तो वही इकलौते बेटे मृत कुंदन को उसके चचेरे भाई सुमन ने मुखाग्नि की विधि प्रक्रिया के साथ अंतिम विदाई दी। इस हृदयविदारक घड़ी के पल को देख कर गंगा घाट पर मौजूद सभी लोगों की आंखें नम हो गई थी। बता दें कि सोमवार शाम मृतक कुंदन कुमार अपनी मां के साथ नारायणपुर स्थित एक निजी अस्पताल से इलाज कराकर बाइक से अपने माँ को घर लेकर वापस लौट रहा था, इसी क्रम में एनएच 31 इंदिरा मंच के समीप सामने से बेकाबू ट्रक के चपेट में आकर दोनों गम्भीर रूप से जख्मी व घायल हो गये थे। वही स्थानीय पुलिस ने मौके पर पहुंच दोनों को गंभीर हालत में त्वरित इलाज के लिए अनुमंडल अस्पताल में भर्ती कराया था।

दो दुकानदारों के बीच जमकर हुई चाकूबाजी

भागलपुर। के तिलकामांझी थाना क्षेत्र अंतर्गत भीखनपुर गुमटी नंबर 2 के समीप दो मीट दुकानदार किसी बात को लेकर आपस में भीड़ गए इस दौरान दोनों के बीच जमकर चाकूबाजी किये जाने की सूचना सामने आई है। वही घटना को लेकर सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक बताया जा रहा है कि स्थानीय मुर्गा दुकानदार मो. शोराब खुरेशी के गर्दन पर चाकू लगने से गम्भीर रूप से घायल हो गया है। जिससे देख स्वजनों ने उसे जख्मी व गंभीर हालत में त्वरित इलाज के लिए आनन फानन में सदर अस्पताल लेजाया गया है। वही दूसरी तरफ पुरे मामले को लेकर घायल के पिता मो. अख्तर कुरेशी ने बताया कि दुकान के सामने पार्किंग को लेकर विवाद हुआ है। वही उन्होंने कहा कि अजमेरी मीट के दुकान मालिक बबलू कुरैशी कई अरसे से मीट दुकान चला रहे है, जहां मीट खरीदारी को लेकर दुकान के बाहर काफी भीड़ जमा लगी रहती है। वही आज भी कस्टमर की गाड़ी उनके दुकान के आगे में लगा दिए जाने से उनके दुकान के अन्य खरीदारों व ग्राहकों को समस्या होती है, इसी बात की चर्चा लेकर जब उन्होंने की तो इस बात पर बहस शुरू हो गई और इसी क्रम में दुकानदार बबलू ने तेज धारदार चाकू से मो. शोराब के ऊपर प्रहार कर दिया जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी व घायल हो गया है। वही घटना को लेकर स्थानीय लोगों द्वारा जानकारी दिए जाने के बाद 112 की पुलिस फौरन घटना स्थल पर पहुंची और घायल दुकानदार मो. शोराब को त्वरित इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं पीड़ित पक्ष का कहना है कि वे लोग इस घटना के बाद काफी भयभीत है और पास दुकान चलाने से डर रहे हैं, साथ ही उन्होंने स्थानीय थाना पुलिस से जानमाल की रक्षा को लेकर मांग की गुहार लगाई है।

जिला विधिक संघ चुनाव के अंतिम दिन 119 उम्मीदवारों ने किया पर्चा दाखिल

भागलपुर। व्यवहार न्यायालय के जिला विधिक संघ के निर्वाचन की तैयारी को लेकर सारी तैयारी पूरी कर ली गई है। निर्वाचन को लेकर आयोग द्वारा आगामी 18 मई को 11 अलग-अलग पदों के लिए चुनाव संपन्न किया जाना सुनिश्चित है। चुनावी मैदान में प्रत्याशी का किस्मत का फैसला कुल 2791 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर करेंगे। हालांकि निर्वाचन को लेकर सभी प्रत्याशी अपनी अपनी उम्मीदवारी सुनिश्चित करने को लेकर नामांकन पर्चा दाखिल करने में लगे हैं। वही डीबीए प्रांगण में नामांकन प्रक्रिया के अंतिम दिन कुल 119 उमीदवारों ने निर्वाचित पदाधिकारी मोहम्मद समसुद्दीन के समक्ष अपना पर्चा दाखिल कराया है। गौरतलब हो कि अध्यक्ष पद के लिए कुल सात उम्मीदवारों ने अपना नामांकन कराया है, जबकि उपाध्यक्ष के लिए 16, महासचिव 10, संयुक्त सचिव 23, सहायक सचिव 15, कोषाध्यक्ष 5, वरीय सदस्य 10, अंकेक्षक 4, कार्यकारिणी सदस्य 20, पुस्तकालय समिति 3, निगरानी समिति 6 पदों के लिए अपनी अपनी उम्मीदवारी पेश की है। मामले को लेकर डीबीए चुनाव में महासचीव पद को लेकर चर्चा जोरों पर चल रहा है। जहां एक तरफ निवर्तमान महासचीव विमल कुमार विमल और दूसरी तरफ एक्साइज पीपी भोला मंडल के बीच कांटे की टक्कर मानी जा रही है। वही सभी प्रत्याशी द्वारा अपने अपने जीत को लेकर दावा करते हुए दिख रहे हैं तो वही प्रत्याशी अपनी रणनीति के तहत मतदाताओं को अपने पक्ष मतदान करने के लिए तरह तरह के प्रलोभन भी दिये जा रहे हैं। अधिवक्ताओ के लिए आज से ही लंगर की व्यवस्था की गई है, तो कहीं कही प्रत्याशी अपने मतदाता अधिवक्ता के लिए ठंडे पेयजल व्यवस्था करते दिख रहे हैं। किस की जीत का डंका बजेगा यह सुनिश्चित कर पाना मुश्किल है लेकिन मतदाता के मन के भीतर कई तरह के सवाल खड़े हो चर्चा का माहौल बना दिख रहा है, ये वास्तविक तौर पर प्रत्यक्ष रूप में दिखना अभी शेष है जो आने वाले वक्त की बताएगा कि मतदाता की मनसा क्या है।

दिल्ली का नॉकआउट शुरू तो सीएसके-हैदराबाद की भी गारंटी नहीं...

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल 2024 के प्लेऑफ के लिए क्वॉलिफाइ करने की दौड़ में ऑफिशली अभी तक सभी 10 टीमें बनी हुई हैं। सबसे आखिरी नंबर पर चल रही गुजरात टाइटंस और मुंबई इंडियंस के लिए भी मौका है। आईपीएल 2024 अब धीरे-धीरे आखिरी चरण की ओर बढ़ रहा है। टीमों के अधिकतम 3-3 मैच बचे हुए हैं तो रोचक बात यह है कि अभी हर टीम के प्लेऑफ में पहुचंने की संभावना बची हुई है। यानी किसी भी एक स्पॉट की टीम ऑफिशली कन्फर्म नहीं हुई है। एक दिन पहले रोमांचक मुकाबले में दिल्ली से राजस्थान हार गई। अगर वह जीतती तो वह क्वॉलिफाइ कर लेती, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। अब देखा जाए तो आईपीएल 2024 प्लेऑफ का गेम पूरी तरह से उल्टा-पुल्टा हो चुका है। अब कौन सी टीम कैसे टॉप-4 में पहुंच सकती है।

सभी टीमों का आईपीएल 2024 प्लेऑफ समीकरण

सभी टीमों की पॉइंट्स टेबल में स्थिति

क्रम	टीम	मैच	जीत	हार	टाइ	नेट रन रेट	पॉइंट्स	नेट रन रेट
1	केकेआर	11	8	3	0	0	16	1.453
2	आरआर	11	8	3	0	0	16	0.476
3	सीएसके	11	6	5	0	0	12	0.7
4	एसआरएच	11	6	5	0	0	12	-0.065
5	डीसी	12	6	6	0	0	12	-0.316
6	एसएसजी	11	6	5	0	0	12	-0.371
7	आरसीबी	11	4	7	0	0	8	-0.049
8	पीबीकेएस	11	4	7	0	0	8	-0.187
9	एमआई	12	4	8	0	0	8	-0.212
10	जीटी	11	4	7	0	0	8	-1.32

कोलकाता नाइटराइडर्स और राजस्थान रॉयल्स के पास टॉप पर रहने का मौका

केकेआर फिलहाल अंक तालिका में शीर्ष पर है, जबकि राजस्थान रॉयल्स उसके बराबर 16 अंक लेकर नेट रन रेट के आधार पर दूसरे नंबर पर है। अगर वे बचे हुए 3 में से एक में भी जीत दर्ज करते हैं तो प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की कर लेंगे। यही वो दो टीम हैं, जिनके पास 18 अंक या उससे अधिक अंक लेने का मौका है। जबकि 3 अन्य टीमें अधिकतम 18 अंक तक पहुंच सकती हैं।

चेन्नई सुपर किंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपरजायंट्स की एक जैसी स्थिति

चेन्नई सुपर किंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपर जायंट्स टीम 11-11 मैचों में 6-6 जीत के साथ 12 अंक लेकर क्रमशः तीसरे, चौथे और छठे नंबर पर है। इन तीनों के पास बचे हुए 3 मैचों में अधिकतम 18 अंक तक पहुंचने का मौका है। हालांकि, यह देखना रोचक होगा कि प्लेऑफ से लगभग बाहर हो चुकी गुजरात टाइटंस, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और शानदार फॉर्म में चल रही राजस्थान रॉयल्स से चेन्नई कैसे निपटती है, जबकि हैदराबाद को लखनऊ, गुजरात और पंजाब से भिड़ना है। दूसरी ओर, लखनऊ को हैदराबाद, दिल्ली और मुंबई से भिड़ना है।

दिल्ली कैपिटल्स के लिए नॉकआउट हो चुका है शुरू

दिल्ली कैपिटल्स फिलहाल अंक तालिका में छठे स्थान पर है। यदि वे अपने शेष तीनों मैच जीत जाते हैं तो वे अधिकतम 16 अंक तक पहुंच सकते हैं। हालांकि, इससे भी उन्हें प्लेऑफ में जगह की गारंटी नहीं मिलेगी। सीएसके, एसआरएच और एलएसजी भी आसानी से 16 अंक तक पहुंचते दिख रहे हैं। ऐसे में इन टीमों के बीच नेट रन रेट का खेल होगा, उसमें जो बेहतर होगा उसी की किस्मत खुलेगी। अगर दिल्ली मैच हारता है तो उसका प्लेऑफ में पहुंचना लगभग खत्म हो जाएगा या फिर आरसीबी की तरह अन्य टीमों के संभावित परिणामों पर निर्भर रहना होगा।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, पंजाब किंग्स और गुजरात टाइटंस बुरी फंसी हुई हैं

आरसीबी, पीबीकेएस और जीटी बहुत बुरी तरह से फंसी हुई हैं। शेड्यूल को देखते हुए आरसीबी और पीबीकेएस में से केवल एक टीम 14 अंक तक पहुंच सकती है, क्योंकि वे एक मैच में एक-दूसरे का सामना करेंगे। सभी तीन टीमें अपने शेष तीन मैचों में कम से कम दो जीत के साथ 12 अंक तक पहुंच सकती हैं। ऐसे में उनका खेल तो खत्म ही समझिए। हालांकि, अगर सीएसके मैच जीटी को हरा देती है तो एमआई के साथ-साथ सभी तीन टीमें बाहर हो जाएंगी, क्योंकि एसआरएच/एलएसजी और सीएसके में से कोई एक 14 अंक तक पहुंच जाएगा।

मुंबई इंडियंस के पास प्लेऑफ का मौका, लेकिन उम्मीदें असंभव

मुंबई इंडियंस फिलहाल अंक तालिका में नौवें स्थान पर है। दो मैच बचे हैं और प्लेऑफ के लिए क्वॉलिफाइ करने के लिए उन्हें बेहतर नेट रन रेट के हिसाब से दोनों मैच जीतने होंगे। हालांकि, यदि ष्टस्य मैच 59 में त्ज्ञ को हरा देती है तो मुंबई बाहर हो जाएगी, क्योंकि एसआरएच/एलएसजी और सीएसके में से कोई भी 14 अंक तक पहुंच जाएगा। इसके अलावा उन्हें स्त्रा के कम से कम दो गेम जीतने, एलएसजी के सभी गेम हारने, डीजी से एक से अधिक गेम नहीं जीतने और पीबीकेएस, आरसीबी और त्ज्ञ से दो से अधिक मैच नहीं जीतने की अपेक्षा होगी। यह गणितीय रूप से आसान नहीं दिख सकता है, लेकिन असंभव जैसा है।

यह वो खिलाड़ी, जिन्होंने टी-20 विश्व कप 2 अलग-अलग देशों के लिए खेला

यूएस (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए पाकिस्तान जैसी बड़ी टीमों को छोड़ दिया जाए तो लगभग हर देश ने अपने-अपने 15-15 प्लेयर्स की लिस्ट जारी कर दी है। किसी भी बदलाव के लिए आखिरी तारीख 25 कई है, जबकि जून में टूर्नामेंट होना है। एक ऐसा खिलाड़ी भी मेगा इवेंट में नई टीम के साथ दिखाई देगा, जो पहले किसी अन्य टीम से खेल चुका है।

आईसीसी मेंस टी20 विश्व कप 2024 शुरू होने में कुछ ही दिन बचे हैं। कैरिबियन और यूएसए की मेजबानी में आयोजित होने वाले इस महासंग्राम के लिए अमेरिका ने अपने प्लेयर्स की लिस्ट दे दी है। उसने एक ऐसे खिलाड़ी को टीम में शामिल किया है, जो पहले किसी और देश से विश्व कप खेल चुका है। जी हां, हम बात कर रहे हैं विस्फोटक बल्लेबाज कोरी एंडरसन की। बता दें कि इस बार टी-20 विश्व कप में ग्रुप स्टेज में 20 टीमें हिस्सा लेने वाली हैं, जो इतिहास में किसी आईसीसी टूर्नामेंट के मुख्य ड्रॉ में सबसे अधिक है। ग्रुप स्टेज के बाद 'सुपर 8' स्टेज होगा और फिर विजेता का निर्धारण करने के लिए नॉकआउट होगा। यूएस ने पहली बार आईसीसी टूर्नामेंट में भाग लेने जा रही है।

डर्क नैन्स (नीदरलैंड और ऑस्ट्रेलिया) - बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज को इंग्लैंड और वेल्स में 2009 के विश्व टी20 के लिए ऑस्ट्रेलिया ने नजरअंदाज कर दिया था। इसके बाद उन्हें नीदरलैंड्स ने अपनी टीम से खिलाया, जबकि 2010 में अगले संस्करण में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व किया।

रोलोफ वैन डेर मेरवे (दक्षिण अफ्रीका और नीदरलैंड्स) - 2015 में अपनी टीम बदलने से पहले वैन डेर मेरवे ने 2009 और 2010 के विश्व टी20 टूर्नामेंट में दक्षिण अफ्रीका का प्रतिनिधित्व किया था। उसके बाद से उन्होंने 2016, 2021 और 2022 के संस्करणों में नीदरलैंड्स का प्रतिनिधित्व किया है।

डेविड विसे (दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया) - विसे ने पहली बार 2016 में दक्षिण अफ्रीका के साथ टी20 विश्व कप में डेब्यू किया था। 38 वर्षीय इस खिलाड़ी ने 2021 में नामीबिया के लिए पदार्पण किया और 2021 और 2022 टी20 विश्व कप में देश का प्रतिनिधित्व किया।

मार्क चैपमैन (हॉन्गकॉन्ग और न्यूजीलैंड) - चैपमैन ने 2014 में हॉन्गकॉन्ग के खिलाड़ी के रूप में अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया और इसके बाद उन्हें 2014 विश्व टी20 के लिए हॉन्गकॉन्ग की टीम में शामिल किया गया, जो किसी प्रमुख आईसीसी टूर्नामेंट में हॉन्गकॉन्ग की पहली उपस्थिति भी थी। हालांकि, 2018 से, वह ब्लैककैप्स का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जो 2021 और 2022 संस्करणों में शामिल हैं। वह 2024 टी20 विश्व कप में भी खेलेंगे।

कोरी एंडरसन (न्यूजीलैंड और यूएसए) - इस सूची में न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व करने वाले एक और खिलाड़ी एंडरसन ने 2014 और 2016 के संस्करणों में कीवी के लिए खेला। इस साल की शुरुआत में उन्होंने यूएसए क्रिकेट टीम के लिए डेब्यू किया और उन्हें उस टीम में शामिल किया गया है जो 2024 में घरेलू टी20 विश्व कप में भाग लेगी।

सैमसन पर मैच फीस का 30 प्रतिशत जुर्माना

आईपीएल की आचार संहिता का उल्लंघन किया
दिल्ली के खिलाफ अंपायर के फैसले पर जताई थी असहमति

नईदिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन पर मैच फीस का 30 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। सैमसन पर यह फाइन मंगलवार को अरुण जेटली स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में आईपीएल की आचार संहिता का उल्लंघन करने के लिए लगाया गया है। सैमसन को आचार संहिता के आर्टिकल 2.8 के तहत लेवल 1 के अपराध का दोषी पाया गया, जो अंपायर के फैसले पर असहमति दिखाने से संबंधित है। उन्होंने अपराध स्वीकार कर लिया और मैच रेफरी की सजा स्वीकार कर ली।

होप के विवादित कैच से आउट हुए सैमसन

राजस्थान के कप्तान संजू सैमसन शाई होप के बाउंड्री पर बेहतरीन कैच लेने के बाद आउट हुए। 16वें ओवर की चौथी बॉल मुकेश कुमार ने गुड लेंथ पर फेंकी, सैमसन ने लॉन्ग ऑन की दिशा में शॉट खेला। यहां होप ने कैच पकड़ा लेकिन इस दौरान पैर बाउंड्री के बेहद करीब नजर आया। थर्ड अंपायर ने रिप्ले देखा लेकिन कैच को क्लीन माना और सैमसन आउट करार दिए गए। कैच क्लीन करार दिए जाने के बाद सैमसन अंपायर से बहस करते नजर आए कि फील्डर का पैर बाउंड्री को छू रहा था। हालांकि अंपायर ने अपना फैसला कायम रखा और सैमसन को पवेलियन लौटना पड़ा। उन्होंने 46 बॉल पर 86 रन बनाए।

दिल्ली ने राजस्थान को 28 रन से हराया

दिल्ली ने होमग्राउंड पर टॉस हारकर पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 221 रन बनाए। जवाब में राजस्थान 20 ओवर में 8 विकेट पर 201 रन ही बना सकी। खलील अहमद, मुकेश कुमार और कुलदीप यादव ने दो-दो विकेट लिए। आरआर से संजू सैमसन ने 46 बॉल पर 86 रन की पारी खेली। रियान पराग ने 27 और शिवम दुबे ने 25 रन बनाए। डीसी से ओपनर जैक फ्रेजर-मैगर्क (50 रन) और अभिषेक पोरेल (65 रन) ने अर्धशतक जमाए। ट्रिस्टन स्टब्स ने 41 रन बनाए। राजस्थान से रविचंद्रन अश्विन ने 3 विकेट चटकाए। युजवेंद्र चहल, संदीप शर्मा और ट्रेंट बोल्ट को एक-एक विकेट मिला।

पंजाबी बोलते नजर आए विराट कोहली, युवा क्रिकेटरों के साथ मजाक करते वीडियो वायरल

बेंगलूर (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली दुनिया भर के युवाओं के लिए एक आदर्श रहे हैं। विभिन्न आयु समूहों में फैले वैश्विक फैन बेस के साथ कोहली को क्रिकेट जगत से प्रशंसा मिली है। इंडियन प्रीमियर लीग के मौजूदा संस्करण में कोहली सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों में से एक रहे हैं और वर्तमान में 11 मैचों में 542 रन के साथ सीजन में सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। आईपीएल 2024 में पंजाब किंग्स के खिलाफ आरसीबी के महत्वपूर्ण मुकाबले से पहले धर्मशाला में कोहली ने प्रशिक्षण सत्र के दौरान पसीना बहाया जिसके बाद साथी युवा क्रिकेटरों के साथ उनकी बातचीत का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। कोहली को युवा खिलाड़ियों के साथ अचानक सत्र में शामिल होते हुए ऑटोग्राफ देते देखा जा सकता है। कोहली इस पूरे साल रॉयल चैलेंजर्स के लिए प्रमुख खिलाड़ी रहे हैं, हालांकि टीम ने अपने अभियान की निराशाजनक शुरुआत की और आधे रास्ते तक पूरे सीजन में केवल एक जीत हासिल की। आरसीबी ने तब से मजबूत वापसी की है और वर्तमान में तीन मैचों की जीत की लय में है। टीम 11 मैचों में चार जीत के साथ आरसीबी 8 अंकों के साथ अंक तालिका में सातवें स्थान पर है।

इस वर्ष उनके शानदार प्रदर्शन के बाद कोहली को टी20 विश्व कप के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम में भी नामित किया गया था। हालांकि भारत की एकादश में उनकी बल्लेबाजी की स्थिति पर सस्पेंस बना हुआ है। जबकि कई लोगों का मानना ????है कि कोहली को मार्की टूर्नामेंट में रोहित शर्मा के साथ ओपनिंग करनी चाहिए। दोनों ने प्रारूप में केवल एक बार ओपनिंग की है। वहीं कुछ लोग चाहते हैं कि भारत का यह महान खिलाड़ी क्रम में अपना तीसरा स्थान बरकरार रखे। आरसीबी की प्लेऑफ की आकांक्षाओं अभी भी जीवित हैं।

टी-20 इंटरनेशनल मैच में मचा तूफान, 6 बल्लेबाज 0 पर आउट

टोक्यो (एजेंसी)। टी20 इंटरनेशनल मुकाबले में उस समय तूफान मचता नजर आया, जब एक टीम ने छक्कों और चौकों की बरसात करते हुए रनों का अंबार खड़ा कर दिया। वहीं दूसरी टीम ने ताश के पत्तों की तरह अपने विकेट गंवा दिए। टीम के 6 बल्लेबाज बिना खाते खोले ही पवेलियन लौट गए। टीम का टॉप स्कोरर बल्लेबाजों ने मात्र चार रन ही बनाए। टी20 इंटरनेशनल मैच में यह स्कोरबोर्ड देखकर आपका सिर घूम जाएगा।

205 रन से हारी मंगोलिया टीम - दरअसल, यह गजब मुकाबला मंगोलिया और जापान के बीच हुए टी20 इंटरनेशनल मैच में देखने को मिला। मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए जापान की टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 217 रन बना दिए। टीम के टॉप रन स्कोरर ने 69 रन की पारी खेली। जवाब में मंगोलिया की पूरी टीम मात्र 12 रन ही सिमट गई। पूरी टीम के बल्लेबाज मात्र 8.2 ओवर में ही ढेर हो गए। जापान ने 68 गेंदें रहते 205 रन से यह मैच अपने नाम कर लिया। एक गेंदबाज ने इस मैच में 5 विकेट भी चटकाए।

मात्र 12 रनों पर ही सिमट गई पूरी टीम - बता दें कि मंगोलिया की टीम जापान के दौरे पर है, जहां दोनों के बीच 7 टी20 मैचों की सीरीज खेली जा रही है। दूसरे मैच में मंगोलिया टीम के छह बल्लेबाज बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गए। बाकी 4 बल्लेबाज- 2, 1, 4 और 2 रन बनाकर आउट हुए जबकि 11वें नंबर का बल्लेबाज बिना खाता खोले नाबाद रहा। मंगोलिया की पूरी टीम इस मैच में मात्र 12 रनों पर ही सिमट गई, जोकि अभी तक के टी20 इंटरनेशनल इतिहास में किसी भी टीम द्वारा बनाया गया दूसरा सबसे छोटा स्कोर है।

दूसरा सबसे कम टी20 स्कोर - बताते चलें कि इससे पहले साल 2023 में आइल ऑफ मैन टीम स्पेन के खिलाफ मात्र 10 रन पर ही ढेर हो गई थी। स्कोर का पीछा करते हुए स्पेन ने 2 गेंदों में यह मैच जीत लिया था। अब दूसरा सबसे छोटा टी20 इंटरनेशनल स्कोर मंगोलिया के नाम दर्ज हो गया है। वहीं, तीसरे स्थान पर टर्की की टीम है, जिसने टी20 इंटरनेशनल इतिहास का तीसरा कम स्कोर बनाया है। 2019 में यह टीम क्रेच रिपब्लिक के खिलाफ मात्र 21 रन ही बना पाई थी।

टी20 विश्व कप

पापुआ न्यू गिनी ने किया 15 सदस्यीय टीम का ऐलान, इस 36 वर्षीय को मिली कप्तानी

पापुआ न्यू गिनी (एजेंसी)। पापुआ न्यू गिनी ने टी20 विश्व कप 2024 के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की जिसकी कमान 36 साल के अनुभवी असद वाला को सौंपी गई है। उन्होंने 2021 टी20 विश्व कप में भी यह भूमिका निभाई थी। असद नौ अन्य खिलाड़ियों और जैक गार्डनर के साथ 2021 में ओमान और यूएई में हुए टूर्नामेंट की टीम का भी हिस्सा थे।

ऑल राउंडर सीजे अमिनी को उप कप्तान बनाया गया है जबकि 20 साल के स्पिनर जॉन केरिको टीम के सबसे युवा खिलाड़ी हैं। पापुआ न्यू गिनी ने पूर्वी एशिया-प्रशांत क्वालीफार जीतकर दूसरी बार टी20 विश्व कप में जगह बनाई है। टीम अपने अभियान की शुरुआत दो जून को गयाना में वेस्टइंडीज के खिलाफ ग्रुप सी मुकाबले के साथ करेगी।

पापुआ न्यू गिनी की टीम इस प्रकार है - असद वाला (कप्तान), सीजे अमिनी, एली नाओ, चाड सोपर, हिला वेरे, हिरी हिरी, जैक गार्डनर, जॉन कारिको, काबुआ वागी मोरिया, किपलिंग डोरिगा, लेगा सियाका, नॉर्मन वनुआ, सेमा कामिया, सेसे बाउ और टोनी उरा।

दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ हार पर बोले संगकारा

सैमसन के आउट होने के बावजूद हमें मैच जीतना चाहिए था

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के मुख्य कोच कुमार संगकारा का कहना है कि कप्तान संजू सैमसन के आउट होने के बाद टीम मुश्किल स्थिति में थी लेकिन उसे फिर भी यहां दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आईपीएल मैच जीतना चाहिए था। दिल्ली के 222 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सैमसन 46 गेंद में 86 रन बनाकर पवेलियन लौटे। उनके आउट होने के बाद रॉयल्स को 27 गेंद पर 60 रन की दरकार थी लेकिन टीम मंगलवार रात 20 रन से हार गई। रॉयल्स की टीम अगर जीत दर्ज करती तो प्ले ऑफ में उसकी जगह सुनिश्चित हो जाती जबकि दिल्ली की टीम नॉकआउट की दौड़ से बाहर हो जाती।

संगकारा ने कहा, 'उसके आउट होने के बावजूद हमें शायद यह मैच जीतना चाहिए था। उन्होंने कहा, 'हार मिलती हैं। सत्र की शुरुआत में हमने शानदार प्रदर्शन किया था। हमने इस मैच में शानदार गेंदबाजी की, विशेषकर अश्विन ने, लेकिन एक बार जब आप बहुत सारी सहज गलतियां करते हैं तो यह बहुत कठिन हो जाता है। आखिर यह योजनाओं को लागू करने से जुड़ा है।

सैमसन के विवादित आउट पर बोले संगकारा - जब सैमसन आउट होकर पवेलियन लौटे वह खुश नहीं थे क्योंकि संदेह था कि शायद कैच पकड़ने वाले शाई होप का पैर सीमा रेखा से छुआ हो। निर्णय टीवी अंपायर के पास भेजा गया जिन्होंने सैमसन को आउट करार दिया लेकिन रॉयल्स के कप्तान ने वापस जाने से पहले मैदानी अंपायर से बहस करने का फैसला किया। संगकारा ने कहा कि कभी-कभी तीसरे अंपायर के लिए भी फैसला लेना मुश्किल होता है।

संगकारा ने कहा, 'यह रीप्ले और कोण पर निर्भर करता है और कभी-कभी आपको लगता है कि पैर छू गया है। लेकिन तीसरे अंपायर के लिए इस पर फैसला करना मुश्किल था।

संक्षिप्त समाचार

गर्मियों में खाएं सेहतमंद स्नैक्स और त्वचा को बनाएं स्वस्थः डॉ गीतिका मित्तल

नईदिल्ली, एजेंसी। गर्मियों का असर अक्सर त्वचा के स्वास्थ्य पर पड़ता है ऐसे में इस मौसम में त्वचा की विशेष देखभाल करना ज़रूरी है। त्वचा विशेषज्ञ होने के नाते मैं यही सलाह दूंगी कि त्वचा की बाहरी देखभाल के साथ-साथ इसका भीतर से भी ख्याल रखना चाहिए। इसके लिए संतुलित आहार का सेवन करें, अगर आप भीतर से स्वस्थ होंगे तो बाहर से भी खूबसूरत महसूस करेंगे। यहां हम ऐसे कुछ सुझाव लेकर आए हैं, जिन्हें अपनाकर आप बदलते मौसम में भी त्वचा की अच्छी देखभाल कर सकते हैं। बादाम पोषण से भरपूर मेवा है। इनमें तकरीबन 15 पोषक तत्व जैसे मैग्नीशियम, प्रोटीन, राइबोफ्लेविन, ज़िंक आदि होते हैं। बादाम में सेहतमंद वसा और विटामिन ई (एल्फा-टोकोफेरोल) होते हैं, जो एंटी-एजिंग के गुणों से भरपूर और त्वचा के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि आप इन्हें कई तरीकों से अपने आहार में शामिल कर सकते हैं। बादाम को रोस्ट करके खाएं, अपनी स्मूदी या ओटमील में मिलाएं, सलाद के साथ खाएं और ऐसे कई ढेरों तरीकें हैं, जिनके द्वारा आप बादाम को अपने रोज़मर्रा के आहार में शामिल कर सकते हैं। स्प्राउट्स स्नैक्स का सेहतमंद विकल्प है। शाम के स्नैक्स हों या ऑफिस ब्रेक, स्पाउट्स विटामिन और मिनरल्स से भरपूर होते हैं। गूगल सर्च में भी आपको स्प्राउट्स के ढेरों विकल्प मिलेंगे। सलाद से लेकर रैप तक, आप कई तरह के आहार में स्प्राउट्स को शामिल कर सकते हैं और अपने व्यंजनों को स्वादिष्ट एवं सेहतमंद बना सकते हैं। अपने आहार में संतरा, अंगूर और स्ट्रॉबैरी शामिल करें। इन्हें और मज़ेदार बनाने के लिए बादाम से गार्निश करें। विटामिन ई और सी एक साथ मिलकर त्वचा को रसायनों एवं यूवी के कारण होने वाली जलन इत्यादि से सुरक्षित रखते हैं।

माता-पिता को उचित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करके अपने बच्चों की सुरक्षा करनी चाहिए

इंदौर, एजेंसी। इस बार विश्व टीकाकरण सप्ताह के साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन के टीकाकरण पर विस्तारित कार्यक्रम की 50वीं वर्षगांठ भी मनाई गई। यह मील का पत्थर वैश्विक टीकाकरण के प्रयासों की विरासत और पिछले पांच दशक में टीकाकरण के माध्यम से बचाए गए अनगिनत जीवन और संरक्षित समुदायों की याद दिलाता है। भारत में सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के माध्यम से 90प्रतिशत से अधिक बच्चों तक टीकाकरण का विस्तार करने में सफलता मिली है। हालांकि उम्र के पहले वर्ष में कवरेज अधिक है लेकिन पहले जन्मदिन के बाद से ड्रॉप-आउट दरें बढ़ जाती हैं। इसका नतीजा यह है कि देश में बड़ी संख्या में बच्चों का आंशिक टीकाकरण ही हो पाता है। डॉक्टर श्रीलेखा जोशीज क्लीनिक, इंदौर की कंसल्टेंट पीडियाट्रिशियन डॉ. श्रीलेखा जोशी ने कहा ज्यादातर अभिभावक टीके की सुरक्षात्मक ताकत को समझते हैं, इसलिए समय पर टीकाकरण के महत्व पर जोर देने की जरूरत है। लगातार सीख और स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ मिलकर हम स्वस्थ भविष्य की राह बना सकते हैं। इस विश्व टीकाकरण सप्ताह के अवसर पर मैं लोगों को प्रोत्साहित करता हूं कि डॉक्टरों से विमर्श करें और सही जानकारी के साथ निर्णय लें। 1-2 वर्ष की आयु के बच्चों को कई बीमारियों से बचाने में टीकाकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टीकाकरण से वर्ष 2000 से 2019 के बीच निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों में बचपन में हो जाने वाली 3.7 करोड़ असमय मौतों को रोकने में सफलता मिली। इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए सात टीकाकरणों की सिफारिश करता है। इनमें वैरिसेला एवं हेपेटाइटिस ए की पहली व दूसरी खुराक, मेनिनजाइटिस एवं एमएमआर की दूसरी खुराक, पीसीवी एवं डीटीपी हिब आईपीवी की बूस्टर खुराक और फ्लू की वार्षिक खुराक शामिल हैं। बच्चे की प्रतिरक्षा प्रणाली पूरी तरह विकसित नहीं हुई होती है इसीलिए कई संक्रमणों से लड़ने में असमर्थ होती है। गंभीर संक्रमणों और उनकी जटिलताओं से बचाता है। टीकाकरण से अस्पताल में भर्ती होने का दबाव कम हो गया है। टीका लगवा चुके बच्चे समय पर अपने शारीरिक और संज्ञानात्मक लक्ष्य हासिल करने में सक्षम होते हैं टीकाकरण सामुदायिक प्रतिरक्षा विकसित करने में भी मदद करता है।

राधिका खेड़ा के भाजपा प्रवेश पर बोले भूपेश बघेल, आखिर कितने में हुई डील?

रायपुर एजेंसी। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान के बीच कांग्रेस पार्टी की राट्रीय प्रवक्ता राधिका खेड़ा ने आज भाजपा का दमन थाम लिया है। राधिका खेड़ा के भाजपा में जाने के बाद अब छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने जमकर निशाना साधते हुए खेड़ा से कई सवाल किया है। बघेल ने सवाल करते हुए कहा कि आखिर डील हुई है तो कितने की डील हुई है ये राधिका खेड़ा बताएं। बतादें कि छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने आज पाटन पहुंचकर परिवार के साथ वोट डाला है।

इस बीच बघेल ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए राधिका खेड़ा के बीजेपी जॉइन करने पर सवाल खड़ा किया है। बघेल ने कहा कि अब यह बात राधिका खेड़ा ही बता सकती है कि आखिर डील तो हुई है और कितने की डील हुई है। इसके साथ ही बघेल ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के कांग्रेस नेताओं को विलुप्त प्रजाति के बताने वाले बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री मतदाताओं को श्रद्धांजलि दे रहे हैं, लगता है कि बीजेपी के

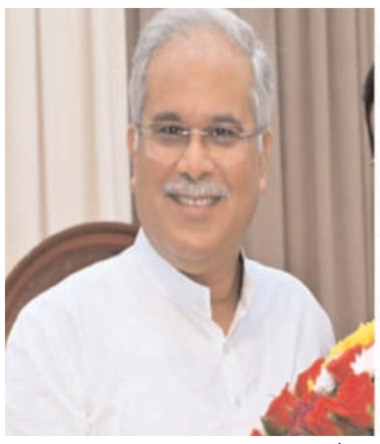

नेताओं का मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। बीते दिनों छत्तीसगढ़ में हुए राधिका खेड़ा के विवाद के बाद खेड़ा ने पार्टी को अपना इस्तीफा देते हुए कांग्रेस के कई दिग्गज नेताओं पर गंभीर आरोप लगाया था। राधिका खेड़ा ने प्रेस वार्ता में आरोप लगाते हुए कहा था कि आखिर प्रियंका गांधी भूपेश बघेल का इतना पक्ष क्यों लेती है। राधिका ने आरोप लगाया था कि भूपेश बघेल आखिर प्रियंका गांधी को ऐसा क्या दे रहे हैं कि वह हमेशा उनके साथ आ जाती है। राधिका खेड़ा ने सीएम पद के दौरान हुए विवाद पर बघेल का साथ देने का आरोप प्रियंका गांधी पर लगाया था। इसके साथ ही बघेल और सचिन पायलट पर सुशील आनंद शुक्ला का समर्थन करने की बात भी कही थी। कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता राधिका खेड़ा को छत्तीसगढ़ के मीडिया विभाग की जिम्मेदारी देकर भेजा गया था। बीते दिनों प्रदेश कार्यालय राजीव भवन में कांग्रेस नेत्री राधिका खेड़ा और संचार विभाग के प्रदेश अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला के साथ विवाद हुआ था। जिसे लेकर एक वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल हो रहा था। जिसमें राधिका रोते हुए फोन पर अपने साथ हुए दुर्व्यहार के बारे में बोलती नजर आ रही थी। वहीं इस मामले में राधिका ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए भी बहुत सी बाते लिखी थी। जिसमें राधिका ने लड़की हूं लड़ रही हूं जैसी बात करते हुए। पूर्व सीएम और संचार विभाग के अध्यक्ष पर सीधा हमला बोला था। वहीं इस मामलें में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज को जांच कर रिपोर्ट दिल्ली भेजने की बात कही गई थी। जिसके बाद बीते शनिवार को कांग्रेस भवन में दोनों पक्षो को बुलाकर सभी का बयान लिया गया और रिपोर्ट हाईकमान को भेज दी गई थी। इस पूरे विवाद के बाद कांग्रेस हाईकमान के फैसले का इंतजार ही हो रहा था कि राधिका खेड़ा ने इस बीच रविवार को इस्तीफा कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को भेज दिया। राधिका खेड़ा ने इस्तीफा भेजते हुए छत्तीसगढ़ की घटना के साथ-साथ कांग्रेस पार्टी पर कई आरोप भी लगाए।

राधिका ने लिखा कि जब से मैं राम मंदिर रामलला के दर्शन करके लौट कर आई हूं मेरे सांथ पार्टी के द्वारा गलत व्यवहार किया जा रहा है। राधिका ने कहा कि मैं एक लड़की हूं कांग्रेस पार्टी महिला के साथ हुए दुर्व्यहार पर चुप्पी बनाई हुई है। इसके बाद बीते सोमवार को राधिका खेड़ा ने प्रेस वार्ता कर कांग्रेस पार्टी के नेता प्रियंका गांधी, सचिन पायलेट, छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम बघेल समेत महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। राधिका खेड़ा ने इस बीच छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज पर शराब ऑफर करने की बात भी कही है। राधिका ने कहा कि मैं लड़की हूं और अपने न्याय के लिए लड़ती रहूंगी।

16 गांवों के 8700 किसानों को अगले महीने मिलेगी गुडन्यूज, यीडा की सूची तैयार; बड़ी मांग होगी पूरी

नई दिल्ली, एजेंसी। यमुना विकास प्राधिकरण (यीडा) में परियोजनाओं को गति देने की तैयारी पूरी हो गई है। जमीन अधिग्रहण से प्रभावित किसानों को सात प्रतिशत आबादी के भूखंड के आवंटन को लेकर सूची तैयार कर ली गई है। 30 जून तक सभी 16 गांवों के करीब आठ हजार 700 किसानों को भूखंडों का आवंटन कर दिया जाएगा। यमुना सिटी में किसानों के विरोध के चलते अटकी परियोजनाओं को गति मिलेगी। यमुना प्राधिकरण के अधिकारी ने बताया कि पूर्व में हुए प्रकाशन में आई आपत्तियों का निस्तारण कर पात्र किसानों की अंतिम सूची का प्रकाशन किया जा चुका है। नियोजन और परियोजना विभाग को ले-आउट के अनुसार विकास कार्य कराने के निर्देश दिए गए हैं। दरअसल, जमीन अधिग्रहण से प्रभावित किसानों को यमुना प्राधिकरण में सात फीसदी विकसित भूखंड देने का प्रावधान है। जमीन अधिग्रहण के कई साल बाद भी इसका लाभ पाने से वंचित रह गए किसान पिछले काफी समय से आबादी भूखंड दिए जाने की मांग कर रहे हैं।

राजस्थान पुलिस अफसरों को रात गुजारने के लिए चाहिए लड़की, ऑडियो हुआ वायरल

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के धौलपुर जिले में हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक कांस्टेबल ने ग्रामीण से ऐसी डिमांड कर दी जिसे सुनकर हर कोई हैरान है। राजस्थान पुलिस के कांस्टेबल ने गांव के एक युवक से अपने अफसरों की मसाज और रात गुजारने के लिए लड़की की डिमांड की। कांस्टेबल की इस डिमांड से ग्रामीणों में रोष व्याप्त है। कांस्टेबल का ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने और ग्रामीणों की शिकायत के बाद एसपी ने आरोपी कांस्टेबल को सस्पेंड कर दिया है। दरअसल, धौलपुर पुलिस लाइन में तैनात कॉन्स्टेबल रामनरेश जाटव ने अपने ही गांव के एक युवक से मसाज के लिए लड़की की डिमांड की। आरोप है कि इसके लिए उसने ग्रामीण को एक हजार रुपए भी देने का लालच दिया। बताया जा रहा है कि उसने यहां तक कहा कि अधिकारियों को लड़की सप्लाई करनी है। इस घटना से गुस्साए ग्रामीणों ने पंचायत बुलाई।

लंदन से भऊ गैंग ने दिल्ली के तिलक नगर में कराई ताबड़तोड़ फायरिंग? तिहाड़ जेल से कनेक्शन

नई दिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली के तिलक नगर स्थित कार शोरूम पर सोमवार रात को हुई ताबड़तोड़ फायरिंग मामले में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपियों को वारदात के लिए लंदन से भऊ गैंग के निर्देश मिले थे और तिहाड़ में बंद नवीन बाली गिरोह ने इन्हें हथियार मुहैया कराए थे। इसके बाद घटना को अंजाम दिया गया।

घटना इतनी भयावह थी कि फायरिंग के दौरान शीशा टूटने से सात लोग जख्मी हो गए थे। इसमें घायल विकास त्यागी का इलाज अभी भी चल रहा है। बाकी छह को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। आरोपियों को पकड़ने के लिए स्थानीय थाना पुलिस के अलावा जिला पुलिस की ऑपरेशन सेल, स्पेशल स्टाफ के साथ ही अपराध शाखा व स्पेशल सेल की टीम कोशिश कर रही है। सीसीटीवी में कैद इस घटना में दो आरोपी गोली चलाते हुए दिखाई दे रहे हैं। पुलिस जांच

में सामने आया है कि आरोपियों ने शोरूम के नजदीक अपनी बाइक खड़ी कर दी थी। इसके बाद वे बात करते हुए शोरूम के अंदर गए और चंद सेकेंड बाद ही दोनों ने फायरिंग शुरू कर दी। इससे पहले कि लोग कुछ समझ पाते आरोपी फायरिंग करते हुए शोरूम से बाहर की और दौड़ने लगे। इस दौरान आरोपियों ने करीब 20 राउंड फायरिंग की। इससे शोरूम और उसके पास स्थित बैंक के शीशे टूट कर फैल गए।

घायल विकास त्यागी ने बताया कि उनके चेहरे पर गंभीर चोटे आई हैं। वह बेटे के लिए गाड़ी देखने शो रूम में पहुंचे थे। घटना के समय उनके साथ पत्नी व बेटा भी था। एक मिनट 11 सेकेंड की फुटेज में दिखाई दे रहा है कि दोनों आरोपी पहले शोरूम के बाहर खड़े एक गार्ड से कुछ पूछते हैं। इसके बाद दोनों शोरूम के अंदर चले जाते हैं। कुछ ही सेकेंड में दोनों गोली चलाते हुए बाहर निकलते दिखाई दे रहे हैं। पुलिस जांच में सामने आया है कि दोनों शूटर भाऊ गैंग के हैं। इस गैंग का सरगना लंदन से ही गिरोह चला रहा है और भारत में उसे तिहाड़ में बंद नीरज बाली के गिरोह का समर्थन है। ऐसे में अब जांच तिहाड़ जेल तक पहुंच गई है। सूत्रों ने बताया कि पुलिस इस मामले में बाली से पूछताछ कर सकती है।

पूर्व पति को गुडबाय कहा, फिर 3 साल के बेटे के सिर पर मार दी गोली

टेक्सास एजेंसी। अमेरिका के टेक्सास में महिला और उसके तीन साल के बेटे की मौत की घटना का खुलासा हुआ है। पुलिस अधिकारियों ने खुलासा किया कि 32 साल की महिला ने पहले अपने तीन साल के बेटे को गोली मारी फिर आत्महत्या कर दी। महिला और उसके बेटे की मौत की गुत्थी उसी के 21 सेकंड के वीडियो ने खोला। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि महिला कुछ दिनों से मानसिक तनाव से गुजर रही थी और अपने पूर्व पति से उसका मन-मुटाव चल रहा था। मरने से पहले उसने अपने बेटे से उसके पिता को अलविदा कहलवाया। फिर मैसेज भेजते हुए कहा कि अपने बेटे को अलविदा कहो। द न्यूयॉर्क पोस्ट में छपि खबर के मुताबिक, महिला का नाम सवाना क्रिगर था। उसने पहले अपने तीन साल के बेटे की गोली मारकर हत्या की फिर पिस्टल से अपनी कनपटी उड़ा दी। यह दुखद घटना 19 मार्च को सैन एंटोनियो के एक पार्क में घटी थी। क्रिगर और उनके बेटे कैडेन को सिर पर गोली लगने के घाव के साथ मृत पाया गया था। पुलिस अधिकारी कई हफ्तों से हत्या-आत्महत्या से जुड़े परिस्थितियों की जांच कर रहे थे। हालांकि महिला के अपने पूर्व पति को भेजे गए आखिरी संदेश ने इसका खुलासा कर दिया है। पुलिस की बताई कहानी के अनुसार, अपनी मौत से पहले क्रिगर परेशान करने वाले व्यवहार कर रही थी। उसने अपने पूर्व पति को धमकी भरे वीडियो और टेक्स्ट भेजे।

रिपोर्ट के अनुसार, क्रिगर ने 18 मार्च की दोपहर नौकरी से इस्तीफा दिया और सीधे अपने पूर्व पति के घर चली गई। हालांकि इस दौरान वह अपने काम पर गया था। अपने पूर्व पति के आवास पर तोड़फोड़ करने के बाद क्रिगर अपने घर लौट आई। जांचकर्ताओं को घर की तलाशी के दौरान क्रिगर की शादी की पोशाक और बिस्तर पर रखी तस्वीरें मिलीं। क्रिगर ने मरने से पहले कहा, अब मेरे पास घर में रहने के लिए कुछ नहीं है।

प्रेमिका से सीक्रेट मुलाकात करने रूस पहुंचा शादीशुदा अमेरिकी सैनिक, चोरी के इल्जाम में गिरफ्तार

मास्को एजेंसी। यूक्रेन में जब से रूसी सेना ने हमला किया है, तब से अमेरिका समेत कई पश्चिमी देशों की व्लादिमीर पुतिन से शत्रुता बढ़ गई है। अमेरिका ने रूस पर कई प्रतिबंध लगाए हैं। अमेरिका और रूस के बीच लगातार बढ़ रही तल्खी के बीच एक अमेरिकी सैनिक रूस में गिरफ्तार हुआ है। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि वह अपनी प्रेमिका से मिलने गुपचुप रूस पहुंचा था और पकड़ा गया। उस पर चोरी का इल्जाम लगा है। वह पहले से शादीशुदा बताया जा रहा है।

अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, रूस के बंदरगाह शहर व्लादिवोस्तोक में अपनी प्रेमिका से मिलने गए अमेरिकी सैनिक गॉर्डन ब्लैक को चोरी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया और वह अभी भी रूसी सेना के हिरासत में है। अमेरिकी अधिकारियों आगे बताया कि 34 वर्षीय ब्लैक दक्षिण कोरिया में तैनात थे और टेक्सास के फोर्ट कैवाज़ोस में अपने घर लौटने वाले थे। इसके बजाय, ब्लैक अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए रूस चले गए। ब्लैक की गिरफ़्तारी ने रूस के साथ अमेरिकी संबंधों के बीच तनाव बढ़ा दिया है।

सेना की प्रवक्ता सिंथिया स्मिथ ने पुष्टि की कि रूस में पकड़े गए सैनिक पर न सिर्फ चोरी, प्रेमिका से दुर्व्यवहार के भी आरोप लगे हैं। उन्होंने कहा कि रूस ने अमेरिका को सैनिक की गिरफ्तारी जानकारी दे दी है और यह बात उसके परिवारवालों को भी बता दी गई है। बताया जा रहा है कि सैनिक पहले से शादीशुदा है।

स्मिथ ने कहा, अमेरिकी विदेश विभाग रूस में सैनिक से लगातार संपर्क में है और उसकी हर संभव मदद कर रहा है।

अधिकारियों के अनुसार, ब्लैक जिस रूसी महिला से

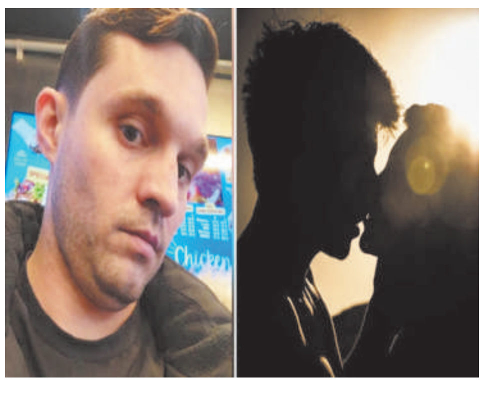

मिलने पहुंचा था, वह दक्षिण कोरिया में रहती थी और पिछली बार वह और ब्लैक किसी प्रकार के घरेलू विवाद में पड़ गए थे। इसके बाद उन्होंने दक्षिण कोरिया छोड़ दिया। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या महिला को दक्षिण कोरिया छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था या इस मामले में कोरियाई अधिकारियों की क्या भूमिका थी? हम इस मामले में जांच कर रहे हैं।

चीन ने राष्ट्रपति पद के उद्घाटन से पहले ताइवान के खिलाफ प्रभाव अभियान किया शुरू

बीजिंग एजेंसी।
चीन ने 20 मई को द्वीप पर नवनिर्वाचित राष्ट्रपति लाई चिंग-ते के उद्घाटन से पहले ताइवान के खिलाफ प्रभाव अभियानों की एक श्रृंखला शुरू की है। वॉयस ऑफ अमेरिका (वीओए) की रिपोर्ट के अनुसार, बीजिंग ने यात्रा और आयात प्रतिबंधों में आंशिक रूप से ढील देते हुए पूरे ताइवान में सैन्य गतिविधियों के पैमाने और आवृत्ति को बढ़ा दिया है। विश्लेषकों के अनुसार, बीजिंग यह परीक्षण करने की कोशिश कर रहा है कि आने वाली ताइवानी सरकार बीजिंग के बढ़ते दबाव का जवाब कैसे देगी । ताइवान में सूचो विश्वविद्यालय के एक राजनीतिक वैज्ञानिक चेन फैंग-यू ने कहा, अल्पावधि में, बीजिंग यह देखने की कोशिश कर रहा है कि लाई के तहत नई ताइवानी सरकार उसके दबाव अभियान का जवाब कैसे दे सकती है।

उन्होंने कहा, उसी समय, चीनी सरकार ताइवान जलडमरूमध्य में यथास्थिति को बदलने का प्रयास कर रही है, जब ताइपे उद्घाटन पर ध्यान केंद्रित कर

रहा है। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने 2 मई से 3 मई के बीच द्वीप के पास 26 चीनी सैन्य विमानों और पांच चीनी नौसैनिक जहाजों का पता लगाया, जिनमें 17 चीनी सैन्य विमान ताइवान जलडमरूमध्य की मध्य रेखा को पार कर रहे थे। रिपोर्ट के अनुसार इसके अलावा, कुछ चीनी विमान ताइवान के उत्तरी बंदरगाह शहर कीलुंग से लगभग 76 किलोमीटर की दूरी पर पहुंच गए, जहां एक महत्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा स्थित है । इस बीच, ताइवान के राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो के महानिदेशक, त्साई मिंग-येन ने 1 मई को ताइवानी सांसदों को बताया कि चीनी सेना ने द्वीप के पास अपनी संयुक्त युद्ध तत्परता गश्ती में नई रणनीति को शामिल किया है, जिसमें अभ्यासों के दौरान जहाज़ और बारूदी सुरंग हटाने वाले जहाज़ व रात के समय लड़ाकू गश्त करना और लैंडिंग का उपयोग करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कहा कि ताइवान के अधिकारी ताइवान के बाहरी द्वीप किनमेन के पास चीनी तट रक्षक द्वारा की गई बढ़ी हुई गश्त पर नज़र रख रहे हैं। इससे पहले 29 अप्रैल को, बीजिंग ने कहा था कि फुज़ियान तट रक्षक ने अप्रैल से किनमेन के पास पानी में गश्त की आवृत्ति बढ़ाने के लिए जहाजों के एक बेड़े का आयोजन किया था। वीओए के अनुसार, बीजिंग ने पिछले महीने के अंत में ताइवानी पोमेलो और दो प्रकार के समुद्री भोजन पर आयात प्रतिबंध हटाते हुए अपने दक्षिणी प्रांत फुज़ियान के निवासियों को ताइवान के दूरस्थ द्वीप मात्सु की यात्रा करने की अनुमति देने की योजना की भी घोषणा की। यह बात ताइवान की मुख्य विपक्षी पार्टी, कुओमितांग, जो ताइपे और बीजिंग के बीच घनिष्ठ संबंधों की वकालत करती है, के सांसदों के एक समूह के चीन दौरे के बाद आई है।इस बीच, कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, बीजिंग द्वारा हाल के हफ्तों में उठाए गए सभी उपाय ताइपे के खिलाफ उसके प्रभाव अभियान का हिस्सा हैं, जिसमें ताइवान पर दबाव डालने के लिए दुष्प्रचार अभियान, आर्थिक जबरदस्ती और ग्रे जोन ऑपरेशन का उपयोग करना शामिल है। चीन के समग्र प्रभाव अभियान के हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिए। सु ने कहा कि बीजिंग के दीर्घकालिक लक्ष्य का हिस्सा ताइवान जलडमरूमध्य पर अपना नियंत्रण बढ़ाना है। उन्होंने कहा, किनमेन के पास प्रतिबंधित जल क्षेत्र में चीनी तट रक्षक जहाजों को तैनात करने की आवृत्ति बढ़ाकर और चीनी सैन्य विमानों को ताइवान के मुख्य द्वीप के करीब उड़ाकर, बीजिंग अंततः ताइवान जलडमरूमध्य को अपने क्षेत्रीय जल में बदलने की उम्मीद कर रहा है। वीओए की रिपोर्ट। चूंकि चीनी सेना आमतौर पर जून और नवंबर के बीच सैन्य अभ्यास पर ध्यान केंद्रित करती है।

दक्षिण चीन सागर में तैनाती के लिए भारतीय नौसेना के तीन पोत पहुंचे सिंगापुर

सिंगापुर एजेंसी। दक्षिण चीन सागर में भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े की परिचालन संबंधी तैनाती के तौर पर तीन भारतीय पोत सिंगापुर पहुंच गए हैं जो दोनों नौसेनाओं के बीच मजबूत रिश्तों को रेखांकित करता है। भारतीय नौसेना के एक प्रवक्ता ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर कहा कि रियर एडमिरल राजेश धनखड़ के नेतृत्व में भारतीय नौसेना के जहाज दिल्ली, शक्ति और किल्टन सोमवार को सिंगापुर पहुंचे । दक्षिण चीन सागर में चीन द्वारा अपनी सैन्य आक्रामकता दिखाने के बीच भारतीय नौसेना ने कहा कि इन तीनों पोतों का सिंगापुर पहुंचना दक्षिण चीन सागर में भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े की परिचालन संबंधी तैनाती का हिस्सा है। फिलहाल, दक्षिण चीन सागर में चीन की नौसेना का अमेरिका समर्थित फिलीपिन की नौसेना के साथ गतिरोध चल रहा है। फिलीपिन ने दक्षिण चीन सागर में 'सकेंड थोमस शोअल पर दावा किया है जिसका चीन ने कड़ा विरोध किया है। चीन दक्षिण चीन सागर के अधिकतर हिस्से पर दावा करता है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129